प्रकाशक—
चन्द्रराज भण्डारी,
सचालक—
ज्ञान-मन्दिर,
भानपुर (इन्दौर-स्टेट)

भूल सुधार

इस भाग के पृष्ट ११९६ पर डिजीटेलिस के प्रकरण में डिजीटेलिस का धर्म "हृदय के लिये उत्तेजक" छप गया है उस स्थान पर "हृदय के लिए बलदायक" ऐसा होना चाहिए । पाठक इसको जरूर सुधार लें। क्योंकि डिजीटेलिस हृदय को उत्तेजना नहीं देता, वह उसकी गतिको सुव्यवस्थित करके उसे बल देता है।

मुद्रक—
मथुरा प्रसाद गुप्त,
जाब प्रेस, करनघण्टा, बनारस।

PATRONS.

1—His Highness Maharaja dhiraj Sir George Jiwaji Rao Scindia Alijah Bahadur G. C. I. E., Gwalior.

2—Late Lieutenant colonal His Highness Maharao Sir Ummed Singh Bahadur G. C. S. I. G. C. I. E. G. B. E., Kotah.

3—Lieutenant His Highness Maharaja Krishna Kumar Singh Bahadur, Bhawnagar

4—Lieutenant colonal His Highness Maharaja Jam Sahab Sir Digvijay Singh Bahadur K. C. S. I., Nawanagar.

5—Lieutenant colonal His Highness Maharaja Lokendra Sir Govind Singh Bahadur G. C. S I., K. C. S. I., Datia,

6—Lieutenant His Highness Maharaj Rana Rajendra Singh Bahadur, Jhalawar.

7—Captain His Highness Maharaja Mahendra Sir Yadvendra Singh Bahadur K. C. S. I., K. C. I. E., Panna.

8—Rai Bahadur Devi Singh Diwan Rajgarh State, Rajgarh.

9—Seth Magni Ramji Ram Kumarji Bangar Didwana

10—Rai Bahadur Rajya Bhushan Danbir Seth Hiralal Kashaliwal Indore.

11—Seth Sohanlalji Shubhakaranji Ratanlalji Dugar Fatehpur.

12—Seth Chunnilal Bhaichand Mehta Bombay.

स्मृति

स्व० सेठ कमलापतजी सिंहानिया कानपुर
की स्मृतिमें

विषय सूची

(१)

हिन्दी

विषय सूची

(२)

संस्कृत

विषय सूची

(३)

मराठी

विषय सूची

(४)

गुजराती

विषय सूची

(५)

बंगला

—

Index.

Latin Names.

विषय सूची

(८)

(रोगानुक्रम से)

इस विषय सूची में इस ग्रन्थ में आई हुई औषधियां जिन २ रोगों पर काम करती हैं उनमें से कुछ खास २ रोगों के नाम और औषधियों के नाम पृष्ठांक सहित दिये जारहे हैं। सब रोगों के नाम इसमें नहीं आसके इसलिये उनका विवरण ग्रन्थ के अन्दर ही देखना चाहिये। जिन रोगों के अन्दर जो औषधियां विशेष प्रभावशाली और चमत्कारिक हैं उनपर पाठकों की जानकारी के लिये ऐसे फूल * लगा दिये गये हैं:—

ज्वर

अतिसार

जलोदर

बवासीर

कब्जियत

मन्दाग्नि

अजीर्ण

उदरशूल

गुल्म

प्लीहा और यकृत रोग

हिचकी

हैजा

पीलिया और कामला

सुजाक

उपदंश

प्रमेह

नपुन्सकता और बाजिकरण

पथरी अर मूत्राघात

प्रदर रोग

बन्ध्यत्व

प्रसव और आर्त्तव सम्बन्धी रोग

क्षय या राज यक्ष्मा

खांसी

दमा

हृदय रोग

कंठमाला

स्नायुरोग और वात व्याधि

(लकवा, गठिया, संधिवात इत्यादि)

उन्माद हिस्टीरियो और माली खोलिया.

मृगी

सर्प विष

बिच्छू का विष

चर्म रोग और रक्त विकार

नेत्र रोग

कर्णरोग

दंतरोग

कृमि रोग

नारु

बालरोग

मस्तक शूल और आधा शीशी

हड्डी का टूटना या मोच आना

शस्त्रके जख्म और दूसरे घाव

नासूर

वनौषधि-चन्द्रोदय

पाँचवा भाग

बहुत सजधज के साथ छपना शुरु हो गया है । इस ग्रन्थ में भी अनेक महत्व पूर्ण औषधियों का चमत्कार पूर्ण वर्णन दिया गया है बहुत शीघ्र ग्राहकों की सेवा में पहुँचेगा ।

चन्द्रराज भण्डारी,

वनौषधि चन्द्रोदय

(चौथा भाग)

वनौषधि चन्द्रोदय

(चौथा भाग)
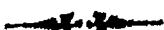
चिलकामकोय

नाम—

यूनानी—चिलकामकोय।

वर्णन—

यह एक प्रकार की बूटी होती है। इसके पत्ते गोल, छोटे, पतले, नाजुक और तोते की जबान की तरह होते हैं। इसकी शाखाएँ पतली और फूल कालापन लिये लाल रंग के होते हैं। इसकी फली उड़द की फली की तरह और बीज खुरासानी अजवायन के दानों की तरह होते हैं। इन बीजों का स्वाद कड़ुवा और तेज होता है। इसके पत्तों की तरकारी बनाई जाती है। इसके फूलों का रंग तोते की नाक की तरह होता है, इसीलिये इसका नाम चिलका-मकोय रखा गया है।

इसकी एक जाति और होती है जिसका पौधा आधे गज तक ऊंचा होता है। इसके पत्ते नई के पत्तों की तरह होते हैं। इनका स्वाद मीठा होता है। इसका फूल छोटा और पीला होता है।

गुण, दोष और प्रभाव—

यूनानी मत से इसके पत्ते शीतल तथा बीज गरम और खुश्क होते हैं। इसके पत्तों का रस प्रमेह में लाभ पहुचाता है। इसकी तरकारी कफको नष्ट करती है। यह औषधि पाचनशक्ति को तीव्र करके भूख को बढाती है। आमाशय को बलवान बनाती है। जो मधुमेह मेदे की खराबी से पैदा होता है, उसमें यह लाभ पहुँचाती है। आमाशय की खराबी को यह दूर करती है। इसकी मात्रा आधे तोले तक की है।
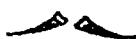
चांदकुड़ा

इस वनस्पति का वर्णन इस ग्रन्थ के प्रथम भाग के पृष्ठ २७६ पर 'उपाम' के नाम से दिया गया है।

चिनाई घास

नाम—
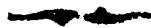
हिन्दी—चिनाई घास। लका—अगरअगर। तेलगू—समुद्रउपाची। अंग्रेजी—Ceylon Moss (सीलोन मास)। लैटिन—Gracilaria Lichenoides (ग्रेसीलेरिया लायचेनोइडेस)।

वर्णन—

यह वनस्पति लंका और कन्याकुमारीके खारे तालावोंमें पैदा होती है। मोह एक शेवाल जातिय की वनस्पति है। इसके तन्तु पीले रग के, सीने के धागे के समान मोटे होते हैं।

गुण, दोष और प्रभाव—

चिनाई घास स्नेहन, पौष्टिक और पचने में बहुत हल्की होती है। इसका रासायनिक विश्लेषण करने पर इसमें एक प्रकार का पौष्टिक कफ नाशक सत्व ५४ प्रतिशत पाया जाता है। इसमें ७ प्रतिशत क्षार का अंश भी रहता है। सिंहल द्वीप और हिन्दुस्तान के हिस्से में इस वनस्पति का बहुत प्राचीन काल से उपयोग होता आ रहा है। इसके चूर्ण की खीर बनाकर संग्रहणी, आम इत्यादि आंतों के रोग

और फेफड़ों के रोगों में लाभदायक पदार्थ की तरह दी जाती है। क्षयरोग में भी यह वनस्पति लाभदायक मानी जाती है।

चिरबिल्व (चरेल)

नाम—

संस्कृत—चिरबिल्व। हिन्दी—चिरबिल्व, चिरमिल, चरेल, पापरी, करंजी। मराठी—पापड़। काठियावाड़—चरेल। गुजराती—कणजो। तेलगू—नवीली। तामील—आयम्-लेटिन-Holoptelea Integrifolia (होलोपूटेलिया इंटेग्रिफोलिया)।

वर्णन—

यह एक बड़ा वृक्ष होता है, जिसकी ऊंचाई २० से २५ हाथ तक होती है। इसका वृक्ष करंज के वृक्षकी तरह दिखाई देता है। इसकी छालका रंग खाकी, डालें झुकी हुई और गुल्लेदार, पत्ते उग्र दुर्गन्धियुक्त, फूल छोटे, पीले, तीव्रगंधयुक्त और फल फीके पीले रंग के चपटे होते हैं। हर-एक फल में एक एक बीज रहता है। इसकी छाल से बहुत सुन्दर रेशे निकलते हैं जिनकी रस्सी बनाई जाती है।

गुण, दोष और प्रभाव—

यह वनस्पति शोथनाशक और रोगियों में लाभ पहुंचाती है। इसकी जड़की छाल को औटाकर सन्धियों की सूजन पर बांधने से लाभ होता है। इसके पत्तों की लुगदी से तेल को सिद्ध कर उस तेल को मवाें पर लगाने से मवा भर जाते हैं। इसकी डालियों के रसको दाद पर लगाने से दाद नष्ट हो जाता है।

चीड़*

नामः—

संस्कृत—भाद्रदारू, धूपवृक्षका, गन्धोजना, भरिमपत्रिका, पीतदारू, पितद्रु, पूतिकाष्ठ, सरला, सुरभिदारुका। हिन्दी—चीड़, साला, सारल, सरल। अलमोड़ा—साला। बंगाल—सरल

*नोटः—इस ग्रन्थ के तीसरे भाग में गन्धा बिरोजा के प्रकरण में भी इसका संक्षिप्त वर्णन दिया गया है। यहां पर इसका विस्तृत वर्णन दिया जाता है।

गन्छा, सरल कष्टा। गुजराती—सरल देवदार। मराठी—सरलदेवदार। गढवाल—साला, कोलेन, कुलहेन। कुमाऊ—चीड। काश्मीर—चीड़, साला, सल्ल। पजाब—चीड, गुला, नखतार, नश्तार। सयुक्तप्रान्त—चीड, कोलन। नेपाल—धुपसलसी। लेटिन—Pinus Longifolia (पायनस लागिफोलिया)

वर्णनः—

चीड का वृक्ष बहुत बड़ा होता है। यह हिमालय प्रदेश में सिंध से भूटान तक डेढ़ हजार फीट से साढे सात हजार फीट की ऊचाई तक और अफगानिस्तान में पैदा होता है। इसके पत्ते गुच्छों में लगते हैं। इसकी डालिया हलके पीले रग की होती हैं। इसकी छाल में दरारें पड़ी हुई रहती हैं। इसके पत्ते चमकीले हरे रंग के और फल नोकदार होते हैं। इस फल में बीज रहता है। इसकी छाल में किसी औजार से जखम कर देने से एक प्रकार का चिंकना गोंद निकलता है। जिसको संस्कृत में श्रीवास और हिन्दी में चीड़ का गोंद या गन्धा विरोजा कहते हैं। इस गन्धे विरोजे को सूखी हालत में भभके में रख कर तेल उडाते हैं। इस तेल को खन्नू तेल या सत विरोजा कहते हैं। इस तेल में तारपीन के तेल की तरह खुशबू आती है।

गुण, दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मत से यह वृक्ष मीठा, तीक्ष्ण, कड़वा, गरम, स्निग्ध और आँतों के कीडो को नष्ट करने वाला होता हैं। आँख, कान, गला, रक्त और चर्म की बीमारियों में भी यह लाभदायक है। इसका गोंद कडवा, कसैला, गरम और स्निग्ध होता है। यह पेट के आफरे को दूर करता है, कामोद्दीपक होता है। मूत्रल, कृमि नाशक और वेदना शून्यता लाने के गुण भी इसमें विद्यमान हैं। योनि और गर्भाशय की तकलीफों में भी यह लाभदायक है। मन्दाग्नि, वृण, खुजली, प्रदाह और सिर दर्द को यह दूर करता है।

यूनानी मत—यूनानी मतसे इसका गोंद तीसरे दर्जे में गरम और खुश्क होता है। पुरानी खाँसी, दमा, हिस्टीरिया, मृगी, बवासीर और जिगर तथा तिल्ली की बीमारियों में यह मुफीद हैं। गुलाब के तेलमें घोटकर इस को कान में टपकाने से सिर का दर्द और कफ से पैदा हुआ कान का दर्द मिट जाता है। फोडे, नासूर और जख्मों पर इसका लेप करने से बहुत लाभ होता है। पट्ठों के फालिज या लकवा में भी यह बहुत फायदा करता है। इसकी लकड़ी वायु और कफ को बिखेरती है, गुर्दे और मसाने की पथरी को तोडती है, हिचकी में भी लाभ पहुँचाती है। कण्ठमाला पर इस का लेप करने से लाभ होता हैं। मुह के छालों पर भी यह मुफीद हैं।

डाक्टर मुडीन शरीफ के मतानुसार इसका गोंद अत प्रयोग और बाह्यप्रयोग में लिये जाने पर उत्तेजक औषधि का काम करता है। अन्तः प्रयोग में लिये जाने पर यह पाकाशय और मूत्राशय की

अन्दर की रक्तवाहिनी फटकर रक्त बहने लगता है और वह कफ के साथ गिरने लगता है। ऐसी हालत में चीड का तेल खिलाने से, सुँघाने से और उसकी मालिश करने से लाभ होता है। फुफ्फुस और श्वास नलिका की सूजन में और दमें में चीड का तेल छाती पर मालिश किया जाता है।

मूत्र पिण्ड से लेकर मूत्र द्वार तक के सारे मार्ग का शोधन करने में भी यह वस्तु बहुत प्रभाव शाली है। इसके सेवन से इन भागों की रक्ताभिसरण क्रिया बढती है, विनिमय क्रिया में सुधार होता है और श्लेष्मा की कमी होती है। वस्ती की सूजन और पुराने सुजाक में इसका बहुत उपयोग होता है। खन्नू तेल को १ से लेकर ३ बूंद की मात्रा में देने से पुराने सुजाक में बहुत लाभ होता है।

त्वचा के मार्ग से बाहर निकलते समय यह वस्तु त्वचा के अन्दर की सूक्ष्म रक्तवाहिनियों का सकोचन करती है, जिससे रक्तपित्त, दाद, खुजली, इत्यादि रोगों में इसका उपयोग किया जाता है।

यकृत की खराबी से पैदा हुए जलोदर में पेशाब बढ़ाने के लिये चीड का तेल लाभ दायक होता होता है मगर ऐसे रोगों में इसका उपयोग करने के पहिले पेशाब जाँच कर इस बात की पुख्ता जांच कर लेना चाहिये कि रोगी का मूत्रपिण्ड बिलकुल निरोग हो। अगर मूत्रपिण्ड में खराबी हो तो इसका उपयोग कभी नहीं करना चाहिये, नहीं तो बहुत नुकसान होता है।

ताजे घावों पर चीड तेल को लगाने से रक्तश्राव बन्द होता है और घाव में पीब पैदा नहीं होता। इसका वृणरोपक धर्म बहुत उत्तम है। सडने वाले वृणों पर इसकी बत्ती लगाने से वे जल्दी भर जाते हैं। इसकी मात्रा १२ रत्ती से २० रत्ती तक की है और इसके दर्प को नाश करने के लिये कतीरा बबूल का गोंद और मीठी बदाम का तेल मुफीद है।

चीनी मिट्टी।

नाम—

हिन्दी, यूनानी—चीनी मिट्टी।

वर्णन—

यह एक मशहूर मिट्टी है जो सफेद रग की होती है जिसके बर्तन बनाये जाते हैं।

गुण, दोष और प्रभाव—

चीनी मिट्टी को बारीक पीस कर कपडे में छान कर मंजन करने से दांत चमकदार होते हैं। इस का चूर्ण ताजा जख्मों के खून को बन्द कर देता है।

नासूर के अन्दर भी यह औषधि बहुत लाभदायक साबित हुई है। इसके लिये इसको उपयोग करने का तरीका इस प्रकार है। चीनी मिट्टी को पीसकर, कपडे में छानकर, नीम के पत्तों के रस में तर कर ले और एक चीनी की रकाबी पर फैलाकर सुखा लें। सूखने पर उसको फिर से नीम के पत्तों के रस में तर कर के सुखावे। इस प्रकार उसको तीन बार तर कर के सुखावे और फिर बारीक पीसकर और कपडे में छानकर रखलें। इस औषधि को नासूर में भरने से नासूर बहुत जल्दी आराम होता है।

हकीम अलीका कहना है कि नासूर के ऊपर यह दवा निहायत और अजीब फायदेमन्द है। दस बार के प्रयोग में एक बार भी ऐसा नहीं देखा गया कि नासूर अच्छा न हुआ हो। दूसरे हकीमों ने भी यही लिखा है कि यह दवा हर जगह के नासूरों में फायदेमन्द है। एक बार गुदा के नासूर में भी इससे फायदा पहुँचा।

अगर चीनी मिट्टी न मिले तो चीनी के बरतन का फूटा हुआ टुकडा काम में ले सकते हैं।

(ख० अ०)

चीपी।

नाम—

बम्बई—चीपी। बगाल—अर्चिका, ओर्च। उरिया—सुन्दरिगुन। मराठी—तिवर। तामील—किनई। मलयालम—थिरला, त्रिलति। लेटिन—Sonneratia Caseolaris (सोनेरेटिया केसिओलेरिस)।

वर्णन—

यह वनस्पति हिन्दुस्तान, सीलोन, मलाया प्राय. द्वीप, स्याम और जावा में समुद्र के किनारों पर पैदा होती है। यह एक छोटे कद का वृक्ष होता है। इसके पत्ते अडाकार, फूल गुलाबी ६ पखड़ियों वाले और फल २-५ से ५ सेन्टिमीटर तक लम्बा और अडाकृति होते हैं।

गुण, दोप और प्रभाव—

यह वनस्पति रक्त सग्राहक और व्रणरोपक होती है। इसके फल का पुल्टिस बनाकर मोच और सूजन पर बांधने से लाभ होता है। इस के फल का रस जिसमें कि खमीर उठा लिया जाता है रक्तश्राव बन्द करने के लिये उपयोगी माना गया है।

चीना

नाम

संस्कृत—चीनक, काककगु, शुश्लक्षण। हिन्दी—चेना, चीना। बगाल—चिने। मराठी—राले गुजराती—चीणो। फारसी—उरजान। अरबी—शारेगा। अंग्रेजी—Millet (मिलेट)। लेटिन—Panicum Miliari (पेनिकम मिलेरी)।

वर्णन—

यह एक प्रकार का अनाज है जो कगनी की जाति का होता है। यह धान मथुरा, आगरा, पजाब, बुन्देलखण्ड आदि में खेती करके बहुत पैदा किया जाता है। शिमले के तरफ के लोग इसकी रोटी बनाकर तथा चाँवलों की तरह पकाकर खाते हैं। व्रत उपवास के रोज हिन्दू लोग इसका फलाहार करते हैं। इस अनाज में से ६६ प्रतिशत मैदा और ३ प्रतिशत तेल निकलता है।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मत—आयुर्वेदिक मत से चीना मधुर, रुचि कारक, कसेला, स्वादिष्ट, शीतल, दाह नाशक, रूखा और भग्न हड्डी को जोडने वाला है।

यूनानी मत—यूनानी मत से यह पहले दर्जे मे सर्द और दूसरे दर्जे में खुश्क है, कब्जियत करता है, मेदे की रतूबत को सुखाता है, जलोदर की बीमारी में पथ्य है। इसको दूध और घी के साथ खाने से सीने की जलन दूर होती और वीर्य बढता है।

इव्स बूलर के मतानुसार बलूचिस्तान में शोरन नामक स्थान पर यह सुजाक की बीमारी पर काम में लिया जाता है।

कर्नलचोपरा के मतानुसार यह वनस्पति तिल्ली और रक्तश्राव में फायदा पहुँचाती है।
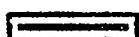
चीकू

नाम—

हिन्दी—सपेना, चीकू। गुजराती—चीकूनू झाड़। कच्छी—चीकूजो झाड। दक्षिण—चिकू। उडिया—सोपेटो। अंग्रेजी—Bull\ Tree। लेटिन—Achras Sapota (एकूस सपोटा)।

वर्णन—

चीकू का वृक्ष छोटा और सुन्दर होता है। इसमें बारहों महीने पत्ते रहते हैं। इसकी छाल भूरे रंग की होती है। फूल फीके, सफेद और फल टीमरू की तरह रहते हैं। इसमें टीमरू की तरह ही गुठलियां निकलती हैं। यह वृक्ष मूलत. अमेरिका का है, मगर अब भारतवर्ष में भी बहुत पैदा होने लगा है।

गुण, दोष और प्रभाव—

कोकण के अन्दर इसका फल पित्तनाशक और ज्वरनाशक औषधि की बतौर काम में लिया जाता है। इसकी छाल पौष्टिक और ज्वरनाशक होती है। इसकी क्रिया साधारणतया सिनकोना की तरह होती है इसके बीज एक जोरदार मूत्रल औषधि हैं। इन बीजों की मात्रा २ रत्ती की है। इससे अधिक मात्रा में यह जहरी हो जाते हैं। इनके प्रयोग से पेशाब बहुत अधिक होता है। इसकी छाल का काढा बनाकर जीर्ण ज्वर मे दिया जाता है।

वेंटली के मतानुसार इसकी छाल मे ज्वरनाशक और बीज में मूत्रल और विरेचक गुण रहता है।

वेस्ट इंडीज में इसके बीज मृदु विरेचक और मूत्रल माने जाते हैं और इसकी छाल पौष्टिक और ज्वरनाशक मानी जाती है। कम्बोडिया में इसकी छाल संकोचक और ज्वरनाशक मानी जाती है। अतिसारमें इसका काढा बनाकर दिया जाता है।

चुकन्दर

नाम—
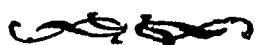
संस्कृत—रक्तग्रञ्जन। हिन्दी—चुकन्दर। फारसी—चुकन्दर। उर्दू—चुकन्दर। बंगाल—विटपलंग, पलंग साग। अंग्रेजी—Beet (बीट) लेटिन—Beta Vulgaris (बीटा व्हलगेरिस)।

वर्णन—

यह एक प्रकार की तरकारी है। इसका पौधा मूलीके पौधे की तरह होता है। इसका कन्द भी मूली की तरह होता है मगर इसका रंग लाल होता है और इसका आकार लम्बाई की अपेक्षा मोटाई में ज्यादा होता है। इसको काटनेसे लाल रंग का पानी बहता है और इसके अन्दर चकरियां नजर आती हैं।

गुण, दोष और प्रभाव—

इसके पत्ते मूत्रल, विरेचक, सूजन को दूर करने वाले और सिरदर्द, लकवा, यकृत और तिल्ली की बीमारियोंमें और कान के दर्द में लाभदायक हैं। इसके बीज कड़वे, मूत्रल, कफनिःसारक, शान्तिदायक, पेटके आफरे को मिटाने वाले, ऋतुश्राव नियामक और सूजन को दूर करने वाले होते हैं। इनका तेल दर्द पर मालिश करनेसे लाभ पहुंचाता है। इसका कन्द मीठा, सूजन में लाभदायक और मानसिक तकलीफों में फायदेमन्द हैं। इसके ताजे पत्तों को रगड़ और मोच पर लगाने से फायदा होता है।

रासायनिक विश्लेषण—

चुकन्दरके कन्दमें एक प्रकारकी शक्कर पाई जाती है। अगर इसको व्यापारिक तौर पर तैयार किया जाय तो गन्ने की शक्कर से यह सस्ती पड़ती है। मगर गन्नेकी शक्कर के बराबर इस में गुण नहीं होते। गन्ने की शक्कर जैसे हृदय के लिये पौष्टिक पदार्थ है वैसे यह नहीं है।

यूनानी मत—खजाइनुल अदवियाके मतानुसार चुकन्दरके पत्तोंके रसको शहदके साथ सूजनपर लगानेसे सूजन बिखर जाती है। इसके पत्तोंके काढ़ेको ठंडा करके आगसे जले हुए स्थानपर डालने से लाभ होता है। इसके रस को कुनकुना करके कान में टपकानेसे कानकी सूजन और कानके दर्दमें फायदा होता है। इसके पानी को नाकमें टपकाने से दिमाग की खराबी दूर होती है और मिरगी में लाभ पहुंचता है। इसकी जड़का असारा नाकमें टपकाने से आधा शीशी दूर होती है। इसके रससे कुल्ले करने से दाँत का दर्द हमेशा के लिये मिट जाता है। राई और सिरके के साथ इसको पकाकर खाने से यकृत और तिल्लीके सुद्दे बिखर जाते हैं। गरम मसाले के साथ इसको खाने से तिल्ली की सूजन बिखर जाती है। अगर किसी के सिर के बाल उड़ गये हों तो इसके पत्तों के पानी को लगातार लगाते रहने से बाल फिर जम जाते हैं। इसकी साग बनाकर खाने से कामेंद्रिय की शक्ति बढ़ती है। यह वनस्पति गरम मिजाज वालों को दही और मट्ठे के साथ और सर्द मिजाज वालों को गरम मसाले के साथ खाना चाहिये।

मुजिर—यह वनस्पति अधिक मात्रा में सेवन करने से पेट में फुलाव और मरोड़े पैदा करती है। मेदे को नुकसान पहुँचाती है। इसकी जड़ से जी मचलता है और कभी २ उदर शूल भी पैदा हो जाता है।

दर्पनाशक—इसके दर्प को नाश करने के लिये गरम मसाला, सिरका, राई, खट्टे अंगूर का रस और नींबू का शर्बत मुफीद है।

प्रतिनिधि—इसका प्रतिनिधि शलगम है।

चुन्नापिएडू

नाम—

यूनानी—चुन्ना पिएडू ।

वर्णन—

यह एक जगली वृक्ष है । इसकी शाखाए बहुत घनी होती हैं । इसके पत्ते गोल और छोटे होते हैं । उनका रंग हरा होता है । इसके फल गुच्छों में लगते हैं । हरएक फल आकार में ज्वार के दाने के बराबर और सफेद होता है । इसका स्वाद खटमीठा होता है ।

गुण, दोष और प्रभाव—

यूनानीमत—यूनानी मतसे यह सर्द और तर है, पित्त को नष्ट करता है । जी मिचलाने को रोकता है । मेदे को ताक़त देता है । भूख बढाता है । पित्तजन्य बुखार को दूर करता है, देर से हजम होता है । गरम प्रकृति वालों के लिये यह विशेष लाभ दायक है ।

मुजिर—यह फेफडे को नुकसान पहुँचाता है ।

दर्प नाशक—इसके दर्प को नष्ट करने के लिये मीठा अनार मुफीद है (ख० अ०)

चुनार

नाम—

यूनानी—चुनार ।

वर्णन—

यह एक बडी जाति का वृक्ष होता है । इसके पत्ते अरड के पत्तों की तरह मगर उससे छोटे होते हैं । इनका आकार हाथ के पजे की तरह होता है । इसका स्वाद कडवा और बुकसा होता है । इसके फूल पीले, हलके और छोटे होते हैं । इसका फल पीला, खाकी, ललाई लिये हुए, गोल, खारदार और हलका होता है । यह खाने के काम में नहीं आता । इस पेड़ की छाल मोटी होती है । इसकी लकड़ी अन्दर से लाल और जौहरदार निकलती है ।

गुण दोष और प्रभाव—

यूनानीमत—यूनानीमत से यह पहले दर्जे में सर्द और खुश्क है। इसकी लकड़ी सर्द और तर होती है। इसके पत्तों को पीसकर लेप करने से जोड़ों और जाँघों की सूजन मिट जाती है। कफ की वजह से पैदा हुई हर जगह की सूजन में यह लेप मुफीद है। इसकी छाल को जलाकर जख्मों पर छिड़कने से जख्म सूख जाते हैं। इसकी राख का लेप करने से सफेद दाग में फायदा होता है। इसकी छाल को सिरके में पकाकर चर्बी मिलाकर आग से जले हुए स्थान पर लगाने से शान्ति मिलती है। इसके हरे पत्तों को पीस कर सिरपर लगाने से सिरदर्द मिटता है। इसके सूखे पत्ते और फल का चूर्ण सूंघने से नक्सीर का खून बन्द हो जाता है।

मुज़िर—यह वस्तु फेंफड़े और हलक़ को नुकसान पहुँचाती है। श्वास की नलीपर भी इसका खराब असर होता है।

दर्प नाशक—इसके दर्प को नाश करने के लिये मक्खन, शहद, दूध, दालचीनी और अगर मुफीद है।

प्रतिनिधि—इसकी छाल के बदले में अनार की छाल और इसकी लकड़ी के बदले में अञ्जीर लकडी काम में ली जा सकती है। (ख० अ०)

चुंगी

नाम:—

यूनानी—चुंगी।

वर्णन—

यह एक छोटी जाति का पेड़ होता है। इसकी दो जातियाँ होती हैं। एक छोटी और एक बडी। छोटी जाति के पौधे की लम्बाई आधे गज तक और बड़े की एक गज तक होती है। छोटी जाति के पत्ते अनार के पत्तों की तरह मगर उनसे लबांई में कम और चौडाई में ज्यादा होते हैं। इसके फूल पीले होते हैं और बीज फलियों में लगते हैं। इसके फूल, फली और बीज, पवार के फूल, फली और बीज की तरह होते हैं। इसका स्वाद कुछ कड़वा और तेज होता है।

गुण, दोष और प्रभाव—

यूनानी मत—यूनानी मत से यह दूसरे दर्जे में गरम और खुश्क है। मेदे के लिये यह बहुत ताक़तवर है, यह भूख बढाता है। इसकी जड़ को मुँह में रखने से प्यास और खुश्की मिटती है (ख०अ०)

चितसिंगी

नाम.—

हिन्दी—चितसिंगी । गुजराती—घोली अडवाउगदव । कच्छी—अच्छेरोजिजको । अंग्रेजी—White Melilot (व्हाइट मेलिलोट) । लेटिन Melilotus Alba (मेलिलोटस एल्बा) ।

वर्णन—

यह एक प्रकार का घास होता है । इसके पौधे १ फुट से २ फुट तक ऊंचे होते हैं । पत्ते मेथी के पत्तों की तरह होते हैं । फूल सफेद आते हैं । इसकी फली में प्रायः दो २ बीज निकलते हैं ।

गुण दोष और प्रभाव—

यह औषधि असर्क नामक औषधि की जगह पर काम में ली जाती है ।

(असर्क का वर्णन इस ग्रन्थ के प्रथम भाग में देखिये)

चुम्बर

नाम—

पजाब—चुम्बर, बरनक, झबूर । लेटिन—Artemisia Sacrorum (आर्टीमीसिया सेक्रोरम) ।

वर्णन—

यह वनस्पति कुमाऊ और तिब्बत में दस हजार फीट से बारह हजार फीट की ऊँचाई तक होती है । यह एक काँटेदार झाडी नुमा वृक्ष है । इसकी छाल लाल और बादामी रंग की होती है । इसके पत्ते २.५ से लेकर ५ सेंटि मीटर तक लबे होते हैं । ये लबंगोल और तीखे होते हैं । इसके फूल पीले होते हैं ।

गुणदोष और प्रभाव—

कर्नल चोपराके मतानुसार यह वनस्पति घोडों के सिर दर्द में मुफीद है ।

चूलासो

नाम—

नेपाल—चूलासी । लेटिन—Osbeckia Crinita (आसबेकिया क्रिनिटा) ।

वर्णन—

यह वनस्पति सिक्किम और भूटान में ४००० फीट से ८००० फीट तक की ऊँचाई पर और खासिया पहाड़ियों तथा बरमा में पैदा होती है । यह एक झाड़ीनुमा बहुशाखी वृक्ष है । इसके पत्ते ५ से लगाकर १० सेंटिमीटर तक लम्बे बरछी आकार के होते हैं । इसके फूल बैंगनी और सफेद होते हैं । इसका फल २ सेंटिमीटर तक लबा होता है ।

गुण दोष और प्रभाव—

चापा जाति के लोग इसके सूखे पत्तों का काढा दांत के दर्द में काम में लेते हैं ।

चूका

इसका वर्णन अमलवेत के प्रकरण में इस ग्रन्थ के पहले भाग में पृष्ठ १०५ पर देखना चाहिये ।

चूका (सिकिम)

नाम—

सिकिम—चूका । लेटिन— Rheum Novile (ह्रीयूम नोवाइल) ।

वर्णन—

यह वनस्पति हिमालय के भीतरी भागों में १३००० फीट से १५००० फीट तक की ऊंचाई पर होती है । इसकी जड़ें बहुत लबी होती हैं । इसके पत्ते लंबगोल, कटी हुई किनारों के और फल गोल होते हैं ।

गुण दोष और प्रभाव—

इसकी गठान तीक्ष्ण, कटुपौष्टिक और मृदुविरेचक होती है । पेचिश में क्षुधा के नष्ट होने पर यह लाभदायक है । इसके गुण रेवंदचीनी के गुण से मिलते जुलते हैं ।

यूनानी मतानुसार इसकी जड़ तीखी और कड़वी होती है। यह विषनाशक, विरेचक, ऋतुश्राव नियामक और मूत्रल होती है। पित्त, कटिवात, मस्तक की गरमी, बवासीर, जीर्णज्वर, वायुनलियों का जीर्ण प्रदाह, दमा, शूल, और रगड़ में यह उपयोगी है।

कर्नल चोपरा के मतानुसार इसमें ग्लुकोसाइड्स और अन्य अम्ल रहते हैं। इसके गुण रेवंद-चीनी से मिलते जुलते हैं।

चेरुका

नाम—

हिन्दी—चेरुका। लेटिन—Capparis Heyneane (केपेरिस हेनिएना)।

वर्णन—

यह वनस्पति भारत के दक्षिण में तथा सीलोन में पैदा होती है। यह एक झाड़ीनुमा वृक्ष है। इसके पत्ते हरे और तीखी नोक वाले रहते हैं। इसके फूल सफेद और हलके पीले रंग के होते हैं इनकी पंखड़ियां गोलाकार रहती हैं। इसका फल अभी तक देखा नहीं गया।

गुण दोष और प्रभाव—

कर्नल चोपरा के मतानुसार इसके पत्ते आमवात और जोड़ों के दर्द में उपयोगी हैं। इसके फूल विरेचक होते हैं।

चेम्बुल

नाम—

पंजाब—चेम्बुल। लेटिन—Ranunculus Avensis (रेनन्क्युलस एवेन्सिस)।

वर्णन—

यह वनस्पति हिमालय में काश्मीर से कुमाऊं तक और आबू पहाड़ में पैदा होती है। यह एक सीधी बहुशाखी वनस्पति है। यह फिसलनी और पीले रङ्ग की होती है। इसके फूल हलके पीले रंग के और फल नोकदार रहते हैं।

गुण, दोष और प्रभाव—

यूरोप में यह वनस्पति पार्यायिक ज्वर, गठिया और दमे के उपयोग में ली जाती है। इसके पत्ते विषैले होते हैं।

चेरुपिनाई

नाम—

बंबई—चेरुपिनाई, सरापुना। मराठी—बाबी, दूरई। कनाडी—बात्री, बोबी। ट्रावनकोर—अत्तुपुन्ना, कत्तपुन्ना, सेरुपुन्ना। तामील—सिरुविचई। लेटिन—Calophillum Apetalum (केलाफिलम एपीटेलम)

वर्णन—

यह वनस्पति बंबई प्रेसिडेन्सी के पश्चिमी घाट में और मैसूर से ट्रावनकोर तक १००० फीट की ऊंचाई तक होती है। यह एक मध्यम आकार का वृक्ष है। इसकी छाल कुछ पीले रंग की, पत्ते कटे हुए किनारों के, लंबगोल, फल अंडाकार, चिकना और पकने पर लाल हो जाता है।

गुण दोष और प्रभाव—

इसका गोंद घाव पूरने वाला, वेदना शून्यता पैदा करनेवाला और प्रदाह को कम करने वाला होता है। इसके बीजों से तैयार किया हुआ तेल कोढ और चर्मरोगों में उपयोगी माना जाता है। इसका शीत निर्यास शहद के साथ मिलाकर गीली खुजली और सधिवात के उपयोग में लिया जाता है।

चेदबला

नाम—

हिन्दी—चेदबला, चेतो। पंजाब—चक्रा, चेतर, चेतेन, दादुर, गोकसा, कुडिज, ममरल मतनी, नियोर, रेतियोन, रमसक, शोमफल, सिंदरोर, शीतपंजा, तादू, थलोट। कुमाऊ—स्पिटी। तिब्बत—नैल, सापो। लेटिन Rhamnus Dahurious (हेमूनस डेव्हरीकस)।

वर्णन—

यह वनस्पति पंजाब और हिमालय में २५०० से ६००० फीट की ऊंचाई तक तथा शिमला, भूतान और मद्रास प्रेसिडेन्सी में पैदा होती है। यह एक प्रकार की कटीली झाड़ी है। इसके पत्ते बहुत घने, पंखड़िया लंब गोल तथा फल काला और चमकीला रहता है। फल के अन्दर गुठली बहुत सख्त होती है। यह स्वाद में बहुत कड़वा होता है।

गुण, दोष और प्रभाव—

कर्नल चोपरा के मतानुसार इसका फल वमनकारक और विरेचक होता है। तिल्ली के विकारों में यह उपयोगी माना जाता है। इसमें ऑक्सिमेथिल, एन्थ्राक्विनोन्स और रेमनोस नामक पदार्थ पाये जाते हैं।

चेरुचुरल

नाम—

मलयालम—चेरुचुरल, कट्टुचुरल। लेटिन—Calamus Travancoricus (केलेमस ट्रेवेनकोरिकस)।

वर्णन—

यह वनस्पति दक्षिणी प्रायद्वीप में मलाबार से ट्रावनकोर तक होती है। इसका तना बहुत नाजुक रहता है। इसके पत्ते ३ से लेकर ५ तक के गुच्छे में रहते हैं।

गुण, दोष और प्रभाव—

कर्नल चोपरा के मतानुसार इसके कोमल पत्ते पित्तविकार, अग्निमांद्य और कान की तकलीफों में उपयोगी माने जाते हैं। ये कृमि नाशक होते हैं।
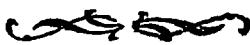
चोबचीनी

नाम—

संस्कृत—द्वीपान्तरवचा, अमृतोपहिता। हिन्दी—चोबचीनी। बंगाल—तोपचीनी। मराठी—चोपचीनी। गुजराती—चोपचीनी। फारसी—वेकचीनी, एवन। अरबी—एवन। तेलगू—पटगीचक्का। अंग्रेजी China Root (चायनारूट)। लेटिन—Smilax China (स्माइलेक्स चायना)।

वर्णन—

चोबचीनी की जड़ें चीनदेश से यहाँ पर आती हैं। चीन में इनको "टूफूह" कहते हैं। इसका पेड़ जमीनपर बिछा हुआ होता है। डालियाँ पतली होती हैं। इसके पत्ते लम्ब-गोल, पतले और तेजपात के पत्तों से मिलते जुलते होते हैं। इसकी जड़ सुर्खी माइल गुलाबी रंग की होती है। कोई २ सफेद और काली भी होती है। चीन के पहाड़ों के अतिरिक्त, बंगाल में सिलहट के पहाड़ों पर और नेपाल के पहाड़ों पर भी यह पैदा होती है।

मखजूनल अदविया में चोबचोनी का वर्णन करते हुए लिखा है कि यह एक जाति की लता की जड़ होती है जो चीन के तरफ से आती है। इसके टुकड़े प्रायः एक बालिश्त तक या उससे छोटे बड़े होते हैं। कोई टुकड़ा कम गठानवाला, कोई अधिक गठानोंवाला, कोई चिकना, कोई खुरदरा कोई वजनदार, कोई हलका, कोई सख्त, कोई मुलायम, कोई गुलाबी रंग का, कोई सफेद और कोई काला होता है। इन टुकड़ों में सबसे अच्छी चोपचीनी वही होती है, जिसका रंग लाल या गुलाबी हो, स्वाद मीठा हो, चमकदार और चिकनी हो, जिसमें गांठें कमहो और रेशे न हो। जो भीतर और बाहर से एक रंगकी हो, जो स्वादमें कुछ मीठी हो, और जो पानी में डालने से डूब जाय। जो टुकड़े वजन में हलके और सफेद रंग के हों उनको कच्चे समझना चाहिये और जो काले रंग के टेढेमेढे और अनेक गठानों वाले हों उनको हलकी जाति के समझना चाहिये।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मत— पूर्व कालीन आयुर्वेदिक ग्रन्थों में इस औषधि का उल्लेख कहीं देखने को नहीं मिलता। मगर मध्यकालीन भावमिश्र ने अपने भावप्रकाश ग्रन्थ में इसका वृत्तान्त लिखा है। इससे ऐसा मालूम होता है कि इस औषधि का प्रचार मुसलमानी हकीमों के द्वारा ही यहा पर हुआ।

भावप्रकाश के मतानुसार चोबचीनी चरपरी, मधुर, कड़वी, गरम, मल मूत्र को शोधने वाली तथा आफरा, शूल, वात व्याधि, अपस्मार, उन्माद और अंग की वेदना को दूर करने वाली है। विशेष रूप से यह फिरंग रोग में लाभदायक है।

इसका रस कुछ मधुर और कुछ कड़वा होता है। यह गरम और अग्निवर्द्धक होती है। कब्जियत को मिटाती है। आफरा और उदरशूल को दूर करती है। दस्त और पेशाब को साफ लाती है। पक्षाघात, संधिवात तथा वायुके दूसरे रोगों में बहुत लाभदायक है। अपस्मार और उन्माद में भी फायदा पहुँचाती है। उपदंश रोग के लिए यह एक अक्सीर औषधि है। पुरुषों के वीर्यदोष और स्त्रियों के रजोदोष को यह दूर करती है। कंठमाल और नेत्ररोगों में भी यह लाभदायक है।

डाक्टर वामन गणेश देसाई का कथन है कि चोबचीनी की मुख्य क्रिया त्वचा के ऊपर और

त्वचा के उपभाग अर्थात् संधियों, बंधन और रस ग्रन्थियों पर होती है। यह एक उत्तम रसायन और दिव्य औषधि है। इसकी मात्रा ३ माशे से ६ माशे तक है, जो सूंठ के साथ दूध के अनुपान से दी जाती है।

सुजाक की वजह से पैदा हुई संधियों की सूजन और संधियों की अकड़न में तथा उपदंश की दूसरी और तीसरी अवस्था में चोबचीनी बहुत लाभ पहुँचाती है। इन रोगों में पोटेशियम आयोडाइड की अपेक्षा अधिक शीघ्रतासे और अधिक निश्चयपूर्वक चोबचीनी लाभ पहुँचाती है। सुजाक और उपदंश की वजह से पैदा हुई रसग्रन्थियों की सूजन में इसके सेवन से पहले दर्द की कमी होती है और उसके पश्चात सूजन उतरती है। इन रोगों मे पोटेशियम आयोडाइड से जैसा त्रास होता है वैसा चोबचीनी से नहीं होता। यह औषधि चूर्ण के रूप में जैसा गुण बतलाती है वैसा क्वाथ या शीतनिर्यास के रूप में नहीं बतलाती।

चोबचीनी शरीर की संधियों और शिराओं के अन्दर प्रवेश करके अविकृत पित्त को सहायता पहुँचाती है। खून को साफ करती है, संधियों को मजबूत करती है, पेशाब को गति देती है, मासिक धर्म को साफ करती है। लकवा, हाथ पैरों का सूजना, उपदंश की वजह से होने वाला सिर दर्द, आधा-शीशी, पुराना नजला, विस्मृति, चक्कर, उन्माद, उपदंश और दमे के रोगों मे भी यह लाभदायक है। खून को शुद्ध करने का इसमें खास गुण होने की वजह से यह फोड़े, फुन्सी, घाव तथा खून की गर्मी से होने वाले रोगों में अक्सीर-फायदा करती है। इसके सेवन से अफीम खाने की आदत छूट जाती है। जहरी पदार्थों के विकार को भी यह शान्त करती है इसी प्रकार जो लोग कामदेव की शक्ति नष्ट हो जाने से नाउम्मीद हो गये हों उनको भी यह फिर से नवीन पुरुषार्थ देती है।

डॉक्टर मुडीन शरीफ कहते हैं कि चोब चीनी की मजबूत गाँठों वाली जड़ एक सस्ती और सुनिश्चित औषधि है। कॉडलिव्हर ऑइल, सार्सा परैला और पोटास आयोडाइड के बदले में यह बहुत सफलताके साथ काम में आती है। मैंने विस्फोटक रोग की अन्तिम असाध्य अवस्था में तथा उपदन्श, सन्धिवात और कण्ठ माला के कितने ही केसों में इसका उपयोग बहुत सफलता के साथ किया है। यह औषधि चूर्ण और क्वाथ के रूप में काम में ली जा सकती है।

उपरोक्त विवेचन से मालूम होता है कि चोब चीनी की क्रिया सीधी रक्त के ऊपर होती है और इस लिये यह रक्तविकारके तमाम दोष, उपदंशके विष और संधिवात, गठिया इत्यादि वात व्याधियों पर बहुत लाभ पहुँचाती है। इसके अतिरिक्त इसका वाजिकरण धर्म भी बहुत प्रभावशाली है। इस लिये कामशक्ति की निर्बलता, वीर्य की खराबी, इत्यादि व्याधियों पर भी इसका उत्तम असर होता है।

यूनानीमत—यूनानीमतमे चोवचीनी शरीर के अन्दर मुलायिमत पैदा करती है। भीतरकी खराबियों को दूर करती है, खून साफ करती है, दिल, दिमाग, कलेजे और कामेन्द्रियको ताकत देती है। फालिज, लकवा, कंपकपी, ऐंठन, पागलपन, मालीखोलिया इत्यादि ज्ञानतन्तु सम्बन्धी बीमारियाँ, गर्भाशय की बिमारियाँ, गुदा सम्बन्धी बीमारिया, तथा कोढ, खुजली, जहरीले फोडे, दाद, इत्यादि रक्त सम्बन्धी रोगों में यह बहुत लाभ पहुँचाती है। वातसे पैदा हुआ बुखार, चौथिया ज्वर और फील पाँव में भी यह लाभदायक है। इससे अफीम खानेकी आदत छूट जाती है। इसके सेवन से चेहरेका रंग लाल, साफ और रौनकदार हो जाता है जिसको बेजानकारीमें पेशाब जानेका रोग हो उसे भी यह ठीक करती है।

इसको सर्दीके शुरूमें अथवा वसन्त ऋतुमें सेवन करना चाहिये। कड़ाकेकी सर्दी और कड़ाकेकी गर्मीमें इसका सेवन मुनासिब नहीं। जवानीके आखिरमें और बुढापे के शुरूमें इसका सेवन करनेसे बुढापेका असर अधिक मालूम नहीं होता। कफ सम्बन्धी बीमारियोंमें इसका सेवन ठीक नहीं है।

मुज़िर—अधिक गरम मिज़ाजवाले लोगोंको और बच्चोंको इसके सेवनसे बहुत खुश्की पैदा होती है। निर्बल मनुष्योंको इसका सेवन करानेमें बडी सावधानी से काम लेना चाहिये क्योंकि यह हृदय की धड़कनको कम करती है।

दर्प नाशक— इसके दर्पको नाश करनेके लिये अनार उत्तम है।

प्रतिनिधि—हकीमोंके मतानुसार इसका प्रतिनिधि उसबा और वैद्योंके मतानुसार असगध है।

मात्राः—इसके चूर्ण की मात्रा ३ माशेसे ६ माशे तककी है।

उपयोग—

उपदंश—जिसका शरीर उपदंशसे फूटगया हो और जिसके सारे शरीरमें उपदंशका विष फैल गया हो उसको चोवचीनीके शीत निर्यासमें शहद मिलाकर पिलाना चाहिये।

गडमाल—इसका चूर्ण ४ माशे से १ तोले तककी मात्रामें शहदके साथ चटानेसे कंठ मालमे लाभ होता है।

रक्त विकार—इसके चूर्णको शहदके साथ चटानेसे त्वचाके पुराने रोग मिटते हैं।

बनावटें:—

उपदंश नाशक चूर्ण—चोब चीनी १६ तोले, मिश्री ४ तोले, पीपर, पीपलामूल, काली मिर्च, लवग, अकल करा, सूंठ, खुरासानी अजवायन, वायविडङ्ग, दालचीनी, ये सब चीजें एक २ तोला। इन सबका बारीक चूर्ण करके इसमें से ६ माशे चूर्ण सुबह शाम शहद के साथ लेने से रक्त में मिले हुए उपदंशके कीटाणु नष्ट होते हैं और उपदंश के परिणामसे होने वाले अन्य रोग, जैसे रक्त विकार, संधिवात, गठिया, लकवा, प्रमेह, इत्यादि नष्ट होते हैं। (वनौषधि गुणादर्श)

चोबचीनी पाक—चोबचीनी ४८ तोले, पीपर, पीपला मूल, कालीमिर्च, सूंठ, अकलकरा और लौंग, ये सब एक २ तोला। इन सबके चूर्णका जितना वजन हो उतनीही शक्करकी चाशनीमें इसका पाक बना लेना चाहिये। इस पाकमें से एक २ तोला सवेरे-शाम लेनेसे नपुंसकता, वृण, कुष्ट, वातरोग, भगन्दर, क्षय, इत्यादि रोग दूर होते हैं।

भगंदर नाशक मोदक—चोबचीनीका चूर्ण आधी छटांक, शक्कर आधी छटॉंक और घी आधी छटॉंक। इन तीनोंको मिलाकर इनके २ लड्डू बनालेना चाहिये। एक लड्डू सवेरे और १ लड्डू शामको खाकर ऊपरसे गायका दूध पीना चाहिये। पथ्यमें सिर्फ गेहूँकी रोटी, घी, शक्कर और दूधही देना चाहिये। १४ दिन तक इस औषधिका सेवन करनेसे भगदर नष्ट होजाता है। अगर इस दवाके सेवनसे शरीरमें गर्मी मालूम पडेतो दवाकी मात्रा कम करदेना चाहिये और घी दूधकी मात्रा बढादेना चाहिये।

(जगलनी जडी बूँटी)

रक्त शोधक क्वाथ—चोबचीनी, अनंत मूल, मजीठ, सनाय, हरड, बहेडा, आँवला, नीम गिलोय, नीमकी अन्तर छाल, कुटकी, पीपलकी अन्तर छाल, दारू हलदी और मुलेटी इन सबको समान भाग लेकर चूर्ण करलेना चाहिये। इस चूर्णमे से ४ तोला चूर्ण लेकर ६४ तोले पानीमें औटाना चाहिये। जब ८ तोला पानी बाकी रह जाय तब छानकर पी लेना चाहिये। इस प्रकार दिनमे दोबार इस क्वाथका सेवन करनेसे शरीरमे फैला हुआ उपदशका विष दूर होजाता है तथा सब प्रकारके रक्त विकार, खाज, खुजली, वृण, भगदर, कुष्ठ, वगैरह रोग नष्ट होते हैं। एक्जिमाके ऐसे केसमे जिनमें डाक्टरोंने रोगीका पांव काट डालनेकी सलाह दी थी इस औषधिके प्रयोगसे आराम होता देखा गया है।

मदन सजीवन चूर्ण—जायफल, लवग, जायपत्री, पीपर, तज, तमाल पत्र, इलायची, नागकेशर, पीपलामूल, अजवायन, कौंचबीज, सेमरमूसली, असगन्ध, सफेदमूसली, वलबीज, गोखरू, समुद्रशोषके-बीज, धतूरेके बीज, वशलोचन और मुलेटी। ये सब चीजें एक २ तोला। चोबचीनी ४० तोला। इन सब औषधियोंका बारीक चूर्ण करके रख देना चाहिये। इस चूर्णमें से ३ माशे चूर्ण ३ माशे शहद और ६ माशे घी के साथ मिला कर चाटना चाहिये और ऊपरसे गायका दूध पीना चाहिये। यह चूर्ण अत्यन्त कामोद्दीपक और वाजिकरण है। इससे सब प्रकारके वीर्यदोष नष्ट हो कर मनुष्यकी काम शक्ति बहुत बढती है।

चूना

नाम—

संस्कृत—चूर्ण, सुधा, सहोदभूषणकं, शिलाक्षारम् शुद्धक्षार, हिन्दी—चूना। गुजराती—चूना।

मरोठी—चूना। बगाल—चूना। पंजाब—चूना। तेलगू—चुन्नपु। द्राविडी—शुन्नाम्बु अरबी—किलस। फारसी—आहक। अंग्रेजी—Lime, Carbonate of Lime, quick lime।

गुण, दोष और प्रभाव—

चूना भारतवर्षमें अत्यन्त प्राचीनकालसे जनसमाज के परिचयमें आरहा है। हजारों वर्ष पहिलेसे यहा पर चूनेसे इमारतें बनाने का काम होता आया है। कंकरीसे चूना जलाने की प्रथाभी यहां पर बहुत प्राचीन कालसे चली आई है। सुश्रुत, बाग्भट्ट, इत्यादि प्राचीन आयुर्वेदाचार्योंने औषधि विज्ञानमें भी इस वस्तुका उपयोग किया है।

आधुनिक काल में इस वस्तुने और भी अधिक महत्व धारण किया है। मनुष्य शरीर का पोषण करनेके लिये और हड्डियों को मजबूत करनेके लिये आजकल केलशियम नामक तत्व बहुत उपयोगी माना जाता है और वह केलशियम इसी चूनेके अन्दर पाया जाने वाला एक तत्व है।

गुण, दोष और प्रभाव—

यूनानीमत— यूनानीमत से यह चौथे में गरम और खुश्क होता है। यह कब्जियत पैदा करता है, खट्टेपन को मिटाता है, पेशाब और खून को साफ करता है, जखम पर लगानेसे जखम भर देता है। सुजाकमें इसके पानीकी पिचकारी देते हैं। आगसे जले हुए स्थान पर चौगुने मक्खनमें इसको मिला कर लगानेसे शान्ति मिलती है। जले हुए स्थानको शान्ति पहुंचाने की इसमें खास तासीर है। चोट लगनेके स्थान पर इसको शहद और तिलके ताजे तेलके साथ मिला कर लगाने से लाभ होता है। शरीर के किसीभी हिस्से से खून बहता हो तो वहा पर धुले हुए चूनेको लगाने से बन्द हो जाता है। चूना और अफीम दोनों को समान भाग लेकर उड़दके बराबर गोलियाँ बना कर सुबह, शाम लेनेसे दस्त, मरोड, पेचिश और सग्रहणीमें लाभ होता है। अद्रकके पानीमें चूना मिला कर थोड़ा सा नमक डालकर सर्दी की सूजनपर लगानेसे सूजन बिखर जाती है।

मुजिर—अधिक मात्रामें चूना खाने और पीनेसे पीने वालेके मुहमें खुश्की पैदा होती है, मुहमें छाले होजाते हैं, मेदेमें जलन होकर मेदा खिचने लगता है, पेशाब रुक जाता है, आतोंमें घाव होकर मरोड़ी और खूनके दस्त आने लगते हैं, दिलमें धडकन होकर बेहोशी पैदा होजाती है। अगर ऐसा उपद्रव हो तो ताजा दूध या बादामका तेल पिलाना चाहिये और तर पदार्थ खिलाना चाहिये।

कर्नल चोपराके मतानुसार कलीके चूनेमें पाया जाने वाला केलशियम सब प्रकारके प्रादाहिक सूजन के लिये एक उत्तम औषधि है। इसे चूनेके पानीके रूपमें काममें लेते हैं। २ औंस कलीके चूनेको एक गैलन पानीमें डालकर घोल देते है। चूना जम जानेपर पानी को नितार लेते हैं। इसी लाइमवाटरमें केलशियम रहता है। इस चूनेके पानी को किसी साधारण जातिके तेलमें मिलाकर खाज, खुजली, जलना

इत्यादि चर्म रोगों पर लगाने व पिलाने के काममें लेते हैं। बच्चोंके पेटके कीड़ोंको नष्ट करनेके लिये ३ औंस चूनेके पानी का एनिमा दिया जाता है। मंदाग्नि और हृदय की जलनमें भी इसको पिलानेसे बडा लाभ होता है। वमन और अतिसारमें, बच्चों की वमन और क्षय में और खनिज अम्लोंके विषमें चूने का पानी उत्तम औषधि है इसे दूधके साथ मिलाकर देनेसे काफी फायदा होता हैं। १ पिंट दूधमें ४ औंस पानी मिलाया जाता है।

चूने का पानी अम्लनाशक होता है। इसे जोड़ों के दर्द में, दादमें, गजमें और पीलिया मे उपयोग में लेते हैं। मूत्र सम्बन्धी रोग, ग्रथियों की वृद्धि और अम्ल की अधिकता मे यह लाभदायक है।

उपयोग—

गाठ और मस—चूना, सज्जी, तूतिया और सुहागेको पानीमें पीसकर मसपर लगानेसे लाभ होता है।

मूत्रकृच्छ्र—चूनेके नितारे हुए पानीमें तिल का तेल और शक्कर मिलाकर पिलानेसे किसी दूसरी औषधिसे नहीं मिटने वाला मूत्रकृच्छ्र मिट जाता है।

अम्लपित्त—५ तोले कलीको ५ सेर पानीमें कागदार शीशीमें बुझाकर २।३ मिनट तक हिलावें और काग बद कर रख छोडे। जब चूना नीचे जम जाय तब उस नितरे हुए पानी में से ढाई २ तोला पानी सुबह शाम पिलाने से अम्ल पित्त मिटता है।

बालरोग— ढाई तोले चूने को ५ तोले मिश्री के साथ खरल करके ढाई पाव पानी में मिलाकर कागदार शीशी में भरकर काग बन्द करके रख दें। जब पानी नितर जाय तब उसमें से १५।२० बूंद पानी दूधमें मिलाकर बच्चेको पिलानेसे उसके पेटमें होनेवाले दूध सम्बन्धी विकार नष्ट हो जाते हैं। वह तन्दुरुस्त रहता है और केलशियम की कमी से होने वाले उपद्रवोंसे उसकी रक्षा होती है।

अजीर्ण—अजीर्णकी वजहसे जिसका पेशाब रुक गया हो या पीला पड गया हो, खट्टी डकारें बहुत आती हों और वमन होने लग गई हों ऐसे रोगमें दूधमें चूनेका पानी मिला कर पिलाने से लाभ होता है।

अतिसार—जिसको अम्लपित्तसे अतिसार हो गया हो उसको चूनेके नितरे हुए पानीमें बबूलका गोंद मिला कर पिलानेसे अतिसार मिटता है।

नम्बर २—चूनेके पानीमें कुन कुना दूध और गोंद मिला कर गुदामें पिचकारी देनेसे भी अतिसार मिटता है।

वमन—जब किसी भी औषधिसे वमन नहीं रुकती हो तो दूधमें चूनेका नितरा हुआ पानी मिला कर पिलासेसे रुक जाती है। पीले बुखारमें काली वमन को रोकनेके लिये दूध और चूनेका पानी बहुत हितकारी है।

श्वेतप्रदर—एक भाग चूनेके नितरे हुए पानीमें तीन भाग पानी मिला कर पिचकारी देनेसे श्वेत-प्रदरमें लाभ होता है।

गडमाला—जिस गंडमालमें पीववाले फोडे होते हों और लगातार घाव पड़ते जाते हों वह भी चूने के पानी को दूध के साथ मिलाकर पीनेसे मिट जाती है मगर वह दूध १२ घटेसे अधिक नहीं पड़ा रहना चाहिये। साथमें गडमालाके फोडों पर चूनेका पानी भी लगाना चाहिये।

दुष्टव्रण—सवा पाव चूनेके नितरे हुए पानी में १५ रत्ती रसकपूर मिलाकर उपदश सम्बन्धी फोडों और न भरनेवाले फोडो पर लगानेसे लाभ होता है। मगर इसका कपडा फोडो पर हमेशा तर रहना चाहिये। खुजली और दूसरे दाहक चर्मरोगोंमें चूनेके नितरे हुए पानीमें तेल मिलाकर उसमें कपडा तर करके रखने से बडा लाभ होता है।

कर्णरोग—चूनेके पानीमें दूध मिलाकर नाक या कानमें उसकी पिचकारी देनेसे नाक और कान का बहना बन्द हो जाता है।

क्षयरोग—क्षयरोग वाले मनुष्य को दूधमें चूनेका पानी मिलाकर देनेसे लाभ होता है। बहु मूत्रके लिये भी यह प्रयोग हितकारी है। जिस बच्चेकी गुदामें चुरनिये पड गये हों उसको चूनेके पानी की पिचकारी देनेसे लाभ होता है।

सखिये का विष— चूने का पानी पिलाने से सखिये का विष उतरता है।

अग्नि से जलना— अग्नि से जले हुए स्थान पर चूना और अलसी का तेल मिलाकर लगाने से शान्ति मिलती है।

शीतलाके व्रण— रूई के फोयेको चूनेके जलमें भिगा कर शीतला के व्रणों पर रखनेसे वह गहरे नहीं पड़ते हैं।

बदगांठ— चूना और शहद मिलाकर कपडेपर लगाकर बदगाठ पर बाधने से बदगाठ बिखर जाती है।

पसली का दर्द— चूने और शहद को कपडेपर लगाकर पसली के दर्दपर रखकर पट्टी चढा देने से पसली का दर्द मिट जाता है।

मकडी का जहर— चूने को नीबू के रस में मिलाकर लगाने से मकड़ी का जहर उतर जाता है।

मस्तक पीडा— चूने और नोसादर को मिलाकर सुंघाने से कफ और वात का सिरदर्द और हर तरह की बेहोशी दूर होती है।

नारु— चूने और बीडलवण को पानी के साथ पीसकर लेप करनेसे नारु मिटता है।

तिल्ली— चूने को शहद के साथ पीसकर तिल्ली पर लेप करके ऊपर अजीर के पत्ते बांधनेसे तिल्ली मिटती है।

मकडी का विष— चूना, तेल और चिरोंजी को पीसकर लगानेसे मकड़ी का जहर दूर होता है।

अग्निमान्द्य— कली का चूना २ रत्ती, तुलसी के पत्तों के रस या अद्रक, प्याज अथवा लहसनके रस के साथ लेने से आमाशय का खट्टापन दूर करके जठराग्नि को तीव्र करता है। आमाशय के विजातीय द्रव्यों को यह दस्त के द्वारा बाहर निकाल देता है।

अतिसार और संग्रहणी— कली का चूना २ रत्ती तुलसी के रस या शहद में मिलाकर चाटनेसे अतिसार और संग्रहणी में लाभ होता है।

खाज और खुजली— कली का चूना १ तोला लेकर ढाई तोला गौमूत्र में खूब अच्छी तरह मिला लेना चाहिये। उसके बाद उसमें थोडा मोम गलाकर डाल देना चाहिये। जिससे वह मरहम की शक्ल का हो जायगा। इस मरहम को खाज खुजली और घावों पर लगाने से बहुत जल्दी आराम होता है।

मूत्रकृच्छ्र—कली का चूना १ रत्ती, भैंस के कान का मैल पावरत्ती, इन दोनों चीजों को शहद में मिलाकर चटाने से पेशाब साफ होकर मूत्रकृच्छ्र में तुरत लाभ होता है। इसको नाभिके ऊपर लगादेने से भी यही लाभ होता है।

आधा शाशी और मस्तक शूल— गोविन्द फल या व्याघ्रनखी की ३ माशे नरम कोंपले लेकर उसमें आधी रत्ती चूना मिलाकर उसको गौमूत्र में मिला देना चाहिये। अगर व्याघ्रनखी न मिले तो २।३ नीम के पत्तों का रस निकालकर उसमें पाव रत्ती चूना मिलाकर उसकी १।२ बूंद नाक अथवा कान में डालने से आधाशीशी और मस्तकशूल फौरन आराम होता है।

मोच और हड्डीका टूटना— चूने को मक्खन के साथ मिलाकर मोच के ऊपर बांधने से मोचकी पीडा शान्त होती है और हड्डी में पड़ी हुई गठान भी बिखर जाती है। टूटी हुई हड्डीपर इस औषधि का लेप करके उसके ऊपर मोरपंख के रुओं की पट्टी बांधना चाहिये। इस पट्टी को ५।७ दिन में बदलते रहना चाहिये।

मुंहकी कीलें— चूने को शहद में मिलाकर मुंह की कीलों पर लगाने से मुंह की कीलें मिट जाती हैं।

वमन— चूने को पानी में घोल कर एक स्थान पर रख देना चाहिये। जब चूना नीचे जम जाय तब साफ पानी को नितारकर उस पानी में शहद मिलाकर पीने से वमन, जी का मिचलाना और आमाशय का खट्टापन दूर होता है। रुचि उत्पन्न होती है। बच्चा अगर दूध निकालता हो तो वह भी इस औषधि को देने से बंद होजाता है।

चमजुए— कई लोगों के गंदगी की वजहसे बगलमें, गुह्य स्थानों पर और आंखों की पलकों में चमजुएं पड़ जाती हैं। ऐसी हालतमें नहानेके गरम जलमें चूना और नीमके पत्तोंका रस डालकर उस पानीसे स्नान करनेसे और आँखें धोनेसे चमजुएं नष्ट होजाती हैं। रक्त और पसीनेके विकारको दूर करने के लिए ३ माशे घी में १ रत्ती चूना मिलाकर खाना चाहिये। नहानेके पहले शरीर पर चूना मिले हुए घी का मालिश कर लेना चाहिये। इस सारे उपचार से चमजुए बहुत जल्दी नष्ट होती है।

यकृत और तिल्ली की वृद्धि— कली का चूना १ रत्ती और सरपखे की जड का रस १ तोला मिलाकर पेट पर लेप करने से और उस हिस्से पर शहद, सोंठ और चूने को समान भाग लेकर उसका बंधन बांधने से अच्छा लाभ होता हैं।

बिच्छू का विष— नीम के पत्तों के रसमें १ रत्ती चूना मिलाकर उस रस की १।२ बूंदे कानमें डालने से और डंक पर बार २ लगाने से बिच्छू का विष उतरता है।

अग्नि से जलने पर— चूने के नितरे हुए पानी में दही की मलाई समान भाग मिलाकर लगाने से अग्नि के जले हुए पर शान्ति मिलती है।

शस्त्रका घाव— अगर चाकू छुरी, वगैरह किसी शस्त्र से गहरा घाव पड़ गया हो तो चूनेको मक्खन और सूंठ के साथ मिलाकर घाव में भरने से खून का बहना बन्द हो जाता है और कुछ दिनों में घाव अच्छा होजाता है।

कानका बहना— आधी रत्ती कली का चूना गौमूत्र में मिलाकर कानमें भरकर, १ घण्टे तक रोगी को ऐसे सुला देना चाहिये जिससे वह बाहर न निकल सके उसके बाद उसको बाहर निकाल देना चाहिये। इसप्रकार हर तीसरे दिन करने से कान का बहना बंद होजाता है।

नासूर—कली का चूना और मक्खी की हगार समान भाग लेकर शहद में मिलाकर उसमें बत्ती को तरकरके नासूर के अंदर भरने से और गौमूत्र और नीम के पत्तों के रससे व्रण को धोते रहने से नासूर जल्दी भर जाता है।

हृदयरोग—कलीका चूना ३ रत्ती और गुड़ ५ तोला इनको मिलाकर रोग के हमले के अनुसार कमज्यादा मात्रामें चटानेसे हृदयके भीतरका वेग और पीडा मिटकर हृदय मजबूत होता है और रक्ताभिसरणकी क्रिया सुधर जाती है।

दमा—एक रत्ती कलीका चूना १ तोला शहद में मिलाकर चाटने से दमे में लाभ होता है।

बालकोंका सूखा रोग—कलीका चूना १ रत्ती, शहदमें मिलाकर चटाकर ऊपर से धारोष्ण दूध पिलाने से बालकों का सूखा रोग मिटता है।

बायुगोला—कलीका चूना डेढ रत्ती, शक्कर १॥ रत्ती और नमक १॥ रत्ती पाव भर पानी में मिलाकर उस पानी में से २ तोला पानी देनेसे बायगोला, आफरा और पेटके कृमि नष्ट होते हैं।

अजीर्ण और अरुचि—एक रत्ती कलीका चूना, ३ माशे अदरकके रसमें कुछ शहद मिलाकर लेने से अजीर्ण और अरुचि मिटती है और भूख लगती है।

स्वर भंग—चूनेको बबूल की कलियों के रसमें पीसकर चने के बराबर गोलियाँ बना लेना चाहिये इन गोलियों को मुँहमें रखकर चूसने से सरदी की वजह से बैठा हुआ गला खुल जाता है।

शक्तिवर्धक—कलीका चूना १ रत्ती, सवेरे शाम ६ माशा शहद में मिलाकर चाटना चाहिये। ऊपर से केशर और शक्कर मिला हुआ बढियाँ दूध पीना चाहिये। इस प्रयोग से अन्न हजम होता है। भूख लगती है, निर्बलता दूर होती है और वीर्य तथा पुरुषार्थ बढता है।

विदेशमें होने वाला जलवायुका दूषित प्रभाव—१ मन भर पानीमें भाव भर कलीका चूना डाल कर उस पानीको निताार कर के पीते रहने से जलवायु के सब दोष दूर हो जाते हैं। अगर किसी को विदेश के जलवायुसे विकार हो गये हों तो एक रत्ती चूने का १॥ माशे जीरेके चूर्णमें मिलाकर सबेरे शाम खानेसे सब बिकार मिट जाते हैं।

वात नाशक प्रयोग—चूना २ तोला, अफीम १ तोला, तीन वर्षका पुराना गुड ४ तोला। इन सब चीजों को मिलाकर खूब खरल करना चाहिये। फिर चनेके बराबर गोलियें बना लेना चाहिये। इसमें से १ गोली सवेरे शाम पानीके साथ देने से बादी की वजह से होने वाला पेटका दर्द, पसली का दर्द और जोड़ो का दर्द मिटना है।

धनुर्वात्—अजवायन को बकरीके मूत्रकी ७ भावना देकर सुखालेना चाहिये। फिर उसमें समान भाग चूना मिलाकर पीसकर चूर्ण करलेना चाहिये। इसमें से ३ माशे से ६ माशे तक दिन में तीन बार देने से धनुर्वात् में लाभ होता हैं।

पागलकुत्ते का विष—चूने को आँकड़े के दूधमें ७ भावनाएं देकर चनेके बराबर गोलियाँ बनालेना चाहिये। इसगोली को सवेरे शाम एक २ की मात्रामें देने से शरीरमें से पागलकुत्ते का बिष नष्ट हो जाता है। अगर किसी को विष चढ गया हो तो प्रति आधघन्टे में इसमे से एक २ गोली देने से वमन के द्वारा जहर बाहर निकल जाता है। वमन अगर नहीं भी हो तो कोई हर्जनहीं। बिना वमन के ही

जहर के दोषों को दूर करके रोगी को आरोग्य करदेती है। फिर भी यह आवश्यक है कि रोगी १ वर्षतक पानी के प्रवाह, अग्नि की ज्वाला और खटाइ इत्यादि अपथ्य कारी भोजनोंसे बचारहे।

चूड़ाखी

नाम—

यूनानी—चूड़ाखीम, चूड़ाखी।

वर्णन—

यह एक जाति का फल है जो फालसे के समान होता है। कच्चा फल खट्टा और कुछ कडवा होता है। इसका अचार बनाते हैं। पकने पर यह लाल और जायकेदार हो जाता है। इसकी जड कुछ लालरंग की होती है।

गुण दोष और प्रभाव,—

इसकी प्रकृति गरम और खुश्क है। इसकी सूखी जड के चूर्ण को सूँघने से छींकें आकर मास्तिष्क साफ हो जाता है। विच्छू का जहर भी इससे निकल जाता है। इसके फल को खाने से पेट के कीडे नष्ट हो जाते हैं। खाँसी, दमा और मेदे की खराबियों को भी यह दूर करता है। इससे हाजमा दुरुस्त होकर भूख बढती है।

(ख० अ०)

चोबे हयात

नाम—

संस्कृत—जीवदारु, लोहकाष्ट, वृद्धमित्र, अमृतदारू, गुह्याद्। हिन्दी—चोवे हयात यूनानी—चोवे हयात। बंबई—लोह लकड। लेटिन—Guaiacum Officinalis (गुएकम आफिसिनेलिस)।

वर्णन—

यह एक झाड़ी नुमा पौधा होता है। इसकी लकडी उदी रंग की औरबहुत सख्त होती है। इस लकड़ी के अन्दर कुछ तेल का अंश होता है। यह पानीमें डालने मे डूबजाती है और कूटनेमें बहुत कठिन

होती है। इसको जलाने से धूप के समान खुशबू निकलती है। इसकी छाल बहुत ग्रस्त व्यस्त और डालियाँ वाँकी टेढी होती हैं। पत्ते जोड़े से लगते हैं। औषधि के प्रयोग में इसकी लकड़ी और उसमें से निकाला हुआ राल काम में आता है। यह वृक्ष पहाडी प्रान्तों में होता है और बहुत बढता है। ऐसा कहाजाता है कि यह वृक्ष बनारस, गोरखपुर और हाथरस के जिलों में पैदा होता है और वहां इसकी लकड़ी से पलग और तख्त के पाये बनते हैं।

गुण, दोष और प्रभाव—

चोबे हयात दीपन, पाचन, मूत्रल, वेदना नाशक, आनुलोमिक, पसीना लानेवाली, सूजन को नष्ट करनेवाली, धातुपरिवर्तक, मासिक धर्म को साफ करनेवाली एक उत्तम रसायन है। इसके सेवनसे आमाशय में गर्मी पैदा होती है। पाचक रस दौडने लगता है, जिससे भूख लगती है, अन्न पचता है और दस्त साफ होता है। अधिक दिनों तक सेवन करने से मनुष्य की जीवन विनिमय क्रिया सुधरती है और शरीर में ओज और लावण्य बढता है। इसको अधिक मात्रा में सेवन करने से दस्तें लगती हैं। जम्भाइयां आती हैं, नाडी जल्दी चलने लगती है और त्वचा तथा मूत्रपिंड की क्रिया शीघ्रगामी हो जाती है।

ढलती हुई उम्र के लोगों के लिए यह एक उत्तम औषधि है, इसको पारे और गन्धक के साथ भी दिया जाता है। यह औषधि छोटी मात्रा में कई वर्षों तक लेते रहने पर भी कोई नुकसान नहीं होता।

प्राचीन आमवात में, सन्धियों की अड़कन मे तथा ग्रधृसी, इत्यादि वात रोगों मे इसके सेवन से वेदना की कमी हो जाती है और बहुत लाभ होता है। इसको गंधक, शोरा, सूंठ और तिलपर्णी के साथ मिलाकर रात्रिके समय चाटने से लाभ होता है।

प्रौढ मनुष्योंके गलेकी श्लेष्म त्वचा,पर गाठ या सूजन होनेपर इसके सेवनसे बहुत लाभ होताहै। ऐसे समय में इसकी लकडी के चूर्ण को जबान पर रखकर गले में उतारना चाहिये। अगर वैसे नहीं उतरे तो पानी के साथ उतारना चाहिये। प्रौढ मनुष्यों के गले की सूजन के लिए इस औषधि के बराबर दूसरी चमत्कारिक औषधि नहीं हैं।

आर्तव के ऊपर भी इस औषधि की क्रिया बहुत प्रभावशाली है। मासिकधर्म की रुकावट और कष्टप्रद मासिकधर्म के लिये यह एक उत्तम औषधि है। अगर इसको धैर्य के साथ लगातार दिया जाय तो स्त्रियों के गर्भाशय की शुद्धि होकर वे सन्तानोत्पत्ति के योग्य होजाती हैं।

रासायनिक विश्लेषण—इसकी लकड़ी में एक प्रकार की अम्ल स्वभाव की राल पाई जाती है,जो खाकी रंगकी और सुगन्धित होती है। यह पानीमें अघुलन शील और अलकोहल में घुलनशील होती है।

मात्रा—इसकी लकड़ीके चूर्ण की मात्रा १५ रत्ती तक की है जो दिनमें ३ बार ली जा सकती है। और इसकी राल की मात्रा २ से ७ रत्ती तक की है।

यूनानी मत— यूनानी मत से यह दूसरे दर्जे में गरम और खुश्क है। इसकी लकडी में जहर दूर करने की अच्छी तासीर है। अगर किसी ने जहर खा लिया हो तो इसके इस्तेमाल से लाभ होता है। साप और बिच्छू के जहर में भी यह बड़ी लाभदायक है। इसका लेप भी जहर की जगह पर करने से वेदना कम होकर शांति मिलती है। हैजे के लिए भी यह बहुत लाभदायक है। इसके सेवन से हैजे की दस्त और उलटियाँ बन्द हो जाती हैं। इसके मरहम से जख्म भर जाते हैं। इसके चूर्ण को ४ माशे की मात्रा में एक माशे काली मिर्च के साथ पानी में पीस कर प्रात.काल पीने से और ऊपर से २।३ निवाले गेहूँ की रोटी को गाय के घी में तर करके खाने से ४० दिन में कोढ जाता रहता है।

चोबचीनी बड़ी

नाम—

हिन्दी—बड़ी चोबचीनी। बंगला—हरिनाशुक् चिन। मराठी—गोटो शुकचिन। पहाड़ी—ताजिना। लेटिन— Smilax Glabra (स्माईलेक्स ग्लेबेरा)

वर्णन—

यह वनस्पति आसाम, सिलहट और खासिया पहाडियों में पैदा होती है इसकी डालियां नाजुक और फिसलनी होती हैं। इसके पत्ते कुछ पतले और अडाकार रहते हैं। इसके फूल बहुत छोटे और सफेद होते हैं। इसकी जड़ चोबचीनी की जडकी तरह ही मोटी होती है। औषधि प्रयोगमें यह जड़ही काम आती है।

गुण, दोष और प्रभाव—

आसाम के पहाडी लोग रक्तविकार, फोडे—फुन्सी और उपदंशजनित उपद्रवों पर इसकी ताजा जड़ का काढा बनाकर देते हैं। दुराचार जनित व्याधियों में यह एक उपयोगी वस्तु है।

चोबचीनी हिन्दी

नाम—

हिन्दी— चोबचीनी हिन्दी। बगला—गुरियाशुकचीनी, पहाड़ी—हूरिन शुकचिन।

वर्णन—

यह भी चोबचीनी की एक जाति है। इस की वेल पूर्वी बगाल, आसाम और बरमामें पैदा होती है। इसके पत्ते झिल्ली दार और शल्याकृति होते हैं। इसकी डालियां नाजुक रहती हैं। इसका कद चोब चीनी की तरह होता है।

गुण, दोष और प्रभाव—

आम वातमें और सधिवातमें इसके कद का रस पिलाया जाता है और उसका बचा हुआ थोदर दर्द की जगह पर बांधा जाता है।

कर्नल चोपराके मतानुसार इसके गुण साधारण चोबचीनीसे मिलते जुलते हैं। यह कामोद्दीपक, पसीना लाने वाली और सधिवातमें लाभ दायक है।

चोबचीनी (जंगली उसबा)

नाम —

हिन्दी—चोबचीनी, जगली उसबा, राम दन्तुन। बगला—कुमारिका। सस्कृत—हिरण्य शाक। मराठी—मोटवेल, गुटी। नेपाल—चोबचीनो। तामील—मले तामर। मलाबार—कलतामर। तेलगू—कोंद तमर। लेटिन Smilax Zaylanica (स्माइलेक्स झेलेनिका)। Smilax Macrophylla (स्माइलेक्स मेक्रो फिला)

वर्णन—

यह एक मोटी और काटेदार वेल मलाबार और कोकणके जगलों में होती है। इसके पत्ते लम्बे, मोटे, अखड और गोल होते हैं। ऊपरसे ये चमकीले रहते हैं। इसका फल बडे मटर के आकार का रहता है। इसकी जडे बहुत होती हैं और वे उसबाके समान लाल रग की दिखाई देती हैं। ये जडे ही औषधिके काममें आती हैं। गोवामें इसकी जडे बिकती हैं और वहां इन्हे देशी सार्सापरिला कहते हैं। ये जड़े ताजी ही गुण कारी होती है, पुरानी होने पर नि.सत्व हो जाती हैं।

गुण दोष और प्रभाव—

यह वनस्पति पसीना लाने वाली, मूत्रल, पौष्टिक और रसायन होती हैं। उपदंश की दूसरी अवस्थामें, पुरातन आमवातमें, और संधियो की सूजनमें यह बहुत उपकारी है। उपदंश की वजहसे होने वाले फोडे-फुन्सी, संधिवात, अस्थिवात और सारे शरीरमें होने वाली गठानों पर यह बहुत उपयोगी है। पुराने चर्म रोग और कंठमालामें भी इससे लाभ होता है।

मात्रा—इसकी जडके १ या २ तोले चूर्ण का क्वाथ एक बारमें पिलाना चाहिये। नेपालके निवासी इसको ३ माशेकी मात्रामें सुजाक की बीमारी और श्लेष्मिक झिल्लियोंके अन्य विकारमें देते हैं।

कर्नल चोपराके मतानुसार यह कामोद्दीपक, पसीना लाने वाली, शान्ति दायक और संधिवातमें उपयोगी है।

चोहतक

नाम—

पंजाब—चोहतक, अयकू। लेटिन Rheum Nobile (हीम नोबिली) Oxyria Digyna (अक्सेरिया डिगिना)।

वर्णन—यह वनस्पति काश्मीरसे सिक्किम तक हिमालयमें १०००० से १७५०० हजार फीट की ऊंचाई तक पैदा होती है। इसकी डडियां खट्टी होती हैं। इनको उबाल कर खाते हैं। ये रुचिकर और शीतल होती हैं। इसका पाताली धड फैलनेवाला होता हैं। इसके पत्ते लंबे पत्र वृन्त वाले होते हैं। इसका फल ४ से लगाकर ६ मिलिमिटर तक के आकार का होता है।

गुण, दोष और प्रभाव—

यह औषधि शीतल और ज्वर तथा प्यास को उपशम करने वाली होती है।
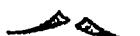
चोरा

नाम—

पंजाब—चोरा, चुरा। लेटिन—Angelica Glauca (एंगेलिका ग्लोका)।

वर्णन—

यह वनस्पति पश्चिमी हिमालयमें काश्मीरसे लगाकर सिमला तक पैदा होती है। इसका तना पोला रहता है। तनेके ऊपर कुछ रेखाए रहती हैं। इसके पत्ते बडे और गहरे हरे रगके रहते हैं। इसके फूल सफेद और बैंगनी रगके होते है। इसका फल लंब गोल और मोटा रहता है।

गुण, दोष और प्रभाव—

कर्नल चोपरा के मतानुसार यह वनस्पति हृदयके लिये लाभदायक और उत्तेजक है। इसे अग्नि-मांद्य और कब्जियत की शिकायतमें काममें लेते हैं।

चौलिया

नाम—

संथाल—चौलिया। मुंडारि—कारगाडू। लेटिन Ruellia Suffruticosa रूएलिया सफ्रुटिकोसा।

वर्णन—

यह वनस्पति उत्तरी गगाके मैदान, उत्तरी पश्चिम बगाल और छोटा नागपुरमें पैदा होती है। यह एक सीधी जाति की वनस्पति है। इसकी जडें मोटी और पत्ते अण्डाकार होते हैं। इसकी फली ३-८ से टिमीटर लम्बी और फिसलनी होती है। यह बैंगनी रंग की रहती है।

गुण दोष और प्रभाव—

केम्प वेलके मता नुसार संथाल जातिके लोग इस वनस्पति को सुजाक उपदंश और गुर्देके रोगोंमें काममें लेते हैं।

इनसायक्लोपीडिया मुंडेरिकाके मतानुसार अगर इसकी सूखी जड़के चूर्ण को २ औंस की मात्रा में गर्भवती स्त्री लेले तो उसके गर्भ पात होने का डर रहता है। इसकी जड़ को सुखा कर पीस कर, पानी में छानकर नेत्र रोगों को दूर करनेके लिये आँखोंमें डालने हैं

चोधारा

नाम—

संस्कृत—ओष्टफल, वैकुंठ, स्पक्का। हिन्दी—चोधारा, बम्बई—चौधारा। गुजराती—घोळूं चोधारो,

मखमली चोधारो। मराठी—पाढरा चोधारा, सुन्दारा, सुन्दरा, कपूरि माधुरी तामील-पेई मरुति तेलगू—मगविरा, मोगमेरी। कनाड़ी—करिंतुम्बे। अंग्रेजी Malabar Catumind (मलाबार केटमिंड)। लेटिन Anisomeles Malabarica (एनिसोमेलस मलेबारिका)।

वर्णन—

यह एक रुएदार झाडी नुमा पौधा होता होता है। इस पौधे का ऊंचाई २।३ फीट तक होती है। इसके पत्ते बहुत जाडे, लम्ब—गोल और कुछ शल्या कृति होते हैं। इसके फूल हलके पीले रंगके और फल अडाकार, चपटे और बादामी रंग के होते हैं।

गुण, दोष और प्रभाव—

यह वनस्पति पसीना लानेवाली, शीतनाशक, उत्तेजक और तीव्र होती है। दक्षिणी भारतमें यह अत्यन्त लोकप्रिय और घरेलू औषधि मानी जाती है। इसके सुगन्धित कटुतत्वों का शीतनिर्यास पेट और आँतों की पीडामें बहुत उपयोगमें लिया जाता है। पार्यायिक ज्वर और जुकाममें भी यह बहुत उपयोगी है। ज्वर की चिकित्सामें इसे अन्त. प्रयोगमें तो लेते ही हैं मगर साथमें इसके गरम काढे की भाफ को नाकके द्वारा सूंघा भी जाता है। ऐसा करनेसे पसीना आकर ज्वर उतर जाता है। इसके पत्तों का शीत निर्यास बच्चोंके उदरशूल, अग्निमांद्य और दांत निकलनेके समयके उपद्रवोंमें लाभदायक माना जाता है। इसका काढा और इसके पत्तोंसे प्राप्त किया हुआ उड़न शील तेल सन्धिवातमें बाह्य उपचार की तौर पर काममें लिया जाता है।

कोमान का मत है कि इस वनस्पतिका निर्यास दांत निकलनेके समय होनेवाले उपद्रवों पर बच्चों को दिया गया और वह उपयोगी पाया गया।

कर्नल चोपराके मतानुसार यह वनस्पति उदरशूल, अग्निमांद्य तथा सांप और बिच्छूके जहर पर उपयोगी मानी जाती है। इसमें उडनशील तेल रहता है।

चोटाहलकुसा

नाम—

हिन्दी बंगाली—चोटाहलकुसा। बम्बई—तांबा। तामील—तुम्बेई। तेगे लाग—पानसी पानसी। लेटिन—Leucas Aspera (ल्यूकास एस्पेरा)।

वर्णन—

यह वनस्पति भारतवर्षके मैदानोंमें पैदा होती है। यह एक वर्ष जीवी वनस्पति है। इसकी ऊँचाई

१५ से लगाकर ४५ सेंटिमीटर तक की होती है। इसका तना सीधा रहता है। इसकी शाखाए जड़ सेही फूटती हैं। इसके पत्ते २-५ से ७ सेंटिमीटर तक लम्बे होते हैं। इसका फल लम्बगोल रहता है।

गुण दोष और—प्रभाव

इसके पत्ते पुरानेवातमें लाभदायक हैं। इसका रस विसर्पिका और अन्य प्रकारके चर्म रोगोंमें उपयोगी माना जाता है। सर्प विष को नष्ट करनेमें भी इस औषधिकी बड़ी प्रशसा है।

कर्नल चोपराके मतानुसार यह वनस्पति कृमिनाशक है। इसे सर्दी, खुजली और सर्प दशके उपयोगमें लेते हैं।

केस और महस्करके मतानुसार यह वनस्पति सर्पदशमें निरुपयोगी है।

चौलाई

नाम—

सस्कृत—तडुलीय, मेघनाद, काडेर, तडुलीबीज, विषघ्न, बहुवीर्य, कंचट, इत्यादि। हिन्दी—चौलाइ का शाग। मराठी—तांदलजा, चंवलाई। गुजराती—तांदलजो। फारसी—सुपेजमर्ज। बगाल—चपनतिया, लाल चपनतिया। तेलगू—मोलाकुरा, कुइकोरा। तामील—कपिकिरी। अग्रेजी Hermaphrodite Amaranth हरमेफ्रोडाइट एमेरेन्थ लेटिन—Amaranthus Tenifolius (एमेरेन्थस टेनिफोलियस)।

वर्णन—

यह एक मशहूर शाग है जो भारतवर्ष में सब दूर बोई जाती है और सब दूर खाई जाती है इसे सब कोइ जानते हैं।। इसलिये इसके विशेष विवेचन की आवश्यकता नहीं।

गुण, दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मत— आयुर्वेदिकमत से चौलाई हलकी, शीतल, रूखी, पित्त कफनाशक, रक्त विकार नाशक, मलमूत्र नि.सारक, रुचिकारक, दीपन और विषहारक है। यह रसविपाक में मधुर, अत्यन्त शीतल, रूखी तथा तृषा, अरुचि, दाह पित्त, रुधिर विकार और विष को नष्ट करती है।

चौलाई के पत्ते छूने में शीतल और अर्श, रक्तपित्त, विष तथा खांसी को नष्ट करते हैं। ये मलरोधक, पचने में मधुर और दाह तथा सूजन को नष्ट करने वाले हैं।

चौंलाई की जड गरम, कफ नाशक, रज रोधक तथा रक्तपित्त और प्रदर को दूर करने वाली है।

जल चौंलाई कड़वी, हलकी और रक्तपित्त तथा वात को नष्ट करती है।

यूनानी मत— यूनानी मत से यह पहले दर्जेमें सर्द और खुश्क है मगर इसकी लालजाति बहुत गरम और खुश्क होती है। यह हजम होने में हलकी और मीठी होती है। इसके पचांग का रस पिलाने से सांप का विष नष्ट होता है। इसकी जटका काढा पिलाने से वायु से पैदा हुआ उदरशूल मिटता है। इसकी जड को घोट छानकर पिलाने से सुजाक में लाभ होता है। इसकी जडको पीसकर लेप करने से वदगाठ और दूसरे फोडे जल्दी पक जाते हैं। इसके पत्तों को गरम पानीमें भिगोकर मल छानकर पिलाने से मूत्रनाली की जलन मिट जाती है। इसकी जड को घिसकर लेप करनेसे बिच्छूका जहर उतर जाता है। इसकी जड को रसोत, शहद और चावलों के धोवन के साथ पिलाने से स्त्रियों का श्वेतप्रदर और रक्तप्रदर मिटता है। चौंलाई के पत्ते और नीम के पत्तों को पीसकर कनपटी पर लेप करने से नकसीर बन्द होता है। इसकी तरकारीको हमेशा खाते रहनेसे पथरी गल जाती है। इसकी जडोंको पीसकर नारु पर बाधने से नारु गल जाता है। इसके पचाग की राख को मुह पर लेप करके थोड़ी देर धूप में बैठने से मुह की झाई मिट जाती है।

तालीफ शरीफ नामक ग्रन्थके मतानुसार चौलाई पित्त, कफ और खूनके फसाद को मिटाती है, पेशाब अधिक लाती हैं। शरीर की गदगी को दस्तों की राह निकाल देती है। रक्त पित्तके दोषों को मिटाती है। प्रमेहमें लाभ पहुँचाती है, खाँसी को दूर करती है, पित्तसे पैदा हुए बुखार और पागल पन में लाभ पहुचाती हैं। सर्पविषमें भी यह लाभ दायक है। लाल चौंलाई की जड़को पानीमे पीसकर प्रातः काल रोजाना पीनेसे गर्भाशयसे बहने वाला खून रुक जाता है। अगर किसीके कफमें खून आता हो तो उसके लिये भी यह लाभ दायक है। इसके पत्तों को घी में पीस कर मकड़ीके जहर पर लगानेसे लाभ होता है। इसकी जड़ का रस निकाल कर उसमें ४॥ माशे रसोद और एक माशा नाग केशर का चूर्ण मिला कर जगली वेरके बराबर गोलियाँ बाँध लें। इनमें से एक गोली प्रति दिन खाकर उसके ऊपर, चौंलाई की जडके शीत निर्यासका एक प्याला पी लिया करें। इस प्रयोग से कुछ दिनोंमें खूनी बवासीर मिट जाता है। मगर ऐसी चीजे न खॉयं जो ववासीर को वढाने वाली होती है।

मात्रा—इसकी जड के क्वाथ की मात्रा २॥ तोले से ५ तोले तक की हैं।

छरीला

नाम:—

संस्कृत—शैलाख्य, शैलेयम्, वृद्ध, सुभग, शिलापुष्प, शिलाभव, कालानुसारिवा, हिन्दी—छरीला,

छार छरीला, भूरि छरीला, पत्थर काफूल। वगाल-शैलजा। मराठी-दगड फूल फ़ार्सी-दहाल। अरबी-आसीना; उस्ना। । गुजराती-पत्थरफूल। पजाव-छार छरीला, अस्नेहा। करनाटकी-कलहू। तेलगू-रति पति। तामील—कलाहू। उर्दू-द्वाकरमनी। लेटिन—Parmelia Perforata (परमेलिया परफोरेटा)।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मत से छरीला शीतल, हृदयको हितकारी, कफ पित्तनाशक,हलका और खुजली, कुष्ट, पथरी, दाह, विष और गुदा के रक्त श्राव को दूर करने वाला है।

निघटु रत्नाकरके मतानुसार छरीला चरपरा,शीतल,सुगधित, हलका हृदयको हितकारी, रुचिकारक तथा कफ, दाह, तृषा, वमन, श्वास, घाव, खुजली, कोढ, पथरी, विष,ज्वर, रुधिर विकार, वातरोग और खूनी बवासीरको नष्ट करने वाला है।

यूनानी मतसे वह पहले दर्जेमें सर्द और खुश्क है। यह सुगंधित,कब्ज करनेवाला,सकोचक,पौष्टिक, धातुपरिवर्तक, पेटके आफरेको दूर करने वाला और कामोद्दीपक है। यकृत और तिल्लीकी सूजन और गुर्दे तथा मसानेकी वायुको यह बिखेरता है। दिलकी धडकन, मृगी, वमन, जी मिचलाना, यकृतके रोग, गर्भाशयके रोग और मासिकधर्म सम्बन्धी बीमारियोंमें यह मुफीद है। यह कामेद्रियको ताक़त देता है। और पथरी को बिखेरता है। हृदय के लिये यह एक बहुत पौष्टिक वस्तु है। इसको जलाकर इसका धुआँ नाकमें पहुँचाने से मृगी, सिरदर्द, आधाशीशी और हिस्टीरियामें लाभ पहुँचाता है। इसे आँखेमें लगाने से आंखों को ताकत मिलती है और उनकी ज्योति तेज़ होती है। आँखकी सूजनको चाहे वह सर्दीकी वजहसे हुई हो या गर्मीकी वजहसे यह बहुत फायदा पहुँचाता है। इसका लेप करनेसे शरीरके ढीले अग कठोर होते हैं। जोड़ोंके दर्दमें भी यह वस्तु लाभ पहुँचाती है। इसको पीस कर घावपर छिडकनेसे घाव जल्दी भर जाता है। यह आमाशय और आँखों को ताक़त देता है, और हिचकी को मिटाता है,।

दर्पनाशक—इसका दर्पनाशक अनीसून है।

प्रतिनिधि—इसके प्रतिनिधि बालछड़ और अजखर है

मात्रा—यूनानी मतसे इसकी मात्रा १ मासे तकको है

अनुभूत चिकित्सा सागरके मतानुसार छडीला कामला रोगमें वहुत उपकारी है। कुत्तेके विष को उतारने के लिये इसका प्रयोग किया जाता है। इसके सेवनसे मन्दाग्नि मिटती है। फेंफडे के रोगोंमें भी इसका सेवन बहुत लाभ दायक है। इसके चूर्ण को सूंघने से मस्तक पीडा मिटती है। व्रण और घावपर इसको लगाने से बहुत लाम होता है। कष्टदायक मासिक धर्म, वमन, पथरी, नाकसे गाढ़े पीवका

निकलना, तथा यकृत, गर्भाशय और आमाशय की पीड़ामें यह उपयोगी है। गले और दांतोंके रोगोंको भी यह मिटाता है। इसको पानीमें औटाकर, पीसकर,पुल्टिस बनाकर, गुर्दे और कमरपर बाँधनेसे पेशाब की रुकावट मिटकर पेशाब साफ होता है।

छत्री

नाम—

हिन्दी—छत्री। पजाब—कीआइन। लेटिन— Polvporus officinalis (पोली पोरस आफसिनेलिस) अंग्रेजी—Larch Agario (लार्क एगेरिक)।

वर्णन—

यह वनस्पति पंजाब के अन्दर पैदा होती है। ऐसा मालूम होता है कि यूनानी की सुप्रसिद्ध दवा गारीकून जिसका वर्णन इस ग्रन्थ के तीसरे भाग में दिया गया है, इसीसे तैयार होती है। यद्यपि इसका कोई मजबूत प्रमाण नहीं है।

गुण, दोष और प्रभाव—

यह मूत्रल, मृदुविरेचक और कफ निःसारक होती है। इसे स्नायुमंडल को पुष्टकरने के काममें लेते हैं। यह वनस्पति प्राचीनकाल से ही ग्रीक और रोमन चिकित्सकों की अत्यन्त प्रिय औषधि रही है। मध्यकाल के यूनानि हकिमों ने इसकी इसी उपयोगिता के कारण इसे जीवन में अमृत तुल्य समझकर इसके सम्बन्ध में काफी खोजकी है। उनके मतानुसार इस औषधि में निम्नांकित गुण हैं।

यह घाव को पूरती है। शरीर में गर्मी पैदा करती है। गिरने से मोच आजानेपर और हड्डी के टूट जाने पर भी यह लाभ पहुँचाती है। ज्वर में इसे शहद और पानी के साथ देते हैं। यकृत की शिकायतों में तथा दमा, पीलिया, पेचिश, गुर्देके रोग, मूत्रनाली के रोग और उन्माद में भी यह बहुत उपयोगी है। क्षयमें इसको अंगूर की शराब के साथ देते हैं। तिल्ली के रोगों में इसको शहद और सिरके साथ दिया जाता है। पानीके साथ इसको देनेसे खूनका बहना बन्द हो जाता है। मृगीमें इसको शहद और सिरके के साथ देनेमें इससे लाभ होता है। सर्पविष और दूसरे जहरों पर इसको शराब के साथ देने से फायदा पहुँचता है।

छत्ता

नाम—

संस्कृत—छत्र, भुइछत, भूमि स्फोट, भूसुता, भूछत्र, सस्वेदजशाक, कवच, हिन्दी—सांपकी छत्री, छाता, छतोना, फेनछत्तर। बंगाल—छतकुडा, छाता, भुइछाती। बम्बई—अलंबे, कंलबे, खुंबा गुजराती—कागदाना छत्तर, फूग्यू, मीनडानी वल्लो। मराठी—अलंबि, भुइफोड़, सत्री, कुत्र्याचेमूत्त। फारसी—कुलंलिकदिव, समरुग, समरोघा, छत्रीमार। उर्दू—कागमिठा। कोकण—कामिल। अंग्रेजी Msharoom मशरुम। लेटिन—Agaricus Campestris एगेरिकस कपेस्ट्रिस. A. Psalliota (एगेरिकस सेलिओटा)।

वर्णन

यह वनस्पति पहली बरसात के होते ही पशुशालाओं में, मिट्टी की दिवालों पर और मलमूत्र की जगह अपने आप पैदा हो जाती है। यह बिलकुल छत्री के आकार की होती है इसकी लम्बाई ४ इंचसे ८ इंच तक रहती है। इसका रंग सफेद रहता है। नीचे से एक डंडी निकलती है और उसके ऊपर छत्री के आकार का ढक्कन पैदा होता है। इसकी तीन जातियां पैदा होती हैं। सफेद, लाल और काली।

गुण, दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मत— भावप्रकाश के मतसे छत्री शीतल, दोषजनक, भारी तथा वमन, अतिसार, ज्वर और कफ रोगों को उत्पन्न करती है। सफेद शुभ्र स्थान में होने वाली तथा काठ बांस और गायके स्थानों पर पैदा होने वाली छत्री अधिक नुकसानदायक नहीं है। शेष सब त्यागने के योग्य है।

निघन्टु रत्नाकरके मतानुसार छत्री शीतल, बलकारक, भारी, मेदक, मधुर, त्रिदोषजनक, वीर्य वर्द्धकऔर कफकारक होती है। यह पाचनक्रिया में अनियमितता पैदा करता है। इसकी लाल जाति सबसे कम हानिकारक होती है।

यूनानी मत— यूनानी मत से छत्री नाक आंख और यकृत की तकलीफों में लाभ पहुँचाती है। जलार्बुद, पक्षाघात, और यकृत की तकलीफों में भी यह लाभदायक है। इसकी काली जाति जहरीली होती है।

डाक्टर वामन गणेश देसाई के मतानुसार जब आमाशय की पाचन शक्ति कमजोर होजाती है और रोगी क्षीण होता जाता है। तब इस वनस्पति की तरकारी बनाकर देने से लाभ होता है। क्षयरोग में इसको दूध के साथ उबालकर शक्कर मिलाकर देते हैं। ताकत के लिए इसे घी में भूनकर ली

जाती है। इस वनस्पति में बहुत सी जहरीली होती है। इसलिए इसको लेते वक्त सावधानी रखना चाहिये। जिसमें किसी प्रकार की दुर्गन्ध न हो और जो बहुत जल्दी मुड़ जाती हो वह वनस्पति खाने लायक समझी जाती है।

इसकी एक जाति कपासके झाड़के ऊपर पैदा होती है। इसका रंग खाकी होता है। यह वृण रोपक और रक्त संग्राहक होती है। इसको पानीमें उबाल कर बच्चोंके मुखरोग पर लगानेके काममें लेते हैं।

छतरछी

नाम—

यूनानी—छतरछी।

वर्णन—

यह एक बहुत छोटी रोइदगी होती है। इसके पत्ते इमली के पत्तोंकी तरह मगर उनसे छोटे होते हैं। इसका फूल गोल, सांपकी आंखके बराबर लाल रंगका होता है।

गुण, दोष और प्रभाव—

यूनानी मतसे यह गरम और खुश्क होती है। कितनी ही सख्त खुजली हो गई हो इसके इस्तेमालसे नष्ट हो जाती है। वायुके रोगोंमें भी यह लाभ पहुँचाती है। आँखोंके लिये भी यह मुफीद है।

छतरमूठा

नाम—

यूनानी—छतर मूठा।

वर्णन—

यह एक सुन्दर पेड़ होता है, जिसका तना बहुत छोटा होता है। इसकी शाखाएं अनारकी

शाखाओंकी तरह होती हैं। इसके पत्ते सन्दलके पत्तोंसे कुछ छोटे और कैंथके पत्तोंसे कुछ बड़े होते हैं। इसके फूल सफेद होते हैं जिनमें ४ पखड़ियाँ होती हैं। इन पंखडियोंके अन्दर छोटी २ पखड़ियाँ और होती हैं। इसके मूंग की तरह पत्तियाँ लगती हैं। इसकी फलीका छिलका ऊपरसे हरा और भीतरसे लाल होता है। इसके बीज काले, इलायचीके दानोंकी तरह होते हैं। इसके पत्तों, शाखों, और फलियोंसे दूध निकलता है। (ख० अ०)

गुण दोष और प्रभाव,—

यूनानी मतके अनुसार इसके पत्ते, फलीका गूदा और छिलका सर्द और खुश्क है। बीज दूसरे दर्जे में गरम और पहले दर्जे में खुश्क होते हैं। यह वनस्पति कब्जको दूर करती है। खूनको साफ करती हैं। पीनस, सिर दर्द और कमरके दर्दमें लाभदायक है। दूध, पसीना, और पेशाबको यह बढ़ाती है। इसके चूर्णको शक्करके साथ खानेसे कुष्ट, बवासीर और कमरके दर्द में लाभ होता है। (ख० अ०)

छिरेटा।

नाम—

संस्कृत—पाताल गरूडी, दृढकांडा, दीर्घवल्ली, महामूला, सोमवल्ली, वनतिक्तिका, तिक्तांगा, इत्यादि। हिन्दी—छिरेटा, पाताल गरुड़ी, छिपर, जलयमनी, जमटी की वेल, फरोद बूटी। गुजराती—वेवडी, वेव, पाताल गलोरी। काठियावाड़—वधीनोवेलो। मराठी—वासमवेल, वसनवेल,परवेल, हुन्देर, भुइपाड। बंगाल—हरोर, शिलिंदा, चिलिंदा। कोकण—वनतिक्तका। फारसी—फरीद बूटी। उर्दू—फरीद बूंटी। तामील—कटुकोदि। तेलगू—चिपुरटिगे,कतलटिगे। उड़िया—मूषाकानी। सीमाप्रदेश—पाठा। कनाड़ी—दागडी वेल, सुगंधि वालि। सिंध—कुरसन, फमीर। बलुचिस्तान—अफबद, फमूर। लेटिन—Cocculus Villosus, कोक्यूलस व्हिलोसस C. Hirustus (को० हिरसूटस)।

वर्णन—

छिरेटाकी वेलें बरसातके दिनोंमें सब दूर पैदा होतीं हैं। कहीं २ ये बारहों महिने देखी जाती हैं। यह पहाड़ों पर नहीं होतीं। इसकी बेलें बहुत लंबी और जमीन पर फैली हुई रहती हैं। अथवा यदि नजदीक में कोई वृक्ष हो तो उस पर चढ़ जाती हैं। इस सारी वेलके डठलों पर सफेद बालके रुएँ होते हैं। नई वेलके डठल कोमल रहते हैं मगर पुरानी होने पर ये लंबे, मजबूत व चौड़े हो जाते हैं। इसके

पत्ते २ से ३ इञ्च तक लंबे और १॥ से २ इञ्च तक चौडे कहीं गोल और कहीं तिकोने होते हैं। कहीं ये ५ कोने वाले होते हैं। कुछ पत्ते नागर वेलके पत्तों की तरह होते हैं। एकही वेलपर और एकही डाली पर भिन्न २ प्रकारके पत्ते नजर आते हैं। इसके फूल सब्जी माइल पीले रंगके, बहुत छोटे होते हैं। इसके फलभी बहुत छोटे, कच्ची हालत में हरे और पकने पर बैंगनी हो जाते हैं। इनमें कालारस भराहुआ रहता है। इसके फूल वर्षामें और फल जाडे में आते हैं। इसके पत्तों को पानी में मसल देनेसे पानी जम जाता है इसी लिये इसको जल जमनी कहते हैं। इस वेलकी जड में बहुत गहरा एक कद निकलता है। इसीसे इसका नाम पाताल गरुडी रक्खा है। औषधिमें इसके पत्ते और इसकी जडे काममें आती है।

गुण, दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिकमत—आयुर्वेदके मतसे छिरेटा मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, रुचिकारक तथा दाह, पित्त रुधिर-विकार और विषके उपद्रवोंको नष्ट करने वाला है। इसकी जड़ उष्णवीर्य्य,पसीना लाने वाली, मूत्रल, बल वर्धक, ज्वर नाशक, वायुके विकारोंको दूर करने वाली, शोधक और मृदु स्वभावी होती है। मूत्र मार्गों के ऊपर यह ग्राही और शामक क्रिया करती है इसके पत्ते जलन को शातकरने वाले, मूत्रल, सूजनको नाश करने वाले और दुग्धवर्द्धक होते हैं।

हब्सबूलर के मतानुसार इसका लुआब दूधके साथ लेनेसे अनैच्छिक वीर्यश्रावमें लाभ पहुँचता है। खांसीमें भी यह लामदायक है। आँखों की पलकों का सूजन दूर करने पर भी इसका उपयोग किया जाता है।

मुरेके मतानुसार सिंध में इसकी जडें और पत्ते सिर दर्द और स्नायुके शूलमें लाभ-दायक माने जाते हैं।

फरमा कोपिया ऑफ इंडिया के मतानुसार इस वनस्पतिमें सभवत. गिलोय के पौष्टिक गुण भी रहते हैं।

गुजरात, काठियावाड़ और कोकण में यह एक लोकप्रिय और घरेलू औषधि है। वहां पर इसकी जडों को बकरीके दूधमें उबाल कर उसमें पीपर, सूठ और मिर्च डालकर पुराने आम वात, चर्म रोग और उपदश जन्य सधिवातमें देते हैं। इसके पत्तों का रस शीतवीर्य होने की वजह से जीरा और खड़ी शक्करके साथ नये सुजाकमें बहुत लाभ पहुँचाता है। चोट, सूजन, मोच, रगड़, इत्यादि व्याधियों पर इसके पत्तोंको गरम करके बाँधते हैं।

सधिवात, विस्फोटक, खुजली तथा उपदशकी वजहसे पैदा होने वाले रक्तविकारों पर यह सार्सा

परिलाकी तरह लाभ पहुँचाती है और ऐसे रोगोंमें इसकी दो तोला जड़को ७ काली मिरच के साथ पीसकर ६० तोला पानीमें उबालते हैं। जब ५ तोला पानी शेष रहजाता है तब उसको पिलाया जाता है।

इसकी जड़में से बहुत गहराई पर एक कन्द निकलता है। ऐसा कहा जाता है कि इस कन्द को घिसकर पानीके साथ पिलानेसे उल्टी होकर साँपका विष तत्काल नष्ट हो जाता है। इसीसे इसका नाम संस्कृतमें पाताल गरुडी रक्खा गया है।

इसके सिवाय इस औषधिमें एक और महत्त्व पूर्ण गुण पाया जाता है। जिन लोगोको अफीम खानेका व्यसन पड जाता है और वह किसी प्रकार नहीं छूटता, उन लोगोंको अगर धीरे २ अफीम कम करते हुए उसके बदलेमें छिरेटेकी जड़का चूर्ण दिया जाय तो धीरे २ अफीमका व्यसन छूट जाता है। यह चूर्ण शुरूमें १ तोलेकी मात्रामें देना चाहिये और इसके पश्चात् धीरे २ कम करते जाना चाहिये। इस औषधिके सेवनसे सिरमें चक्कर आते हैं और उल्टी भी होती है इसलिये इसके ऊपर मिश्री मिले हुए दूधमें १।।-२ रत्ती जायफलका चूर्ण मिलाकर पीना चाहिये। इस प्रकार एक दो मास लगातार इस औषधि का प्रयोग करनेसे २० वर्षका पुराना अफीमका व्यसन भी छूट जाता है।

इस वनस्पतिमें दूसरा चमत्कारिक गुण यह बतलाया जाता है कि इसके जरिये पारेकी अग्नि स्थाई गोली बनाई जा सकती है। इसकी तरकीब इस प्रकार है—

छिरेटेके पत्ते और आँकडेके कुछ कच्चे और पके पत्ते समान भाग लेकर उनका १ सेर रस निकाल लेना चाहिये। उसके बाद मिट्टीकी एक सरावली लेकर उसे चूल्हे पर रखकर नीचे धीमी आँच लगाना चाहिये। फिर उसमें उस रसका कुछ हिस्सा डालना चाहिये। जब रस गरम होकर उफान देकर नीचे बैठ जाय तब उसमें ७ तोला पारा डाल देना चाहिये। जैसे २ नीचेका रस जलता जाय वैसे २ ऊपरसे नया रस डालते जाना चाहिये। इस प्रकार जब रस जल जाय तब उस सरावलीको नीचे उतार लेना चाहिये। इस प्रकार १० दिनमें १० सेर रस पचा देने के पश्चात् पारेकी गोली बन जाती है। ऐसा कहा जाता है।

(जंगलनी जड़ी बूटी)

उपयोग—

सुजाक—छिरेटाके २ तोले पत्तोंको पानीमें पीसकर छान ले और प्रातःकाल पीलें। ऊपर से २-३ माशे मिश्री चबालें। पथ्यमें बिना नमककी रोटी और थूली खूब घी के साथ खावें। ७ दिन तक इसका सेवन करनेसे सुजाक जड़से जाता रहता है।

उपदंश और गठिया—इसकी ताजा जडके २ छटाक क्वाथमें बकरीका ढाई छटाक दूध

मिलाकर उस पर कुछ काली मिर्चका चूर्ण डालकर प्रात.काल पिलाने से गठिया और गर्मीकी वजह से होने वाले दूसरे उपद्रव मिटते हैं।

हाजमेकी कमजोरी—इसके ६ माशे चूर्णमें शक्कर और सोंठ मिलाकर देनेमे पित्तकी वजहसे पैदा हुई हाजमेकी कमजोरी मिटती है।

नारू—इसको पानीके साथ पीसकर पिलानेसे नारू मिट जाता है।

मात्रा—इसकी जड़के रसकी मात्रा ४ माशे तक और पत्तोंकी मात्रा ४ माशेमे ७ माशे तक है।

छोंकर (खेंजड़ा)

नाम—

सस्कृत—शमी, मादगा, दुरितदामिनि, हविरगधा, केशहत्रा, लक्ष्मी, पापनाशिनि, शक्तुफला, शांता, शिवा, इत्यादि। हिन्दी—छोकर, छिकुर, खेजडा, सफेद कीकर। गुजराती—खेजड़ी, खीजडो। बगाल—शाईं गाछ, छुइ बाबला। मराठी—शमी, लघु शमो। पजाब—जड, जंडी। बबई—शमी, शबरी। मारवाडी खेजडा, कजरा। तेलगू—जवी, जाँवी, प्रियादर्शिनी, तामील—जंबू, कलिसम्। अंग्रेजी—Spunge Tree (स्पज ट्री) लेटिन—Prosopies Spicigera (प्रोसोपिस स्पिकीगेरा)।

वर्णन—

यह वृक्ष पंजाब, सिंध, राजपूताना, गुजरात, बुंदेलखंड इत्यादि प्रान्तों में बहुत अधिक तादाद में होता है। खेजडे के वृक्ष १५ से लेकर ३० फीट तक ऊँचे होते हैं। इसके फूल कुछ सफेदी लिये हुए पीले रंग के और लबी कलगी की तरह आते हैं। इसके पापडे सफेद रगके ४ से लेकर ८ इच तक लबे होते हैं। एक २ पापडे में १० से लेकर १५ तक बीज निकलते हैं। ये पापड़े थोड़ी मात्रा में बैलोंके लिये पौष्टिक खाद्य होते हैं। अधिक मात्रा में ये नशीले और जहरीले होजाते हैं।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदके मतसे खेजडा कड़वा, चरपरा, शीतल, कसेला, रोचक, हलका, तथा कफ खांसी, भ्रम, श्वास, कोढ़, बवासीर और कृमि को दूर करता है। इसका फल पित्तजनक, रूखा बुद्धिवर्धक और केशों को नष्ट करने वाला होता है। (भाव प्रकाश)

खेजड़ा रूखा, कसेला, शीतल, हलका, कड़वा, चरपरा, दस्तावर तथा रक्तपित्त, अतिसार,

कुष्ठ, बवासीर, श्वास, खांसी, कफ, भ्रम, कम्प और थकावट को नष्ट करने वाला है इसका फल तीक्ष्ण, पित्तजनक, मेधाजनक, भारी, स्वादिष्ट, रूखा, गरम और केशनाशक है।

इसकी छाल खुश्क, कसैली, कटु और तेज स्वाद वाली होती है। यह शीतल, कृमिनाशक और पौष्टिक है। कोढ़, पेचिश, वायु नलियों का प्रदाह, दमा, धवलरोग, बवासीर, मस्तिष्क की विकृति और मज्जाओंके कम्पनमें यह लाभदायक है। इसके पत्तों का धुआं नेत्रों की तकलीफमें उपयोगी है।

सुश्रुत और योगरत्नाकरके मतानुसार यह वृक्ष साँपके विषपर लाभदायक है। सुश्रुतके मतानुसार इसका छिलटा बिच्छूके काटने पर भी उपयोगी है।

केस और महस्करके मतानुसार इस वनस्पतिके सब हिस्से सर्प विषमें निरुपयोगी हैं।

पंजाबके अंदर इसका पापड़ा सकोचक माना जाता है।

मध्य प्रदेशमें इसकी छाल संधिवातके उपयोगमें ली जाती है।

डब्स वूलरके मतानुसार कलवानके सहमा नामक गांवमें गर्भवती स्त्रियाँ इसके फूलोंको शक्करके साथ लेती हैं जिससे गर्भ पात होनेका डर नहीं रहता है।

लास वेलामें इसकी राखको चमड़े पर रगड़ते हैं जिससे बाल गिर जाते हैं।

कर्नल चोपराके मतानुसार इसका पापड़ा सकोचक है। इसका छिलटा संधिवातमें और बिच्छूके काटने पर लाभ दायक है।

उपयोग—

आगसे जलनेपर,—खेंजड़ेके पालेको पीसकर गायके दहीमें मिलाकर लेप करनेसे अग्निसे जले हुए स्थान पर शांति मिलती है।

नख और दाँतके जहर पर—खेंजड़ा, नीमकी छाल, बड़की छाल तीनों को पीसकर लेप करनेसे नख और दाँतोंसे पहुँचे हुए जगम विषपर लाभ पहुँचता है।

प्रमेह—खेंजड़ेकी कोमल कोंपलें १ तोला लेकर उसमें ३ माशे जीरा मिलाकर बारीक पीस लेना चाहिये। उसके बाद गायका कच्चा दूध पाव भर लेकर उसमें उनको मिलाकर कपडेमें छान लेना चाहिये। फिर उसमें सफेद जासूद की जड़ आधा तोला और मिश्री २ तोला मिलाकर पी लेना चाहिये। इस प्रकार १४ दिन तक पीनेसे प्रमेह नष्ट होता है। यह योग गर्मी के अन्दर भी लाभ पहुँचाता है।

(वनौषधि गुणादर्श)

—

छिरबेल

नाम—

संस्कृत—अर्क पुष्पी, दुर्धर्षी, जल कांडका, जीवंती, क्षीरोदधि, शीतला शीतपर्णी, सूर्य वल्ली। हिन्दी—छिरवेल। बम्बई—दूदोली, सीदोरी, तुलतुली। गुजराती—खरनेर, खीरवेल, मराठी—शिरदोडी, तुलतुली, खानदोड़की। मुंडारी—अपग, सथाल—अपग, भोटो राख। तेलगू—पले फिरे। तामील—पल पुर लेटिन—Holostemma Rheedu (होलोस्टेमा रेडी)

वर्णन—

यह वनस्पति हिमालय, बरमा और कोकणमें बहुत पैदा होती है। यह एक बड़ी जाति की झाडीनुमा वेल होती है। इसके पत्ते गिलोय के समान मोटे, गोल, नोकदार और जाडे, फूल लाल और सफेद तथा सुगन्धित और उनके ऊपर छत्रो के आकारके तुर्रे रहते हैं। इसके पत्ते मोड़नेसे दूध निकलता है। इसकी डाड़ी नुकीलो होती है। इसके बीज लम्बे और पतले रहते हैं। इसकी जडें खाकी रगकी, और जडों की छाल मोटी होता है।

इसी वेलकी तरह दीखने वाली एक और दूसरी वेल होती है। जिसको विपदोड़ी, भुइ दोडी तथा लेटिनमें टायलोफोरा फेसिक्यूलेटा कहते। यह वेल बहुत जहरीली होती है। इस लिये छिरवेलके बदलेमें यह न आजाय इस की पूरी सावधानी रखनी चाहये।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिकमत—यह वनस्पति मीठी, धातु परिवर्तक, आंतों को सिकोडने वाली शीतल, मूत्रल और सूजन को नाश करने वाली होती है।

नये सुजाकमें इसकी जड़ों का काढा जीरा, मिश्री और दूधके साथ देनेसे मूत्र नलिकाकी जलन कम होती है, पेशाब अधिक होता है और सुजाक मिट जाता हैं। इसकी जडों को पीसकर उसका लेप आँखों पर करने से नेत्र रोगोंमें लाभ होता है। अनैच्छिक वीर्यश्रावमे इसकी जड़ को सुखाकर पीस कर दूध और शक्करके साथ दिनमें २ वक्त दिया जाता है।

इसके पत्तों को पीसकर और तेलमें मिलाकर गले पर बाँधनेसे गले की गठानों की जलन कम होती है। वे जल्दी पक कर फूट जातीं हैं और उनका जखम जल्दी भर जाता है।

सथाल जातिके लोग इसके काढे को खाँसी और अडकोषकी सूजनमें उपयोगमें लेते है। मुडा जातिके लोग इसको पेटके दर्दमें काममें लेते हैं।

कर्नल चोपराके मतानुसार इनकी जड़ें शीतल और धातु परिवर्तक हैं । ये आंखकी बीमारीमें काममें लीजाती हैं ।

छतिवन (सप्तपर्ण)

नाम.—

संस्कृत—सप्तपर्ण, शारद, गृहनाश, सूतिपत्र, मदगन्ध, देववृक्ष, बहुपर्ण, शाल्मलिपत्रक, गन्धपर्ण इत्यादि । हिन्दी—छतिवन, सतवन, सतोना, छातियान, शैतानका झाड़ । बंगाल—छाटीन, छतिनगाछ । गुजराती—सातवण वृक्ष, सप्तपर्ण । मराठी—सातविण । बरमा—लेटोंप, टौंगमियोक । कनाडी—एलेलेहेल, हाले, जन्त्रहेल, कोडेल, मुघोल, मुडिहाले । अंग्रेजी— Dita Bark (डिटाबार्क) । लेटिन—Alstonia Scholaris (अलस्टोनिया स्कॉलेरिस) ।

वर्णन—

यह एक बडी जाति का वृक्ष है । जो भारतवर्ष के दक्षिणी हिस्सों में और सीलोन में बहुत पैदा होता है इसकी पैदावार विशेषकर सूखे जंगलों में होती है । इसके पत्ते सेमर के पत्तोंकी तरह होते हैं । इसीसे प्राचीन जमानेमें इसका नाम सप्तच्छद रक्खा गया था । इसका दूध कड़वा होता है । इसकी छाल भूरी और खुरदरी होती है । इसके पत्ते कटी हुई किनारोंके लंबगोल ऊपर की बाजू गहरे हरे और नीचेकी बाजू फीके हरे होते हैं । इसके फूल कुछ हरापन लिए हुए सफेद रंगके रहते हैं । इसका फल लंब गोल रहता है और इसमें बीज रहता है । औषधि प्रयोग में इसकी छाल काम में आती है ।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मत से छतिवन कड़वा, कसेला, उष्णवीर्य, स्निग्ध, भूख बढानेवाला, मृदुविरेचक कृमिनाशक और दूध बढानेवाला होता है । यह हृदयरोग, दमा, धवलरोग, व्रण, रक्तविकार, त्रिदोष, अर्बुद और पुराने घावों को नष्ट करता है । दांतों की सडानमें भी यह फायदा पहुँचाता है ।

इस वृक्षकी छाल संकोचक, पौष्टिक, कृमि नाशक, धातु परिवर्तक और ज्वर नाशक है । जीर्णाति-सार या पुराने पेचिशमें भी यह लाभ दायक है । इसका दूध व्रणपर लगानेसे व्रण जल्दी भर जाता है । इसे तेलके साथ मिलाकर कानमें डालनेसे कानका दर्द मिटता है । इसके नाजुक पत्तोंको भूंजकर पानीमें पीसकर पुल्टिस बनाकर खराब फोड़ोंपर बांधनेसे फायदा होता है ।

फिलिपाईन द्वीप समूहमें यह एक बहुत ही लोक प्रिय औषधि है । वहां इसे ज्वर और पेचिशके अन्दर काममें लेते हैं । कम्बोडियामें इसकी छाल संकोचक, पेचिशको नाश करनेवाली और ऋतुस्राव-

खैरकी छाल और नीमकी अतर छाल इन सब चीजों को समानभाग लेकर कूटकर ४ तोलेकी मात्रा में लेकर ६४ तोला पानीमें औटाना चाहिये। जब आठ तोला पानी शेष रह जाय तब उसको सवेरे के टाइम में पिलाना चाहिये। जिन रोगियों को सतत विषम ज्वर रहता हो, शरीरमें से बुखार नहीं निकलता हो, उनका बुखार इस औषधिसे बिलकुल निकल जाता है।

छोटाचाँद (सर्पगंधा)

नाम—

संस्कृत—चंद्रसुरा, चंद्रिका, नाग गंधा, नकुलेष्ठा, रक्तपत्रिका, सुगंधा, सुरमा, वसुपुष्पा, विष नाशिनि, अहिलता, अतिमर्दिन, भाद्रा। हिन्दी—सर्पगंधा, छोटाचाँद, हरकइचाँद, नकुलिकंद, इसरोल। बंगाल—चंद्र, छोटाचाँद, बम्बई—चंद्र, छोटाचाँद, अमेलपोदी। बिहार, उडीसा—धान मग्वा, धान बरुआ। कनाडी—चंद्रिका, गरुड पाटला, शिवनामि, सूत्रनाभि। मराठी—मूँगसावेल, सर्पसंधा,। मुंडारि—नागवेल। तामील—सोग्रन्नमिलबोरी। तलगू—दुम परसन्, पाटलगंधि, पाटला गरुड। लेटिन—Rauwolfia Serpentina (रौलफिया सर्पेंटिना)।

वर्णन—

यह वनस्पति हिमालयमें सरहिन्दसे पूर्वकी तरफ बरमा, अंडमान, कोकण, उत्तरी केनेड़ा, मद्रास, सीलोन और जावामें होती है। मैदानोंमें मुरादाबादसे सिकिम तक ४००० फीटकी ऊंचाई तक पाई जाती है। दक्षिणी घाटमें ट्रावनकोरसे सीलोन तक और उत्तरी बिहार, पटना और भागलपुरके जंगलोंमें पैदा होती है। यह एक प्रकारकी पराश्रयी झाडी नुमा लता है। इसकी छाल फीके रंगकी होती है। इसके पत्ते ७½ से १८ सेंटि मीटर तक लम्बे और २-५ से ६-३ सेंटी मीटर तक चौडे होते हैं। ये बरछी आकारके तीखी नोक वाले रहते हैं। ये ऊपरकी बाजू तेज चमकीले और नीचेकी बाजू फीके हरे होते हैं। इनमें ८ से लगाकर १० तक नसें रहती हैं। इसके फूल सफेद रहते हैं। इन फूलोंकी किनारों पर हलका आसमानी रंग रहता है। इसका फल पकने पर बैंगनी या काले रंगका हो जाता है।

गुण, दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मतसे इसकी जड कडवी, कसेली, गरम, तेज और चरपरी होती है। यह कृमिनाशक, त्रिदोषमें फायदा पहुँचाने वाली और सर्प तथा बिच्छूके विषको नष्ट करने वाली होती है।

भारतवर्ष और मलाया प्रायःद्वीपके अन्दर बहुत पुराने समयसे इसकी जडें जहरीले सर्प तथा जहरीले कीटाणुओंके विष पर उपयोगमें ली जाती हैं। इसे बहुतसे स्थानों पर ज्वरनिवारक वस्तुकी

तौर पर भी काममें लेते हैं। यह गर्भाशय की सिकुड़न को उत्तेजित करती है और गर्भस्थ सन्तानको बाहर निकाल देती है।

सर्पगन्धा और पागल पन—

आधुनिक युगमें नवीन खोजोंके अन्दर इस वनस्पतिमें एक और बहुत महत्व पूर्ण गुणका पता लगा है। निद्रानाश, वहम और पागलपनके लिये यह एक बहुत उपयोगी दवा साबित हुई है। यद्यपि इसके इन गुणोंका पता प्राचीन औषधि ग्रन्थोंमें नहीं है फिरभी विहारके रहनेवाले गरीब लोग इन गुणोंको बहुत समय पहिलेसेही जाने हुए हैं। वहा पर छोटे बच्चोंको सुलानेके लिये इस औषधिका उपयोग अब भी किया जाता है। संयुक्त प्रांत और विहारमें यह दवा पागलपनकी दवाके नामसे वेची जाती है। इसका उपयोग देशी वैद्योंमें अब भी सर्व सामान्य रूपसे किया जाता है। यह औषधि कितनी लोकप्रिय है, इसका अन्दाज इसी बातसे किया जाता है कि सिर्फ विहारमें ही यह प्रति वर्ष कई मनों की तादादमें वेची जाती है।

रासायनिक विश्लेषण—

देशी औषधियोंमें इसकी तारीफ अधिक होनेके कारण कई लोगोंने इसके रासायनिक तत्वोंके विषयमें जॉच पड़ताल की। सन् १६३१ में सेन और बोसने इसकी जड़में २ उपक्षार पाये। ये उपक्षार इसमें काफी तादाद में पाये जाते हैं। इनका अनुपात सूखी जडोंमें १ प्रतिशत रहता है। इसके अतिरिक्त इसकी जड़ोंमें रेजिन, पोटेशियम—कारबोनेट, फासफेट सिलिसेट, लोहा और मेगनेशिया भी पाये जाते हैं।

एस. सिदीकी और आर. एच. सिद्दिकीने सन् १६३१ में इसमें ५ नये उपक्षार पाये। इन पांचों ही उपक्षारोंके नीचे लिखे हुए ५ नाम रक्खे—

(१) अजमे लाइन—यह ·१ प्रतिशत पाया जाता है।
(२) अजमेली नाइन—यह ·०५ प्रतिशत पाया जाता है।
(३) अजमेलो साइन—यह ·०२ प्रतिशत पाया जाता है।
(४) सर्पेंटाइन—यह ·०८ प्रतिशत पाया जाता है।
(५) सर्पेंटिनाइन—यह ·०८ प्रतिशत पाया जाता है।

कलकत्ता स्कूल ऑफ ट्रॉपिकल मेडिसिन और हाइजिनके रसायन विभागमें इसके परीक्षण चल रहे हैं। सिर्फ एकही उपक्षार अभीतक प्रथक् किया गया है। यह अलकोहल ईथर, क्लोरोफार्म और बेन्भिल में घुल जाता है, मगर गरम पानीमें बहुत कम घुलता है। इसका हाइड्रोक्लोराइड ठडे पानीमें अच्छी तरह घुल जाता है।

सिद्दिक और सीदिकीने इसके क्रिया शील तत्वोंका अध्ययन करके जाहिर किया है कि इसमें पाये

जाने वाले सफेद और पीले दोनों प्रकारके तत्वोंके भिन्न २ गुण हैं। अजमेलाइन वर्गके तीनों सफेद तत्व हृदयके ऊपर अवसन्नताकारक प्रभाव डालते हैं। ये श्वास प्रश्वास की क्रिया और स्नायु मंडलपर भी अपना प्रभाव डालते हैं। दूसरे सर्पेंटाइनवर्गके पीले तत्व हृदयपर तो उत्तेजक प्रभाव डालते हैं किन्तु स्नायुमंडल और श्वासोच्छ्वास की क्रियापर निष्क्रियताका प्रभाव डालते हैं। ये परिणाम मेंढकोंके ऊपर इसको अजमाकर निकाले गये हैं। यह निश्चय पूर्वक नहीं कहा जा सकता कि मनुष्योंके ऊपर भी इसके इसी किस्मके प्रभाव नजर आवेंगे या नहीं।

सेन और बोसने बड़ी जातिके प्राणियों पर भी इसके परीक्षण किये। उन्होंने इसे बिल्लियों परभी अजमाया। वे इस निर्णयपर पहुँचे कि इस सारी वनस्पतिके जलीय तत्व जो प्राणियोंके शरीरमें पहुँचाये गये, उनका कोई चमत्कारिक प्रभाव नजर नहीं आया। इसके रेजिन्सको अलग करके उनकोभी अजमाया गया किन्तु इनका भी कोई विशेष प्रभाव नजर नहीं आया। सिर्फ गर्भाशयके मज्जाओंको कुछ उत्तेजना पहुँची। इसके उपक्षारोंकी परीक्षाकी गई और इनका निश्चित असर पायागया। इनसे रक्तभार (Blood pressure) कुछ गिरा हुआ दिखलाई दिया और श्वासोच्छ्वासकी क्रिया उत्तेजित पाई गई।

हृदयके मज्जातंतुभी इनसे कुछ अवसन्न होगये और छोटी आंत तथा गर्भाशयमें कुछ ढीलापन पाया गया। यह वनस्पति मुँहसे ली जानेपर या इन्जेक्शनके द्वारा पहुँचाई जानेपर कोई नुकसान नहीं पहुँचाती। रायने सन् १६३१ में यह बात सिद्ध की कि मामूली खुराकमें ली जानेपर यह कुछ भी नुकसान नहीं पहुँचाती। अगर खुराक अधिक मात्रामें ली जावे तो गहरी नींद आती है। धीरे २ चैतन्यता कम होती जाती है और श्वास क्रियाके निष्क्रिय बनजानेपर मृत्युतक हो सकती है।

इस वनस्पतिको बहुत पुराने समयसे पागलपनकी दवा मानते हैं। सेन और बोसने इस वनस्पतिको मानसिक विकृतिके रोगियोंपर और जिनका रक्तभार अधिक था ऐसे लोगोंपर अजमाया। इसकी पीसी हुई जड़को दिनमें दो बार २० से ३० ग्रेनतककी मात्रामें देनेसे न केवल शांतिदायक असर ही होता है किन्तु रक्तभार भी घट जाता है। एक सप्ताह के अन्दर ही बीमार का दिमाग ठीक हो जाता है। बहुत से केसों में समय अधिक लगता है। हाय ब्लडप्रेशर में भी इन लोगोंने इस औषधिको संतोष जनक पाया। खास करके फेफड़ोंकी तकलीफ जिसमें मौजूद है और हृदयके तंतुओंमें कुछ फोड़े पाये जाते हों, यह विशेष लाभदायक है। ज्वरमें भी इसकी उपयोगिता बतलाई जाती है। किन्तु अभी तक इस विषयमें जोरदार प्रमाण नहीं मिले हैं। सूतिका ज्वरमें भी इसकी तारीफ की जाती हैं किन्तु इस विषयमें भी इसे अजमानेकी जरूरत है।

अभीतक जो प्रमाण उपलब्ध है उनके आधार पर यह कहा जा सकता है कि पागलपनमें स्नायुमंडलकी जलनमें और हाय ब्लड प्रेशरमें यह एक चमत्कारिक औषधि है।

डिपार्टमेंट ऑफ फारमेकेलाजी स्कूल ऑफ ट्रापिकल मेडिसिनमें इस औषधिके और भी परीक्षण चल रहे हैं और इसके लिये और भी परिणाम निकलनेकी शीघ्र ही संभावना है।

छोटातरोदा (मींढीआँवल)

नाम—

संस्कृत—भूम्यावर्तकी, भूतलपोटा, भूम्याहुली । हिन्दी—छोटातरोदा, जगलीसोनामुखी । गुजराती—मींढीआँवल, सूरतीसोना मुखी । मराठी—भुइंतरवड़, तामील—तिलवरे, कटुतिलवरे । तेलगू—नेलबोना, नेलतंगेदू, सुन्नमुखी । अंग्रेजी—Country Senna (कन्ट्रीसेना) । लेटिन—Cassia Abovata (केसिया एबोवेटा) ।

वर्णन—

यह बहु वर्षायु क्षुप पजाब, सिंध, गुजरात और दक्षिण में पैदा होता है । यह वनस्पति बहु वर्ष स्थायी और फैलनेवाली होती है । इसका वृक्ष ३० से लगाकर ६० सेटिमीटर तक ऊँचा होता है । इसका तना फिसलना और फीके हरे रंगका रहता है । इसके पत्ते ५ से लगाकर १० सेंटिमीटर तक लबे रहते हैं । ये लबगोल और फीके हरे रगके होते हैं । इनके पीछे बहुत रुए रहते है । इसके फूल पत्तो की अपेक्षा छोटे, फली अर्ध चद्राकार, पतली और गोल होती है । इसमें ६ से लगाकर १२ तक बीज होते है । ये चमकीले और गहरे बादामी रङ्ग के होते हैं ।

गुण, दोष और प्रभाव—

इस बनस्पति का उपयोग और गुण धर्म बिलकुल सनायकी तरह होता है ।

कर्नल चोपराके मतानुसार इसमें आक्सिमेथिल, और एंथाक्विनोन्स नामक तत्व पाये जाते है ।

छोटाकूट

नाम—

बंगाल—छोटोकूट, मुयामुया । मुंडारि—हुरिगंदमे लेटिन—Sagittaria Sagittifolia (सेगिटेरिया सेगटि फोलिया) ।

वर्णन—

यह वनस्पति हिन्दुस्तानके सभी मैदानों में पैदा होती है । इसके पत्ते बहुत, कोमल, मुलायम और

तीखी नोक वाले होते हैं। ये ९ से लेकर २० सेंटिमीटर तक लंबे होते हैं। इसके फूल अक्सर सफेद होते हैं। ये गुच्छोंमें लगते हैं। फूलोंकी पंखडियाँ लबी और गुलाइ लिये हुए होती हैं। इसकी मंजरी लब गोल होती है।

गुण दोष और प्रभाव—

यह औषधि प्रसूति कालके पश्चात् गर्भाशय से जो श्राव होता है उसे उत्तेजित करनेके काममें ली जाती है। चर्मरोगोंमें और जरोयुके फूल की रुकावटके लिये भी इसका उपयोग किया जाता है।

छोटा जंगली अञ्जीर

नाम—

हिन्दी—छोटा जगली अञ्जीर । तामील—चिरियापेटी तेलगू—चिनवेरीपाडु । लेटिन—Ficus Ribes (फायकस रिबेस)।

वर्णन—

यह अञ्जीर की एक जाति होती है। इसके पत्ते लम्ब गोल, फिसलने और कुछ रुएँदार होते हैं।

गुण दोष और—प्रभाव

इस औषधि के गुण धर्म सब काठ गूलरके गुण धर्म ही की तरह होते हैं। काठ गूलरका गुण धर्म इस ग्रंथके दूसरे भागमें देदिया गया है।

ज़काल

नान—

यूनानी—जकाल।

वर्णन—

यह एक बड़े झाड का फल होता है। इसकी शक्ल करोंदे की तरह होती है। कई लोगोंने इसको करोंदा ही माना है। मगर कई लोग इसको जरेशककी एक जाति मानते हैं।

गुण, दोष और प्रभाव—

यूनानी मत से यह दूसरे दर्जे के आखिरमे सर्द और खुश्क है। यह कब्जियत करता है, दस्तोंको रोकता है, आँखोंको ताकत देता है, प्यासको बुझाता है, मेदे और जिगरकी तकलीफको दूर करता है, खून और पित्तके उफान को शान्त करता है। इसके पत्तोंकी राख बदन पर लगानेसे बदनके दाग मिटते हैं।

बगदादी हकीमोंके मतानुसार यह काबिज नहीं है। यह दस्तको ढीला करता है। प्यास और बेचेनीको फौरन मिटाता है। इसके गुण जरे शकसे मिलते हुए हैं।

जख्मेहयात (हेमसागर)

नाम—

संस्कृत—पर्णबीज, हेमसागर। हिन्दी—जखमहयात, अहिरावण, महीरावण। बंगाल—कोपाटा। कनाडी—काडूसले। तेलगू—सिमाजमुदु। मराठी—घायमारी। द्राविडी—मलैकल्ली। फारसी—जखमहयात। लेटिन—Bryophyllum Calycinum (ब्रायो फिलम कलसीनम)।

वर्णन—

यह बहु वर्षायु मांसल क्षुप विशेष रूपसे दक्षिणी बंगालमें और साधारण रूपसे सारे भारतवर्षमें पैदा होता है। इसका पिंड सीधा, मोटा और पोला, पत्ते किनारेदार, आमने सामने लगे हुए और फूल बड़े होते हैं। इसकी डालियाँ जहाँ पृथ्वी को छूती है वहीं बीज गिरकर झाड़ खडे हो जाते हैं।

गुण, दोष और प्रभाव—

यह वनस्पति व्रणशोधक, व्रणरोपक और रक्त सग्राहक होती है। यह एक दिव्य औषधि है। इसके रसकी क्रिया बारीक धमनियों पर होती है। इससे धमनियों का संकोचन होकर उनसे बहने वाला रक्त बन्द हो जाता है। फिर वह रक्त चाहे त्वचा के रस्ते मे निकलता हो, चाहे दस्तके, चाहे बवासीरके और चाहे नाक या मुहके रास्तेसे गिरता हो।

रक्त मिश्रित अतिसारके अन्दर इसके पत्तोंका रस ३ माशा, जीरा २ माशा और घी ६ माशा मिलाकर देनेसे दस्तोंसे खूनका गिरना बंद हो जाता है और आँतों को उत्तेजना मिलती है। चोट, मोच, रगड, जखम और व्रणके ऊपर इसके पत्तोंको जरा कूटकर गरम करके बाँधनेमे सूजन, लाली

और वेदना कम हो जाती है और घाव जल्दी अच्छा हो जाता है। दूसरी चिकित्सा की अपेक्षा इसके पत्तोंको जखम पर बाँधनेसे बहुत जल्दी लाभ होता है। नये जखमों पर तो इसके मुकाबिले की कोई दूसरी औषधि नहीं है। हर एक जख़म इतना आसानीसे और इतना जल्दी भरता है कि उसका निशान भी सहसा नजर नहीं आता।

उपयोग—

नेत्ररोग—इसके ताजा पानी में काला सुरमा तीन रोज खरल करके आँखों में आँजने से नेत्र पीडा शान्त होती है।

हैजा—इस बूंटी को पीसकर पिलाने से हैजे में लाभ होता है।

बवासीर—(१) काली मिर्च के साथ इस बूटी कों पीसकर पिलाने से खूनी और बादी बवासीर मे लाभ होता है।

(२) इसकी छोटी जातिके पत्तोंको छायामें सुखाकर पीसलें। रातमें सोते समय सात तोला गुड खाकर सो जांय। सबेरे इसके चूर्णको हथेली भरकर ठण्डे पानीके साथ खालें। इस प्रकार सात दिनतक सेवन करनेसे बवासीरके मस्से मुरझा कर हमेंशाके लिए आराम हो जाते हैं। दवा लेते समय खटाई और बादीकी चीजोंसे परहेज करें।

मूत्रावरोध—इस बनस्पतिको काली मिरचके साथ पीसकर पिलानेसे, सुजाकका जखम, पेशाबकी जलन और मूत्रावरोध दूर हो जाते हैं।

कुष्ठ और उपदश—पहले कोई उत्तम जुलाबसे कोठा साफ करके बादमें इस बनस्पतिको काली मिरचके साथ चालीस दिनोंतक पिलानेसे कुष्ठ और उपदशके घाव अच्छे हो जाते हैं।

चर्मरोग—इसके पत्तोंको गरम करके चोटपर बांधनेसे सूजन उतर जाती है। जखमपर बाँधनेसे जखम भर जाता है। इसके पत्तोंका लेप करनेसे बिगड़े हुए फोड़े आराम होजाते हैं, और चमडे का रग बदलना बन्द हो जाता है। मोच खाई हुई और आगसे जलीहुई जगहोंपर भी इसका लेप लाभदायक हैं।

जंगली अंगूर

नाम—

हिन्दी—जगली अगूर, आमधुक, बगाल—अमोलुक, अधउका। मराठी—कोलेमान, राणद्राक्ष

कोकण—पालकद, मलयालम—सेपरवल्लि। तामील—सावरवल्लि। तेलगू—साँवरवल्लि। कनाडी—निरालीनांदी, लेटिन—Vitis Indica व्हिटिस इण्डिका।

वर्णन—

यह एक बडी वेल होती है। इसके पत्ते और फल अगूरकी तरह होते हैं। इसकी जड बहुवर्षायु और कंदमय होती है। इसके फूल हरे और वैंगनी रंगके होते हैं।

गुणदोष और प्रभावः—

यह बनस्पति भेदक, मूत्रल और शोधक होती है। इसका काढा बच्चोंका रक्त शुद्ध करनेके लिये दिया जाता है। इसकी जड़का रस नारियलके गूदेके साथमें मृदु विरेचक वस्तुकी तौरपर काममें लिया जाता है। यह ग्रथिरसोंको निर्विकार वनाता है।

कंबोडियामें इसकी जड़ें सीनेके रोगोंको दूर करने वाली और मूत्रल मानी जाती हैं। इन्हे श्वास-नलियोंके प्रदाहमे और सुजाकमें काममें लेते हैं।

जंगली बादाम

नाम—

हिन्दी—जगली बादाम। बबई—जगलीबादाम, पन। ब्रम्हा—लेत कोक, शाव्यू, शोब्ज। कनाड़ी—भाटला, फटैली, गोल निकई, जेनुकइ तिइली, कडुरेगोष्ठु, पेनारी। गोवा—जगली बादाम, विरोही। कोकण—कनवेम रुक, विरोइ। मलायलम—पोटक वलम। मराठी—गोलदारू, जंगली बादाम, नगलकुड़ा। तेगेलाग कलोंमपन, कलुपग, कलुमपंग। तामील—अरली, कुदिरइ पिडुकु, मलई, तेंगई, पिनारी, पुदगर, पन वतई तेलगू—गुट्ट पू बदाम, मु जि पोनाकु, पियाती पोनाकू। तुलूपिनारी। लेटिन—Sterculia Foetida (स्टेर क्यूलिया फोइटिडा)

वर्णन—

यह बनस्पति कोकण, मद्रास प्रांतके समुद्री किनारे पर और मलाया प्रायः द्वीपमें पैदा होती है। यह एक बड़ी जातिका वृक्ष है। इसकी छाल सफेद, लकडी खाकी, पत्ते गुच्छा, फूल लाल और पीले, बीजकोष लबा और पकने पर चमकीला लाल रंगका होता है। प्रत्येक बीज कोषमें १० से १५ तक बीज रहते हैं। औषधि प्रयोगमें इसकी छाल और इसका तेल काममें आता है। इसके बीजोंमें ४० प्रतिशत तेल रहता है।

गुण दोष और प्रभाव—

इसकी छाल पसीना लानेवाली, मूत्रल और विरेचक होती है। यह आमवात और उदर रोगोंमें उपयोगी मानी जाती है। इसके बीजोंसे निकाला हुआ तेल साधारण मृदुविरचेक होता है। यह पेटके आफरेको दूर करने वाला और शांतिदायक होता है। अगर इसके बीज असावधानीसे निगले जायँ तो वमन और सिरमें चक्कर पैदा करते हैं।

जावामें इसका फल सुजाकमें उपयोगी माना जाता है।

कर्नल चोपराके मतानुसार यह मृदुविरेचक, पसीना लानेवाली और मूत्रल है।

—

जंगली अरंडी

नाम—

हिन्दी—जंगली एरंडी, उदर बीबी। संस्कृत—निकुम्भा। बंगाल—लाल भेरड। बंबई—जंगली एरंडी, उदर बीबी। तामील—अदलई, कटमनाकु, दुलिया मनाकु। तेलगू—नेलमिदि। कनाड़ी—करितरू, तोतला बिदर। मलयालम—अतला, नाकदन्ती। फारसी—बेदी अंजीरा। उर्दू—जंगली एरंड। लेटिन—Jatropha Glandulifera (जेट्रोफा ग्लेन्ड्यूलिफेरा)

वर्णन

यह वनस्पति दक्षिणमें तथा कलकत्तामें पैदा होती है। इसका झाड अरंडीकी तरह ही होता है। इसके पत्ते लाल रंगके होते हैं। इसके फूल हरे पीले और फली १·३ सेन्टिमीटर लम्बी, गोल, फिसलनी और बीज काले तथा चमकीले होते हैं।

गुण, दोष और प्रभाव—

इसके पत्ते ऋतुस्राव नियामक, वेदना शून्यता पैदा करने वाले और खराब स्वाद वाले होते हैं। इसकी जड बवासीरमें लाभदायक है, इसके पत्ते बिच्छूके काटने पर लगाये जाते हैं और तत्काल असर करते हैं। ये प्रदाह, दमा, वायुनलियों का प्रदाह, कटिवात और पक्षाघातमें भी लाभ पहुँचाते है। इसके बीज विरेचक होते हैं।

इसकी जड़को पानीके साथ पीसकर देनेसे बच्चोंका बढा हुआ पेट जुलाब लगकर हलका हो जाता है और ग्रन्थियोंकी सूजन कम हो जाती है

इस वनस्पति का रस आँखोंकी बीमारी में भी लाभदायक है इसके प्रयोगसे आँखोंमें कीचड़का आना भी बन्द हो जाता है।

इसके बीजोंमें पाया जाने वाला स्थायी तेल विरेचक गुण वाला होता है। इसको मज्जाओंके व्रण पर, दुष्ट घावों पर, दाद पर, संधिवात पर और पक्षाघात पर लगाने क काममें लेते हैं।

कर्नल चोपराके मतानुसार यह वनस्पति विरेचक है और इसे पुराने व्रण पर लगाने के काम में लेते हैं।

जंगली अखरोट

नाम—

हिन्दी—जंगली अखरोट, अपोला। मराठी—जगली अक्रोड। बगाल—अकोला, जगली अक्रोट। बम्बई—अक्रोट, जगली अक्रोट। कनाडी—नाटक्रोड। तामील—तेलगू—नाट्ट अखरोट्ट। लेटिन—Aleurites Moluceana (अलेरिटस मोल्यूसीएना)।

वर्णन—

यह एक अखरोटकी जातिका बडा वृक्ष होता है। इसके झाडोकी कर्नाटकमें खेतीकी जाती है। इसके पत्ते गोल और बरछी आकार के होते हैं। ये ७ ५ से १५ सेंटिमीटर तक लम्बे और ६-३ से ७ ५ सेटीमीटर तक चौडे होते हैं। इसके फूल सफेद रहते हैं। इसका फल अखरोटकी तरह ही लम्बगोल, सख्त और मोटा रहता है। हर एक फलमें १ या २ बीज रहते है।

गुण, दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिकमत से इसका फल मीठा, तूरा, शीतल, कामदीपक और पौष्टिक होता है। यह भूख को बढाता है, बातको नष्ट करता है; हृदय रोग और जलन में उपयोगी है, यह कफ और पित्तको बढाता और कब्जियत पैदा करता है। इसके फलका मग़ज पौष्टिक, तेल विरेचक और फलोंकी छाल स्तम्भक होती है।

यूनानीमत—यूनानीमतसे यह पौष्टिक, कामोद्दीपक, पेटके आफरेको दूर करने वाला और कफ निस्सारक है। दिमाग, हृदय और यकृतके लिये यह लाभदायक है। वायु नलियोंके प्रदाह, बवासीर, आँखसे पानीका निकलना, पागल कुत्तेका विष, रगड़न तथा दादमें यह मुफीद है। इसका तेल कामोद्दीपक तथा हृदयको पुष्ट करनेवाला होता है। इसके बीजोंसे प्राप्त किया हुआ तेल १से २ औंस तक

की मात्रामें एक नरम और निश्चित विरेचक है। इससे ३ से लेकर ६ घण्टेके अन्दर दस्त शुरू हो जाती है। इसके प्रभावकी निश्चिततामें यह अरंडीके तेलसे मिलता जुलता है। किन्तु यह अरंडीके तेलसे कई बातोंमें उत्तम है। यह दुर्गन्ध पूर्ण और बदजायका नहीं होता और इसके विरेचनमें वमनकी प्रवृत्ति नहीं होती।

जंगली झाउ

नाम—

हिन्दी—जंगली झाउ, जगली सरू, विलायती सरू। बंबई—सरोकाझाड़,विलायती सरो। बगाल-झाऊ। मराठी—जगली सरू, सरोवा, सारपूला, सुरु। मैसूर—कसेरिकी। तामील—सिववर्सी, सडकू। लेटिन—Casuarina Equisetifolia (केसुरिन इक्किसेटिफोलिया)।

वर्णन—

यह वनस्पति बगालकी खाडीके पूर्वमें चिटगावसे दक्षिणके तरफ होती है। यह एक सुन्दर वृक्ष होता है। इसकी शाखाएं सीधी और सुन्दर होती हैं। यह झाड़ बहुत नाजुक रहता है।

गुण, दोष और प्रभाव—

कर्नल चोंपराके मतानुसार इसकी छाल और लकडी पुराने अतिसार और पेचिशमें लाभदायक होती है। इसके पत्ते उदर शूलमें काममें आते हैं। इनमें केसूरिना नामक तत्व पाया जाता है।
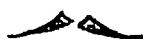
जंगली गाजर

नाम—

हिन्दी, मराठी—जगली गाजर। सिंध—लुनुक। तेलगू—बुदाकेरू। लैटिन—Portulaca Tuberosa (पोर्चुलेका ट्युबरोसा)।

वर्णन—

यह वनस्पति सिंध, गुजरात, कर्नाटिक और ट्रावनकोरके खुश्क भागोंमें पैदा होती है। इसकी जड़ गाजरके समान मोटी रहती है।

गुण दोष और प्रभाव,—

मुरेके मतानुसार इसके ताजे पत्ते विसर्प रोग और मूत्र रोगोंमें लाभदायक हैं।

जंगली सूरण (मदन मस्त)

नाम—

संस्कृत—अरण्य सूरण, वज्रकंद। हिन्दी—मदनमस्त, जंगली सूरण। लेटिन—AmorphoPhallus Sylvetious (एमोर्फोफेलस सिलवेरिकस)।

वर्णन—

यह सूरणकी एक जंगली जाति है। इसकी छाल निकालकर उसके टुकडे करके उनको डोरीमें पिरोकर मदन मस्तके नामसे बेचा जाता है। ये टुकडे खाकी रंगके होते हैं और पानीमें डालनेसे फूलकर नरम हो जाते हैं। इनका स्वाद कुछ कडवा और तीखा होता है।

गुण, दोष और प्रभाव—

यह वस्तु अत्यंत वाजिकरण और कामोद्दीपक होती है। इसकी २० से लेकर ३० रत्ती तक की मात्रा दूध और शक्करके साथ देनेसे मूत्र मार्गमें बहुत उत्तेजना होती है। कामेंद्रियमें खुजली छूटती है और उसमें बहुत जोरसे उद्दीपन होता है। इस वस्तुके साथ चिकने और पौष्टिक पदार्थ पथ्यमें खानेको देना चाहिये नहीं तो कभी २ बडा त्रास होता है। सुजाक, पथरी, उपदंश इत्यादि मूत्रपिंडके रोगियों को यह औषधि नहीं देना चाहिये।

कोंकणमें इसके बीजोंको पानीके साथ पीसकर वार २ ग्रन्थियोंके बढने पर लगानेके काममें लेते हैं। चोपराके मतानुसार यह दंत रोग और ग्रन्थियोंके बढने पर काममें ली जाती हैं।

एक और जगली सूरनकी जाति जिसे मराठीमें बक्रमूत, गोआ में उजोमूत और लेटिन में Synantherias Sylvatica कहते हैं, होती है। यह तिक्त, कृमि नाशक और गरम होती है। देशी वैद्य इसके कुचले हुए बीजोंको दांतोकी पीडा दूर करने के लिये रुइमें रखकर पोले दांतमे भर देते हैं इस वनस्पतिसे स्नायु सम्बन्धी पीडा तत्काल शान्त हो जाती है। इसी पीडा नाशक गुणके कारण यह रगड या मोच लगने पर वाह्य उपचारमें भी काममें ली जाती है।

जंगली हलदी

नाम—

संस्कृत—वन हरिद्रा। हिन्दी—जंगली हल्दी, वन हल्दी। बंगाल—बनहल्द। बम्बई—कोंचीन हलद, जगली हलद। मराठी—वेठी हलद, राण हलद। तामील—कस्तूरी मंजल। तेलगू—कस्तूरी पसुपु। लेटिन—Curcuma Aromatica (करक्यूमा एरोमेटिका)*

वर्णन—

यह हल्दी ही की जातिका एक क्षुप होता है इसके क्षुप प्राय. जगलोंमें लगते हैं। कोचीन और मेसूर प्रांतमें यह बहुत पैदा होता हैं। इसके पत्ते कोमल होते हैं। बरसात के पूर्व इसके नवीन पत्ते फूटते हैं और उनके साथही फूल आते हैं। इसकी जड़की गठाने खाद और पानी देने पर मुट्ठी के बराबर मोटी हो जाती हैं। इसकी साधारण मध्यमश्रेणी की गठान अण्डाकृति और २ इंच से अधिक मोटी होती है। इस गठान के आसपास बहुतसी पतली जडें भी रहती हैं। जो नारंगी रगकी होती हैं। मुख्य गठान का भीतरी हिस्सा हलदीके समान गहरे नारंगी रंगका होता है। इसकी खुशबू हलदी की अपेक्षा अधिक उग्र और कपूरकी तरह होती है।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदके मतसे वन हलदी रुचिकारक, कड़वी, अग्नि दीपक तथा कुष्ट और रक्तवातको नष्ट करने वाली है।

सर्प विषके अन्दर इसको कूट, अपामार्ग और मेंसिलके साथ देनेसे लाभ होता है। विस्फोटक, खुजली, मोच, सूजन, इत्यादि पर इसका लेप किया जाता है। यह शक्तिदायक और शान्तिदायक भी मानी जाती है।

कोकण के अन्दर विस्फोटक ज्वरके फोडे फुन्सियों पर इसका लेप किया जाता है। चोट और रगड़ पर भी दूसरे सकोचक द्रव्यों के साथ इसको लगाया जाता है। गीली खुजली पर और माताके दानों पर भी इसका लेप किया जाता है।

मुसलमान हकीम सर्पदंशके कुछ निश्चित केसों में इस बनस्पति को एक बहुमूल्य औषधि मानते हैं।

केस और महस्कर के मतानुसार यह वनस्पति सर्पदश में उपयोगी नहीं है।

---

*नोट—इस ग्रन्थके पहले भागमें आंबी हल्दी के प्रकरण में आंबीहलदी का लेटिन नाम करक्यूमा एरोमेटिका छप गया है। उस जगह करक्यूमा एमेडा पढना चाहिए। करक्यूमा एमेडा आंबीहलदी को और करक्यूमा एरोमेटिका जगली हलदी को कहते हैं।

जंगली अदरख

नाम—

नाम— सस्कृत—वनार्द्रकम् , पेऊ, अरण्याद्रका । हिन्दी–जगली अद्रक, बन आदा । गुजराती—वन आदू । मराठी—रान आलें, मालाबारी हलद । पजाब—जंगली अदरक । तेलगू—करपुप्पू । लेटिन–Gingibar Cassumunar (झिंझीबार केस्यूमनर) ।

वर्णन—

जगली अदरक का पौधा बडे कुलिंजन के पौधे की तरह होता है पर इसके पत्ते उससे बडे होते हैं। इसकी गठानें अदरक या हलदी की गठानों के समान होती हैं। इसमें कपूर के समान तीव्र गध आती है। इसका स्वाद चरपरा और कुछ कड़वा होता है परन्तु सूख जाने पर ये सब बातें कम हो जाती हैं। यह असाढ सावन में फूलता है और कातिक अगहन में फलता है।

गुण दोष और प्रभाव—

कोकण के वैद्य इस वनस्पति को सर्पविष को दूर करने के प्रयोग में लेते हैं। थोडी २ देरके अन्दर वे कई दफे इसे पेट में पिलाते हैं और दशस्थान पर लगाते हैं। पुराने चर्मरोगों मे इसको अरींठे और गोमूत्र के साथ उबालकर लगाते हैं और उसके बाद स्नान करवा देते हैं। इस लेप को आखों के अन्दर जानेसे बचाया जाता है। कॉलिक उदरशूल और अतिसारके अन्दर भी इसका उपयोग किया जाता है।

स्त्रियों का आवेश रोग मिटाने के लिए इसके रस में नमक मिलकार पिलाना चाहिये। शरीर का अगर कोई अग संज्ञाशून्य होजाय तो उसपर काली मिरच के साथ इसका लेप करना चाहिये। पेट का अफारा मिटाने के लिए इसके कद को भोबल में भूनकर छीलकर नमकके साथ खिलाना चाहिये। धनिये के साथ इसका क्वाथ बनाकर पिलाने से अतिसार मिटता है। इसके रसमें गुड मिलाकर सुंघाने से अपस्मार रोग मिटता है।

जंगली जायफल

नाम—

हिन्दी यूनानी—जंगली जायफल। मराठी—रान जायफल। सस्कृत—कामुक, मलाटी। तामील—कट्टुचेदी । मलायलम—पनम पक्क । लेटिन— Myristica Malabarica (मिरिस्टिका मलाबारिका) ।

जङ्गली जायफल का वृक्ष कोकण कर्नाटक और उत्तरी मलाबार में पैदा होता है। इसके फल को जंगली जायफल, रामफल के नामों से पहिचानते हैं। इसीप्रकार इसकी पत्तियों को रामपत्री या बम्बई की जायपत्री कहते हैं। जंगली जायफल दूसरे जायफल की अपेक्षा लम्बा और मोटा होता है। असली जायफल की अपेक्षा इसमें सुगन्धि और तेल थोड़ा पाया जाता है। इसकी जायपत्री पीलापन लिए हुए लालरंग की होती है। इसमें असली जायपत्री की अपेक्षा खुशबू और स्वाद की कमी रहती है।

गुण दोष और प्रभाव—

जंगली जायफलके साधारण गुण असली जायफलकी तरह मगर उनसे कुछ हलके दर्जेके होते हैं। इसके तेल की मालिश करने से गठिया मिटता है। इसको पीसकर लेप करनेसे बादीका दर्द मिटता है। इसको भूनकर पीसकर दिनमें २।३ बार देने से आव के दस्त बंद हो जाते हैं। इसको पीसकर शहदमें चाटने से नींद आ जाती है।

जंगली प्याज

इस वनस्पतिका वर्णन कोलीकाँदाके प्रकरणमें अन्दर इस ग्रंथके दूसरे भागमें देखिये।

जंगली मदनमस्त

नाम—

हिन्दी—जंगली मदन मस्त, मलयालम—तोंटमरम। तामील—पइन्दु। लेटिनः—Cycas Rumphii साइकास रफी Cy Cas Circinalis साइकास सिरसीनेलिस।

विवरण.—यह एक हमेशा हरा रहनेवाला खजूरकी भान्तिका वृक्ष होता है। इसके पत्ते वृक्षके सिरे पर ही लगते हैं। ये १५ से लगाकर २५ से० मी० तक लम्बे होते हैं। इसका फल लंब गोल होता है। इसका आकार मुर्गीके अण्डे सरीखा होता है। यह रङ्गमें नारङ्गी पीला होता है।

उत्पत्तिस्थानः—यह ब्रह्मा, मलाया प्रायद्वीप, अण्डमान और निकोबा में होता है। इसे भारतके बगीचोंमें भी बोते हैं यह मोरक्का, न्यूगायना और उत्तरी आस्ट्रेलियामें पैदा भी होता है।

गुण, दोष और प्रभाव—

गु० दे० प्रभाव.—कुर्जके मतानुसार इसका गोंद दुष्ट व्रणोंपर लगाया जाता है इससे बहुत कम समय में ही मवाद पैदा हो जाता है।

कम्बोडियामें इसकी गठानोंको पानीके या चावलके पानीके साथ पीसकर फोड़ोंपर, सूजी हुई ग्रन्थियोंपर और व्रण वाले घावपर लगाते हैं।

कर्नल चौपराके मतानुसार यह उत्तेजक कामोद्दीपक और निद्रा लानेवाला होता है। इसमें ग्लूकोसाइड्स रहते हैं।

जंगली मेंहदी

इसका वर्णन कुरंड वृक्षके नामसे इस ग्रंथके दूसरे भागके ५७६ पृष्ठ पर देखिये।

जंजबील

नाम—

यूनानी—जजबील।

वर्णन—

यह खुरपेकी एक जाति है। इसकी डालियोंका रग लाल होता है और इसका स्वाद सोंठकी तरह तेज होता है।

गुण, दोष और प्रभाव—

यूनानी मतसे यह दूसरे दर्जेमें गरम और पहले दर्जेमें खुश्क है। इसको बीजोंके सहित पीसकर मुहपर मलनेसे चेहरेकी झांईं और पुराने काले दाग मिट जाते हैं। इसकेबीजों व पत्तोंको पीसकर सख्त सूजनपर लेप करनेसे सूजन बिखर जाती है।

जंजीदयून

नाम—

यूनानी—जंजीदयून।

वर्णन—

यह एक रोइदगी हैं। इसका पौधा जगली गाजरसे मिलता हुआ होता है, मगर इसकी डालियां जगली गाजरसे पतली होती हैं। जंगली गाजरकी अपेक्षा यह अधिक कड़वी होती है। इसकी जड़को काटनेसे भीतरसे वह सफेद निकलती है। यह स्याममें बहुत पैदा होती है।

गुण, दोष और प्रभाव—

यूनानी मतसे यह पहले दर्जेमें गरम और दूसरे दर्जेमें खुश्क है। इसके खानेसे पेशाव अधिक होता है। यह कब्जियत पैदा करती है।

जटामांसी

नाम—

संस्कृत—जटामांसी, जटी, पेशी, लोमशा, जटिला, मांसी, तपस्विनी, चक्रवर्त्तिनी, भूतजटा, मिसी, मिसिका, मृगभक्षा। हिन्दी—जटामांसी, बालछड़। बंगाल—जटामांसी, मराठी—जटामांसी। गुजराती—जटामांसी, बालछड़। तेलगू—जटामासी। पहाड़ी—भूतकेश। यूनानी—सुंबुल हिन्दी। लेटिन—Nardostachys Jatamansi (नारडोस्टेकीज जटामांसी)।

वर्णन—

जटामांसी का क्षुप छोटा, घने पत्तोंवाला और बहुवर्षजीवी होता है। यह हिमालय पहाड़ पर बरफीले मैदानों में पैदा होती है। कहीं २ तो यह १७ हजार फीटकी ऊंचाई तक भी पैदा होती हुई देखी जाती है। केदारनाथ से लेकर कुमाऊं और सिक्किम तक तथा नेपाल, भूटानमें भी यह पैदा होती है। इसके पत्ते १५ सेंटिमीटर से २० सेंटिमीटर तक लंबे और ? से लेकर ? सेंटिमीटर तक चौड़े होते हैं। फूल गुलाबी होते हैं जो गुच्छोंमें लगते हैं। इसका फल बड़ा और रुएंदार होता है। इसकी जड़े रुओंसे ढकी हुई रहती हैं। बाजार में जो जटामांसी बिकती है उसमें बहुतसी नकली मिलावट की रहती है। इसलिये लेते वक्त इसकी जाँचकर लेना चाहिये।

इसकी दो जातियाँ और होती हैं जिनमें एक को आकाशमांसी और दूसरीको गंधमान्सी कहते हैं। यह वस्तु खुशबूदार होती है।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मतसे जटामांसी कड़वी, कसेली, मेधाजनक, कांतिकारक, पौष्टिक, रुचिवर्धक,

शीतल, त्रिदोष नाशक और रक्तविकार, जलन, अग्निविसर्प, चर्मरोग, गलेकी बीमारी और अर्बुदको नष्ट करती है। यह शरीर के सौंदर्य को भी वढाती है।

इसकी दूसरी जाति गंधमांसी कड्वी, शीतल, कफनाशक, रक्तपित्तको मिटाने वाली और विष, भूतबाधा और ज्वरमें लाभ पहुँचाने वाली होती है। यह भी सौन्दर्य वर्धक है। इसके और सब गुण जटामान्सीके तुल्यही है। अन्तर इतनाही है कि इसकी क्रिया मज्जातन्तुओं पर विशेष होती है।

इसकी तीसरी जाति आकाशमान्सी शीतल, नाड़ी रोगनाशक, सूजनको मिटाने वाली और सौंदर्य वर्धक है। यह केशों को उज्ज्वल करने वाली, वातनाशक, शीतल तथा भूत बाधा, रक्तपित्त, मसूरिका (शीतला), नाडी व्रण (नासूर), और बिस्फोटक रोगमें लाभदायक है।

यूनानी मत—यूनानी मतसे यह पौष्टिक, उत्तेजक, मूत्र निस्सारक, ऋतुश्राव नियामक, पेटके आफरेको दूर करने वाली, अग्निवर्धक, और विरेचक होती है। यह आँखो की ज्योति को बढाती है, बालोंको काला करती है, खांसी, पुरातन प्रमेह, सीनेके रोग, अन्तडियों की सूजन और मूत्राशय तथा कटि सम्बन्धी रोगोंको दूर करती है। यह घावको सुखानी और भूखको वढाती है।

इसकी जड़े सुगधित होती हैं। ये कड़वी, पौष्टिक और आक्षेपनिवारक होती हैं। इनका उपयोग प्राय. मृगीकी बीमारीमें किया जाता है। गुल्म वायुमें भी यह उपयोगी सिद्ध हुई हैं। हृदयकी धड़कनमें भी इनका उपयोग किया जाता है।

इस वनस्पतिमें वेलेरिन (Valerıen) नामक अंग्रेजी औषधिके सब गुण मौजूद हैं। यह आक्षेप निवारक और उदर शूलमें मुफीद है। इसका सम्मेलन उन औषधियों के साथ किया जाता है, जिनका उपयोग वायुनलियोंके प्रदाहमें धूम्रपान करनेमें देते हैं। कोमानका कथन है कि इसके सतका उपयोग उदर,शूल और कब्जियत के अन्दर किया गया और उसमें यह उपयोगी पाई गई।

राबर्टके मतानुसार इसकी जड़े पानीके साथ पीसकर वेहोशी के अन्दर आँखों पर लगाई जाती है।

हिन्दू चिकित्साशास्त्रमें इस वनस्पतिका प्रयोग बहुत प्राचीन कालसे किया जा रहा है। इस देशमें यह वस्तु सुगधित द्रव्यके रूपमें काममें ली जाती है। सुश्रुतमें इस औषधि को अपस्मार रोगके उपचारमें बहुत लाभदायक बतलाया है। भारतीय वैद्य इसको स्नायु मडलके रोगोंमें और पेटके आफरेको दूर करनेके उपयोगमें लेते हैं।

रासायनिक विश्लेषण—

इस औषधिका रासायनिक विश्लेषण करनेपर इसमें एक काला रालके समान पदार्थ ६ प्रतिशत,

गोंद ६ प्रतिशत तथा भीमसेनी कपूरके समान एक प्रकारका कपूर, एक अम्ल द्रव्य और एक प्रकारका उडनशील तेल पाया जाता है। यह उडनशील तेल इसमें ½ प्रति सैकडा रहता है। यह तेल ही इसमें पाया जानेवाला सबसे प्रधानद्रव्य है। इसका रग फीका पीला और कुछ हरी झॉई लिये हुए होता है। इसमें तीव्र गध आती है।

डॉक्टर वामन गणेश देसाईके मतानुसार जटामांसी भूख बढानेवाली, पाचन क्रियाको दुरुस्त करनेवाली और कब्जियतसे बचानेवाली होती है। इसको पेटमें खानेपर पेटमें कुछ गरमी मालूम होती है, डकार आती है, पसीना छूटता है, पेशाब होता है और नाडी सुधर जाती है। अधिक मात्रामें इसको लेनेसे वमन होती है, पेटमें मरोड देकर दस्तें होती हैं, मस्तिष्क और मज्जा ततुओंपर इसकी पौष्टिक और उत्तेजक क्रिया होती है। थोडी मात्रामें इसको अधिक दिनतक लेनेसे मन शान्त होता है, काम करनेका हौंसला बढता है और नाड़ीकी गति व्यवस्थित रहती है।

मस्तिष्क और मज्जाततुओंके रोगोंपर जटामाँसी बहुत लाभ पहुँचाती है।

अतिशय मानसिक परिश्रमकी वजहसे अथवा और किसी कारणसे अगर मन अस्थिर हो गया हो, उसमें थकावट मालूम होती हो, नाडी छोटी और शीघ्रता पूर्वक चलती हो तो, ऐसी स्थितिमें जटामाँसी को देनेसे नाडी सुव्यवस्थित होकर मन शान्त होता है। किसी भी प्रकारका मानसिक आघात लगनेसे अथवा अत्यधिक मानसिक परिश्रमकी वजहसे पैदा हुए चित्त भ्रममें जटामाँसी बहुत शीघ्रताके साथ असर पहुचाती है। ऐसे रोगोंमें हींग, कस्तूरी, वगैरह औषधियोंकी अपेक्षा जटामाँसीकी क्रिया अधिक शीघ्र, अधिक सुनिश्चित और अधिक उत्तम होती है। भूत और प्रेतकी बाधामें जटामाँसीका ब्राह्मीके स्वरस बच और शहदके साथ देना चाहिये।

रक्ताभिसरण क्रियाकी खराबीमें भी जटामाँसी बहुत उत्तम औषधि है। मस्तिष्कमें रक्ताभिसरण क्रियाकी अधिकतासे रक्त भरा हुआ सा दीखने लगता है और पागलपनके लक्षण दिखलाई देने लगते हैं। ऐसी स्थितिमें इस वनस्पतिको देनेसे प्रत्यक्ष लाभ दिखलाई देता है। इसी प्रकार रक्ताभिसरण क्रियाकी कमीसे जब चक्कर आना, मूर्च्छा, आँखोंके आगे अँधेरा आना, इत्यादि चिन्ह नजर आने लगते हैं, वैसी हालतमें भी जटामासीको देनेसे रक्ताभिसरण क्रियाकी गति सुधरकर ये सब लक्षण मिट जाते हैं। मतलब यहकि यह औषधि रक्ताभिसरण क्रियाकी अधिकता और कमी दोनोंको मिटाकर उसको सुव्यवस्थित कर देती है। हृदयकी शिथिलता, हृदयकी धडकन व हृदय रोगकी वजहसे पेटमें वायुका संचय हो जाता है। ऐसी स्थितिमें जटामाँसीकी रक्ताभिसरणपर होनेवाली यह क्रिया खास हृदयके ऊपर, रक्तवाहिनियोंके ऊपर और मज्जा तंतु और रक्ताभिसरणके केंद्र स्थानपर होती है। इसके सेवनसे रक्त वाहिनियोंका सकोचन होता है, जिससे रक्तपित्त, विसर्प और रक्तश्रावके ऊपर भी इस औषधिसे लाभ होता है।

बालकोंके उदर शूल और पेट फूलनेपर और सुशिक्षित लोगों और नाजुक स्त्रियोंको होनेवाले सूक्ष्म

कफकी वमन—पौने चार माशे जटामाँसी को पानीमें पीसकर छानकर पिलानेसे कफकी वमन बन्द होती है।

जलोदर—जटामाँसी और नमकको सिरके के साथ पीसकर लगानेसे जलोदरमें लाभ होता है।

अनेक रोग—इसके सेवनसे बायठे, अपस्मार, स्त्रियोंका आवेशरोग, मासिकधर्मःका कष्ट, मूत्रनलीके रोग, पाचन नलीके रोग, श्वाँस नलीके रोग, कामला, गलेके रोग और विष दोष मिटते हैं।

अपस्मार और गुल्म वायु—जटामाँसीका चूर्ण १० रत्ती, कपूर १॥ रत्ती, दालचीनी २॥ रत्ती इन सब चीजोंका चूर्ण बनाकर भोजनसे पहिले लेनेसे अपस्मार और गुल्म वायुमें बहुत लाभ पहुँचता है। यह औषधि वेलेरिनके मुकाबलेही फायदा करती है। यह इसकी एक मात्रा है।

जतसाल पान

नामः—

हिन्दी—जतसाल पान। गढवाल—थापी। मराठी—व्हेलालोठी। मलयलम—कट्टमुतेरा। उरिया—जोत्सलपोर्नी। तेलगू—करतिता, कोदोन्तिता। कनाड़ी—जेनुकदि। सथाली—बिरकारी। लेटिन—Desmodium Pulchellum (डेस मोडियम पुल चेलम)।

वर्णन—

यह वनस्पति सारे भारतवर्ष, सीलोन और मलायामें पैदा होती है। यह एक झाडीनुमा बेल होती है। इसकी शाखाएं नाजुक रहती हैं। इसके पत्ते कटे हुए, अण्डाकार और तीन २ के गुच्छोंमें लगते हैं। इसकी फलियाँ या पापडे ३ से लेकर ६ सेंटिमीटर एक लवे और रुएदार होते हैं।

गुण, दोष और प्रभाव—

कर्नल चोपराके मतानुसार इसकी छालका काढा अतिसार, रक्तश्राव, विष और नेत्ररोगोंमें लाभदायक है। इसके फूल पित्तके रोगोंमें उपयोगी माने जाते हैं।

जदवार

नाम—

हिन्दी—जदवार, निर्विषी। मराठी—जदवार, निर्वीशी। संस्कृत—अपविषा, अविषा, निर्विशा,

विषाभावा, विषहत्री, इत्यादि। गुजराती—निर्विशी। सिमला—मनीला। नेपाल—नीलोविक। अरबी, फारसी व उर्दू—जदवार। लेटिन—Delphinium Denudatum (डेलफिनियम डेन्यूडेटम)।

वर्णन—

यह एक क्षुप जातिकी बनस्पति है। इसका पौधा नागरमोथे के पौधे के समान और इसका कंद अतीसके समान होता है। यह नेपाल और तिब्बतमें विशेष पैदा होती है। इसके पत्ते ३ से लेकर ३-७ सेंटिमीटर तक लम्बे होते हैं। इसके फूल वसन्त ऋतुके आरंभ में आते हैं। इसकी जड कुछ कालापन लिये हुए खाकी रंगकी होती है। यूनानीमतसे इसकी ६ जातियाँ होती हैं। पहली जाति वह होती है जिसकी जड़ ऊपर से मट मैली और भीतर से कुछ ललाई लिये हुए नीली होती है। इसका स्वाद पहले मीठा और बादमें कड़वा मालूम होता है। इस जातिको जदवार खताइ कहते हैं। यह सबसे उत्तम होती है। दूसरी जाति भीतर और बाहर दोनों तरफ मट मैले रंगकी, पीलापन लिये हुए होती है। यह स्वादमें कडवी होती है। पहली जातिसे यह गुणोंमें भी कुछ कम होती है। तीसरी जाति बाहर और भीतरसे काली होती है। उसको पानीमें घिसनेसे पानीका रंग नीला हो जाता है। गुणोंमें यह तीसरे नंबर की है। ये तीनों जातियाँ तिब्बत और नेपालके जंगलोंमें पैदा होती हैं। चौथी जाति दक्षिणके पहाडोंमें पैदा होती है। इसका स्वाद कडवा होता है और यह जैतूनके फलके बराबर होती है। पाँचवी जातिको अन्तला कहते हैं। यह एक बालिश्तके बराबर लंबी, काली, नरम और स्वादमें बहुत कडवी होती है। क्योंकि यह विशेष कर बच्छनागके साथ पैदा होती है। ऐसा कहा जाता है कि इसको पास रखनेसे बच्छनागका जहर असर नहीं करता। जिन स्थानों पर यह पैदा होती है वहाँके लोग इसको पास रखकर ३ रत्ती तक खा लेते हैं। इसकी छोटी जाति सफेद, मीठी और खुशबूदार होती हैं। इसमें थोडीसी तेजी भी होती है।

जो जदवार खुरासानके पूर्वके तरफके पहाड़ोंमें पैदा होती है वह छोटी, फीके रंगकी और सफेदी लिये हुए होती है। इसमें विषको नाश करनेकी शक्ति बहुत कम होती है। जो जदवार तिब्बतके पहाड़ोंमें पैदा होती है, वह बडी और ताकतवर होती है। इसमें विष को नष्ट करने की शक्ति जदवार खताइके बराबर ही होती है, यह हिन्दुस्तानमें पैदा होनेवाली जदवारसे उत्तम होती है। हिन्दुस्तानकी जदवार खुरासान वगैरह दूसरे देशोंकी जदवारसे उत्तम होती है।

असली जदवारकी पहिचान—जदवारके अन्दर कई प्रकारकी मिलावटें होती हैं। उसमेंसे असली जदवारको छांट लेना बडा मुश्किल होता है। कई लोग बच्छनागकी जडोंको दूधमें जोश देकर उनका जहर कम करके जदवारके बदलेमें बेच देते हैं। इसलिये जदवारको लेते समय उसकी परीक्षा कर लेनी चाहिये।

वछनाग और जदवार फरक—

१—बछनाग अक्सर जदवारसे पतला और छोटा होताहै। उसका रग लाल होता है।

२—अगर बछनागको तोडकर जबान पर रक्खें तो जबानमें जलन और शून्यता पैदा हो जाती है। कभी २ जबान पर छाला भी पड जाता है। जदवारसे ये बातें नहीं होतीं।

३—जबान पर बछनागको रखनेसे जो छाला व जलन पैदा होती है उस पर अगर जदवार को मलदें तो बछनाग से पैदा हुई तकलीफ दूर होजाती है।

४—जदवार और बछनागके स्वाद में भी अन्तर है। जदवार मे कडवापन होता है मगर वछनागमें नहीं होता।

५—नकली जदवार ऊपरसे खुरदरी और चरमदार होतीहै, असली जदवार चिकनी और साफ होती है।

६—नकली जदवार ऊपरसे रगीन और भीतर से सफेद होती हैं। मगर असली जदवार भीतर और बाहर एक रगकी मटमैली या नीली होती हैं।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मत—आयुर्वेदिक मतसे जदवार कडवी, शीतल, व्रणको भरनेवाली तथा कफ वात रुधिर विकार और विषको नष्ट करने वाली होती है।

इसको गोमूत्रमें औटाकर सूजन पर लगानेसे सूजन दूर होती है। दाँतों पर मलनेसे दाँतों का दर्द दूर होता है।

यूनानी मत—यूनानीमतसे यह दूसरे दर्जेमें गरम और खुश्क है। यह मूत्रल, शक्तिवर्धक, उत्तेजक और ज्ञानतंतुओं को बल देने वाली है। इसके सेवनसे दिल, दिमाग और जिगरको ताकत मिलती है, आँख की ज्योति बढती है, कामेन्द्रिय को बल मिलता है, पेशाब अधिक होता है, सूजन बिखर जाती है, मृगी, लकवा, फालिज, इत्यादि ज्ञान ततुओ से सम्बन्ध रखने वाले रोगोंमें लाभ पहुँचाती है, जलोदर, पीलिया, उदर शूल, और मूत्र कष्टमें भी यह लाभदायक है। जहरीले जानवरों के जहर और बछनागके जहर को भी यह दूर करती है, गुर्दे और मसाने की पथरीको तोड देती है, कफ के बुखारमें लाभ दायक है, अगर बच्चा माँ के पेटमे मर गया हो और उसका जहर माँ के शरीर में फैल गया हो अथवा बच्चा पैदा होने के समय जच्चा कमजोर होगई

हो और उसके खून अधिक गिरा हो तो उस हालतमे जदवार को थोड़ी मात्रामे नीहार मु ह ७।८ दिन तक खिलाने से अच्छा लाभ होता है ।

बच्चों को होनेवाली मृगी, धनुर्वात, इत्यादि दिमाग सम्बन्धी बीमारियोंमें इसको दूधमें पीसकर देनेसे फायदा होता है । बवासीरके मस्सोंपर इसको लगानेसे वहांकी सूजन उतर जाती है । इसको रुईमें तर करके बच्चोके गुदा द्वारमें रखनेसे गुदाद्वारके सब कीडे मर जाते हैं और फिर पैदा नहीं होते ।

गिलानीके मतानुसार यह औषधि जहरका दूर करनेके लिये एक हुक्मी वस्तु है । इसको सिरकेमे पीसकर लेप करनेसे चेहरेकी झाँई और सफेद दाग दूर हो जाते हैं । हर प्रकारकी सूजन फिर वह चाहे वात, पित्त या कफ किसी भी वजहसे क्यों न हुई हो, इसके भीतरी और बाहरी प्रयोगसे नष्ट हो जाती है । गलेकी हर किस्म की सूजन भी चाहे वह कठ माला या गलगडसे हुई हो, चाहे हलक की खराबीसे हुई हो इसके सेवनसे मिट जाता है । सर्दी की सूजनमें इसको काली मिरचके साथ और गर्मी की सूजनमें धनियाँके ताजे पत्तोंके साथ देनी चाहिये ।

इसको पीसकर ताजा और पुराने जखमों पर छिड़कनेसे जखम बहुत जल्दी भर जाता है । हृदय को शाति और शक्ति देनेके लिये भी यह औषधि बहुत कारगर है । अगर किसीका हृदय सर्दी की वजहसे कमजोर हो तो उसको रोजाना ६ रत्तीसे १२ रत्ती तक जदवार, नीलोफरके शरबत या गाव जबानके अर्कके साथ देनेसे बडा लाभ पहुँचता है । हृदयको शान्ति देनेके सम्बन्धमें यह एक दिव्य औषधि है । अगर इसको ४ रत्ती की मात्रामें प्रतिदिन शिकंजबीनके साथ लिया जाय तो जिगर की ऐसी कमजोरी जिससे कि जलोदर पैदा होनेका अदेशा रहता है, मिट जाती है ।

अगर किसीका पेशाब रुका हुआ हो और मसानेमें फोड़ा होगया हो तो जदवारके चूर्णको गोखरू, मकोय, ककड़ीके बीज, और खरबूजे के बीजके साथ शीत निर्यास बनाकर देने से पेशाब खुल जाता है । और गुर्दे का दर्द तथा पथरी नष्ट होजाती है ।

काले सर्पके विषमें इसको २। माशेकी मात्रामें देनेसे फायदा होता है ऐसा कहा जाता है मगर इसके लिये कोई विश्वासनीय प्रमाण नहीं है ।

मात्रा—इसकी साधारण मात्रा ४ से १२ रत्ती तककी होती है । जलोदरके रोगमें कुछ लोग इसको ३ माशे तककी मात्रामें देते हैं । कामेंद्रियकी शक्ति को बढ़ानेके लिये इसको २ माशे तक की मात्रामें देते हैं । इससे अधिक मात्रामें लेनेसे आँतोंके अन्दर जखम पैदा हो जाता है ।

मुजिर—यह वनस्पति गरम और खुश्क मिजाज वालों को हानि कारक है । ऐसे लोगोंके अन्दर यह सिर दर्द पैदा करती है तथा आँतोंमें जखम भी पैदा कर देती है ।

दर्प नाशक—इसके दर्पको नष्ट करनेके लिये धनियाँ, दूध, कतीरा और शिकंजबीन मुफीद है।

जनबा

नाम—
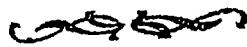
यूनानी–जनबा ।

वर्णन—

यह एक प्रकारकी तरकारी है जो इराक देशके अन्दर बहुत पैदा होती है।

गुण दोष और प्रभाव,—

यह बहुत गरम है। इसको खाते रहनेसे हवाकी सरदी और मौसमी सर्दीका बिलकुल असर नहीं होता। इससे सर्दीका सिर दर्द भी दूर होता है। आंखोंकी ज्योति तेज होती है। इसकी धूनीमे विषैले जानवर भाग जाते हैं। गरम प्रकृतिवालोंको यह नुकसान करती है। (ख० अ०)

जनवक

नाम—

यूनानी—जनबक।

वर्णन—
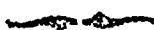
यह एक रोइदगी होती है। इसका पौधा गजभर या उससे कम लंबा होता है इसकी डालियोंके ऊपरके पत्ते आसके पत्तोंकी तरह मगर उनसे कुछ लंबे होते हैं। जडके पासके पत्ते कामनीके पत्तोंकी तरह मगर उनसे कुछ दबे हुए होते हैं। इसका फूल सफेद और खुशबूदार होता है। इसकी जडकी गाठ प्याजकी तरह होती है।

गुण, दोष और प्रभाव—

यूनानी मतसे यह बनस्पति पहले दर्जेमें गरम और खुश्क है। यह दिमागको ताकत देती है।

इसको पीसकर वदनपर मलनेसे दाग और निशान मिट जाते हैं, इसको पानीमें उबालकर उस पानी से मुंह धोनेमे चेहरा साफ और चमकीला हो जाता है। चेहरेकी झाँई और कालेदागोंपर इसका लेप फायदा करता है। इसके लगानेसे तर और खुश्क खुजली मिटती है। (ख० अ०)

जफ्त बहरी

नाम —

यूनानी—जफ्तबहरी।

वर्णन—

यह एक प्रकारका काले रंगका तरल पदार्थ होता है जो मिट्टीके तेलकी तरह जमीनसे निकलता है।

गुण, दोष और प्रभाव—

यूनानी मतसे यह तीसरे दर्जेमें गरम और खुश्क है। यह वायुको बिखेरता है। सूजनको मिटाता है। लकवा, ग्रथिवात, अधमी और जोड़ोंके दर्दमें लाभदायक है। इसका लेप कुष्टमें फायदा करता है। टूटी हुइ हड्डी पर भी इसका लगाना मुफीद है। यह फेंफडे को नुकसान पहुँचाताहै। इसका दर्पनाशक कतीरा है। इसकी मात्रा ७ माशेतक है। (ख० अ०)

जफ्ततर।

नाम—

यूनानी—जफ्ततर

वर्णन—

यह जगली सनम्बरके पेड़से टपकने वाला मद है। इसका रंग काला होता है।

गुण दोष और प्रभाव—

यह दूसरे दर्जेमें गरम और खुश्क है। वात, पित्त और कफके दोषोंको फुलाकर निकाल देता है। गलेको साफ करता है। कामेंद्रिय पर इसका लेप करनेसे उसकी मोटाई लम्बाई बढती है। और

उसमें उत्तेजना पैदा होती है। जख्मों पर इसको लगाने से ज़खम भर जाते हैं। शक्करके साथ इसको लेनेसे पुरानी खासी और कफके साथ खून जानेकी बीमारीमें लाभ होता है। इसको मोममें मिलाकर नाखूनोंमें लगानेसे नाखूनोंकी सफेदी मिट जाती है। जिस दादमें से पीब बहता हो उस दाद पर इसको लगानेसे लाभ होता है। इसको जौ के आटेमें मिलाकर सिरकी गज पर लगाने से नये बाल जम जाते हैं। हड्डी उखड़ जानेपर या मोच आ जानेपर इसके लेपसे फायदा होता है।

इसको जौ के आटेके साथ बच्चेके पेशाबमें पकाकर लेप करनेसे कंठमाला अच्छी होजाती है। फालिज और गठिया पर भी इसके लेपसे फायदा पहुँचता है। इसको जलाकर उससे काजल बनाकर उस काजलको आँखमें आंजनेसे आँखकी ज्योति तेज होती है, आंखसे पानीका बहना बद हो जाताहै और आँख की जलन मिट जाती है।

कडवी बादामके तेलमें इसको मिलाकर कानमे टपकाने से कान का दर्द मिट जाता है। कानके कीडे भी मर जाते है और पीबका बहना भी बन्द हो जाता है। इसको आगपर गरम करके उसमें बराबर वजनका चूना मिलाकर कीडे से खाये हुए दाँतमें भरदें तो दाँत गिरने से बच जाता है।

इसको शक्कर और बादाम के साथ खानेसे दमा और साँस की तगी मिट जाती है। छातीमें जमा हुआ कफ निकल जाता है। कफके साथ खून और पीबका आना भी रुक जाता है। निमोनियाँ में भी लाभ पहुँचता है। छाती और फेफडे मे अगर कोई फोडा हो तो उसमे भी इसस लाभ पहुँचता हैं।

इसको योनिमें रखनेसे गर्भका बच्चा मरजाता है। स्त्री सभोगके पहिले अगर पुरुष इसको अपनी इन्द्रिय पर लगाले तो स्त्री को गर्भ नहीं रहता और हमेंशा लगाते रहने से स्त्री वंध्या हो जाती है।

इस औषधिमें विषनाशक गुण भी रहता है। अफाड नामक विषैले सर्पके विषको यह दूर करता है। इसी प्रकार स्थावर विषोंके ऊपर भी यह लाभ दायक है। कीडे मकोडों के काटने की जगह पर इसको नमक के साथ लगाने से फायदा होता है। इसकी मात्रा ३ माशे तक की है। (ख० अ०)

जफ्त आफरीद

नाम—

यूनानी—जफ्त आफरीद ।

वर्णन—

यह एक रोइदगी है । इसका पौधा रेतीके मैदानों में पैदा होता है । इसके पत्ते चनेके पत्तोंसे छोटे और शाखाएं बारीक तथा घनी होती हैं । इसकी शाखाओं के सिरेपर सनम्बरी की तरह ३ । ४ गिलाफ लगे हुए रहते हैं, जिनकी शकल हरडिया बादाम की तरह होती है । इनके किनारों पर कांटे होते हैं । हरेक गिलाफके भीतर ३ परदे होते हैं हरएक परदे में मेथीके बीजों की तरह ५ पांच बीज होते हैं । जब ये गिलाफ पकजाते हैं तब इनके सिर फटकर बीज निकल जाते हैं । इस वनस्पति की पैदाइश स्याम और रूममें होती है । वहां के लोग इसे छोटी सालम मिश्री कहते हैं । मगर यह सालम मिश्री से भिन्न वस्तु है । इतना जरूर है कि कामेंद्रिय की शक्ति को बढाने में यह सालम मिश्री से भी ज्यादा ताक़तवर है ।

गुण, दोष और प्रभाव—

यूनानी मतसे यह दूसरे दर्जेमें गरम और तरहै । किसी २ के मतसे गरम और खुश्क है । यह कामेंद्रिय को शक्ति देती है, पेटकी मरोडी को मिटाती है, गठिया के रोगमें मुफीद है, इसके बीजों को हलवे के साथ पकाकर लगातार २ हफ्ते तक लेते रहने से हर किस्म के जलोदर में बहुत लाभ होता है । शक्कर और शहद के साथ इसका मुरब्बा भी बनाया जाता है । वह भी बहुत कामोद्दीपक है ।

मात्रा—इसकी मात्रा ७ माशेतक है ।

मुजिर—गुर्दे के लिये यह हानिकारक है ।

दर्पनाशक—इसका दर्प नाशक कतीरा है । (ख० अ०)

जन्ब—अलखरूप

नाम—

यूनानी—जन्ब अलखरूप ।

वर्णन—

यह एक रोइदगी है । इसकी जड़ पतली होती है । डालियां ऊपरसे सफेदी लिये हुए और अन्दरसे

पोली होती हैं। इसके पत्ते दूर २ लगते हैं। ये पत्ते रासनाके पत्तोंकी तरह और फूल सरसोंके फूलकी तरह होते हैं। इसके बीज छोटे २ होते हैं। इसके पचाग का स्वाद कुछ तेज और कड़वा होता है। इसको तोड़नेसे इसमेंसे कुछ चिकना चेप निकलता है। यह बनस्पति स्याममें बहुत पैदा होती हैं।

गुण, दोष और प्रभाव—

यह दूसरे दर्जेमें गरम और खुश्क है। इसके पत्तोंके रसको आँखमें लगानेसे आँखकी सफेदी जाती रहती है इसके खानेसे पेटमें होनेवाली वायुकी मरोड़ मिट जाती है और बढ़ी हुई तिल्ली कट जाती है। पागल कुत्तेके विषपर भी यह मुफीद है। (ख० अ०)

जन्ब अलसब्बा

नाम—

यूनानी—जन्ब अलसब्बा।

वर्णन—

यह एक छोटी जातिका पौधा है जो खेतोंमें पैदा होता है। इसकी ऊंचाई २ गज के करीब होती होती है। इसके पत्ते गावजबाके पत्तोंसे मिलते जुलते मगर उनसे कुछ छोटे, रुएदार और सफेदी लिये हुए होते हैं। इनके किनारोंपर छोटे छोटे काटे होते हैं। इसके पिंडके नीचेका हिस्सा तिकोना और ऊपरका हिस्सा गोल होता है। इसके पिंड पर भी मुलायम काटे होते हैं। इस बनस्पतिके अन्दरसे एक प्रकारका दूधिया चेप निकलता है।

गुण दोष और प्रभाव—

यूनानी मतसे यह औषधि पहले दर्जेमें गरम और दूसरे दर्जेमें खुश्क है। किसी २ के मतसे यह सर्द है। यह दवा कब्जियत करती है। इसकी ताजा जड़को छीलनेसे जो लुआब निकलता है उस लुआब को शरीरके किसी भी अगमें होनेवाले दर्दपर मलनेसे दर्द फौरन जाता रहता है। टूटी हुई हड्डीपर इसकी जड़को लगानेसे और ४ माशेकी खुराकमें खिलाते रहनेसे हड्डी जुड़ जाती है। गठियाके दर्दमें भी यह मुफीद है।

मुजिर—इसको अधिक मात्रामें खानेसे यह सिर दर्द पैदा करती है।
दर्पनाशक—इसकी दर्पनाशक मकोय है।

मात्रा—इसकी मात्रा ४ माशे तक है। (ख० अ०)

जन्ब अलकरब

नाम—

यूनानी—जन्ब अलकरब।

वर्णन—

यह वनस्पति ठंडे और खुश्क स्थानोंपर पैदा होती है। इसके पेडमें पत्ते कम और छोटे २ होते हैं। इसका फूल पीला होता है। इसके फलका आकार बिच्छूकी पूँछकी तरह होता है।

गुण,,दोष और प्रभाव—

हकीम जालीनूसके मतसे यह तीसरे दर्जेमें गर्म और खुश्क है। जिस व्यक्तिको ऐसे जानवरने काटा हो जिसका जहर सर्द हो या कोई सर्द जहरीली चीज खाई हो उसको यह औषधि देनेसे लाभ होता है।

जम्बेअलखील

नाम—

यूनानी—जम्बे अलखील।

वर्णन—

यह एक हमेशा हरी रहने वाली वनस्पति है जो स्याम और अरबमें तर जमीनके पास और पानीके किनारे बहुत पैदा होती है। इसकी डालियाँ घोडेकी पूछ की तरह होती हैं। इसका स्वाद कड़वा होता है। इसके पत्ते पतले और अजखरके पत्तोंसे मिलते जुलते रहते हैं। इसकी पतली २ डालियाँ पासके पेडोंपर चढकर ऊपर तक पहुँच जाती हैं और इधर उधर लटक जाती है। इसकी जड बहुत कठोर होती है। इस वनस्पतिमें फूल और फल कुछ नहीं आते, किसी २ के मतसे इस पर हलके नीले रंगके फूल आते हैं। इसकी छोटी और बडी दो जातियाँ होती हैं।

गुणदोष और प्रभाव—

यह दूसरे दर्जे में सर्द और खुश्क है। कब्जियत और खुश्की पैदा करती है। इसके पत्तों को बारीक पीसकर बडे २ जख्मों पर लेप करनेसे जख्म भर जाते हैं। कैसा ही खराब फोड़ा हो उस पर

इसके पत्तोंको सिरकेमें पीसकर लगानेसे वह सूज जाता है। शरीर किसी जगहसे फट जाय या फट जाय तो इसके पत्तोंको लगानेसे बहुत फायदा होता है। गर्मीकी ऐसी सूजन जिसमें बहुत जलन हो इसके पत्तोंके लेप न मिट जाती है। इसके पत्तोंके रसको नाकमें टपकानेसे और पेशानी पर लेप करनेसे नाक से बहता हुआ खून बन्द हो जाता है। मुंह से आता हुआ खून भी इसके पीनेसे रुक जाता है। इसकी जड़, पत्ते और डालियों को पीसकर पीनेसे गर्मीकी पुरानी खांसी मिट जाती है। आँतों, गुरदे और मसानोंके जख्मोंमें इसे शराबके साथ पीनेसे बहुत लाभ होता है। स्त्रियों के मासिकधर्म की अधिकतामें भी यह फायदा करती है। मेदा और जिगरकी सूजन व जलोदरमें भी यह लाभदायक है।

मुजिर—इसको अधिक मात्रामें लेनेसे बात पैदा होता है और गलेमें नुकसान पहुँचता है।

दर्पनाशक—इसके दर्पको नष्ट करनेके लिये शक्कर, बादामका तेल और खमीरा बनफशा मुफीद है।

प्रतिनिधि—इसका प्रतिनिधि अञ्जुबार है।

मात्रा—इसकी मात्रा ३ माशा तक है। (ख० अ०)

जबर जद

मुजिर— यह कामेन्द्रिय को नुकसान पहुंचाता है।

दर्पनाशक— इसका दर्पनाशक शहद है।

प्रतिनिधि— इसका प्रतिनिधि जमरूद है।

मात्रा— इसकी मात्रा ? माशे तक की है

जबरा

नाम—

हिन्दी, यूनानी—जबरा।

वर्णन—

यह एक रोइदगी है जो हर साल गर्मीके दिनोंमें पैदा होती है। यह जमीन से ३।४ इंच ऊंची उठती है। इसके पत्ते बालछड़ के पत्तों की तरह होते हैं। जड बाल की तरह बारीक होती है और रंगमें सफेद होती है। इसमें न फूल आते हैं और न फल आते हैं। यह घास तीन महीने से अधिक नहीं ठहरती। शहदमें रखनेसे ज्यादा दिन तक ठहर जाती है। इसमें शराब की सी गन्ध आती है। यह अफ्रिका के पहाडों की चोटियों पर और ऊंचे स्थानों पर पैदा होती है।

गुण, दोष और प्रभाव—

यह दूसरे दर्जे में गरम और तर है, दिल को ताकत देती है, चिन्ता को मिटाती है, प्रसन्नता पैदा करती है, खून का साफ करती है, जख्मों को भरती है। इसकी जड़के चूर्ण को ताजा जख्मों पर छिड़कने से वे जल्दी भर जाते हैं, पीलिया के लिए भी यह मुफीद है। इसकी ७ माशे जड़ को शराब के साथ लेनेसे अगर हड्डीमें किसी तरह का फरक होगया हो तो वह निकल जाता है। (ख० अ०)

मुजिर— यह गरम मिजाज वालोंमें सिरदर्द पैदा करती है।

दर्पनाशक— इसका दर्पनाशक कडवे बादाम का मगज है।

प्रतिनिधि— इसके प्रतिनिधि केशर और कंतुरयून है।

मात्रा— इसकी मात्रा ७ माशेसे १४ माशे तक की है।

जबरा हींग

नाम—

हिन्दी-यूनानी—जबरा हींग ।

वर्णन—

यह एक रोइदगीके बीज हैं । जो तिल की तरह होते हैं । कुछ लोग इनको पीली निसोतके बीज और कुछ लोग काली निसोतके बीज बतलाते हैं । खजाइनुल अदविया के मतानुसार इसका पौधा घास की तरह होता है जो हिन्दुस्तान में ऊँचे स्थानों पर पैदा होता है । इसके फूल सफेद और जड पतली होती है । इसके बीजों का स्वाद कडवा होता है । इसके गुण धर्म खरबक की तरह होते हैं । इसलिए बहुत से लोग इसे खरबक भी कहते हैं ।

गुण, दोषऔर प्रभाव—

यूनानी मतसे यह तीसरे दर्जेमें गरम और खुश्क है । यह एक जहरीली वस्तु है । इसको जख्मों पर रखने से जखम फट जाते हैं । इसको खानेसे दस्त और उलटियां होती हैं । इसको पौने दो माशे की मात्रामें देने से दस्त उलटी होकर फालिजके रोगीको लाभ होता है । साढेतीन माशेकी मात्रामें में यह प्राण घातक होजाती है । इससे दस्त और उलटी होकर आदमी बेहोश होजाता है, गलेके अन्दर सूजन आकर सर्द पसीना शुरू होजाता हैं, शरीर की ताकत नष्ट होजाती है । इसके उपद्रवों को शान्त करनेके लिए दूध पिलाना चाहिये, एनेमा लगवाना चाहिये, पानी को गरम करके उसमें बिठाना चाहिये । तथा घी, जीरा, अनीसून, चिकनी वस्तुए और ताजा दूध व शहद देना चाहिये । (ख० अ०)

जमसत

नाम—

यूनानी—जमसत ।

वर्णन—

यह एक किस्म का कम कीमती जवाहिरात होता है । इसका रग सफेद, लाल और नीला होता है । मगर उसमें लाल सबसे अच्छा होता है । इसको अरबीमें अलमास तुबरी और टर्कीमें जंगूम कहते हैं ।

गुण दोष और प्रभाव—

यूनानी मतसे यह तीसरे दर्जे में गरम और खुश्क है। इसके बरतन में शराब भरकर पीनेसे शराब का नशा नहीं आता। इसको तकियेके नीचे रखकर सोने म खराब स्वप्न नहीं आते हैं और न स्वप्नदोष ही होता है। इसका नगीना अंगूठीमें रखकर पहिननेमें मान और प्रतिष्ठा होती है और ग्रंथिवात का रोग भी नहीं होता। इसकी अंगूठी पहिननेसे दिल की धड़कन, बेहोशी, जी का मिचलाना और सुस्ती मिटती है। इसके लेप करनेसे आंख का सूजन और आंखके पोटे की सूजन मिटती है।

मात्रा— इसकी मात्रा एक माशे तक की है। (ख० अ०)

जमना

नामः—

हिन्दी—जमना। पंजाब—चुली, डुदला, जामू, जामना, भाम, भवू। कुमाऊ—चौंवाली, जमुना। लेटिन—Prunus Carnuta (प्रूनस कॉरन्यूटा)।

वर्णन—

यह वनस्पति कुर्रमकी खाड़ी और हिमालयमें सिंधुके आसपास पैदा होती है। इसके पत्ते रुएदार होते हैं। ये १० से लेकर १५ सेंटिमीटर तक लंबे, बरछी आकारके होते हैं। इसके फूल सफेद होते हैं। इसका फल लंबगोल होता है। यह पक जानेपर लाल या बेंगनी हो जाता है।

गुण दोष और प्रभाव—

इसके गूदासे एक तेल निकाला जाता है जो कड़वी बादामके तेलकी जगह काम आता है।

जमरासी (भूतकेशी)

नाम—

हिन्दी—जमराशि, वृक्ष। बंगाल—राजेहुल। बंबई—अरन, भूतकेशी, ताम्रुज। अलमोड़ा—यूनियाँ, सोनी। बुन्देलखंड—मामरी। मध्यप्रदेश—जमरासी, जम, कलमुन्वा, राशि, रोहि। गढ़वाल—घेंवरी। संथाल—नेवरी। मराठी—अरन, भूतपला, भूतपल तमूरज। मुंडारि—निरी, निरखिन। पंजाब—बाकरा, जमोआ, मिरडू, मोरिन्दू, पादरियम्। तामील—दूरगोलि, चेल्लुपमर, करुपुआ। तेलगू—नीरीजा, भूतम्-कुसानु। कोंकण—धुरकास। लेटिन—Elaeodendron Glaucum (इलिओडेण्ड्रोन ग्लोकम)।

वर्णन—

यह वृक्ष हिमालयकी तलहटीमें ६००० फीटकी ऊचाई तक होता है। इसके अतिरिक्त बुंदेलखंड, बिहार, मध्यप्रान्त, कोकण, पश्चिमी घाट, दक्षिण और कर्नाटकमें भी यह पैदा होता है। यह एक मध्यम आकारका वृक्ष होता है। इसके पत्ते आमने सामने लगते हैं। ये अणीदार, लम्बगोल, कटी किनारोंके, दोनों बाजू चिकने तथा ६-३ से १५ सेंटिमिटर तक लबे और २-५ से ६-३ सेंटिमीटर तक चौडे होते हैं। इसके फूल पीले, छोटे और झूमकोंमें लगते हैं। इसके फल पीले, बेरकी तरह, तथा जडकी छाल मोटी, तूरी और कडवी होती है। औषधि प्रयोगमें इसकी छाल और पत्ते काममें आते हैं।

गुण दोष और प्रभाव—

स्त्रियोंका गुल्म वायु और हिस्टीरियासे जो मूर्च्छा आ जाती है उस मूर्च्छाको दूर करनेके लिये इसके पत्ते और इसकी छाल बहुत उपयोगी है। इसके पत्तोंका धूनी देनेसे व उनका धुआँ पिलानेसे अथवा उनको सुँघानेसे साधारण सिर दर्द भी दूर हो जाता है।

इसकी छालको पानीमें उबालकर, पीसकर सूजनके ऊपर उसका लेप करते हैं। जिससे सब प्रकार की सूजन मिट जाती है। इसकी जड सर्प विषकी एक उत्तम दवा है। इस कामके लिये देहाती लोग इसकी छालको उपयोगमें लेते हैं। इसकी छाल एक प्रकार का तीव्र विष है।

मुंडा जातिके लोग इसकी जडका टुकडा जो कि उंगलीके समान मोटा होता है, पीसकर पानीमे गला देते हैं। फिर उसको पानीमें छानकर वमनकारक औषधिकी तरह पिलाते हैं जिससे वमन होकर विष दूर हो जाता है। साधारण खुराकसे अधिक मात्रामें होनेपर इस औषधिसे मृत्यु तक होजाती है। इसका लेप छातीपर करनेसे निमोनियामें भी लाभ होता है।

कर्नल चोपराके मतानुसार यह औषधि संकोचक और सर्प विषमें उपयोगी है।

केस और महस्कर के मतानुसार यह औषधि सर्प विषमें निरुपयोगी है।

जमाल गोटा

नाम—

संस्कृत—जयपाल, सारक, दन्तीबीज, मलद्रावि, बीजरेचन, कुम्भी बीज, घटा बीज, शोधनी बीज, चक्रदन्ती बीज। हिन्दी—जमालगोटा, जैपाल। मराठी—जैपाल। बंगला—जैपाल। गुजराती—नेपालो। करनाटकी—जैपाल। अरबी—हब्बुल सलातीन। फारसी—तुख्मे बेदम, जीर खताई। तेलगू—नेपलमू,

नेपलवेमु। अंग्रेजी—Parging Broton (पारजिंग ब्रोटन)। लेटिन—Croton Tiglium (क्रोटन टिग्लियम)।

वर्णन—

जमाल गोटेका झाड़ छोटा होता है। इसके पत्ते गूलरके समान और फूल महुएके समान होते हैं। इसकी छाल राखके रंगकी होती है। इसके बीज अण्डीके बीजकी तरह होते हैं।

गुण, दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिकमत—आयुर्वेदिकमतसे जमालगोटा चरपरा, गरम, कृमि नाशक, विरेचक, दीपन, कफ वात नाशक और अतिसार को दूर करने वाला है। इसके बीजों का तेल उग्र विरेचक, शोथ नाशक और आफरा, उदर रोग, सिरदर्द, सन्यास रोग, धनुस्तंभ, ज्वर, उन्माद आमवात और खाँसी को दूर करता है।

जमाल गोटा यह एक तीव्र विरेचक पदार्थ है। तीव्र रेचक द्रव्योंमें इसका नम्बर सबसे पहिला है। अधिक मात्रामें यह विष है। इसके तेलकी एक बून्द देनेसे ५। २५ पानीके समान दस्तें हो जाती हैं और पेटमें बहुत मरोड़ी चलती है। यहाँ तक कि अन्तड़ियों की श्लेष्मत्वचामें कुछ सूजन भी हो जाती है।

जिन लोगोंके रक्तमें से पानीका अंश जल्दी निकाल देने की जरूरत होती है अथवा हृदयोदरके समान रोगोंमें पानीका दबाव कम करने की आवश्यक्ता होती है वहां जमाल गोटेका उपयोग किया जाता है।

डॉक्टर वामन गणेश देसाईके मतानुसार जब रक्तमें का पानी कम कराना हो या हृदयोदरमें कोई वक्त पानीका दाब कम कराना हो तो उस वक्त जमाल गोटा देतेहैं। मस्तकमें की शिरा टूटके जो अर्द्धांग वायु होता है तब जमाल गोटा देकर यदि रक्तमेंसे पानी कमी नहीं किया तो भेजे पर रक्तस्राव ज्यादा बढता रहता है और रोगीके अच्छे होनेकी सम्भावना बिलकुल नहीं रहती। रोगी बेसुधा होतो इसके तेल (जमालगोटेका तेल)की एकबून्द मक्खनमें मिलाकर जबानपर घिसनाचाहिए। हृदयोदरमें जमाल गोटेसे बहुत फायदा होता तो है लेकिन कभी २ जुलाब जल्द नहीं होता है। यह ध्यानमें रखना चाहिये। ऐसे समयमें इसके दर्पनाशक पदार्थ पानीमें घिसा हुआ कत्था व नींबूका रसदेना चाहिए।

कर्नल चोपराके मतानुसार पागलपन, मृगी, आक्षेप, इत्यादि रोगोंमें जिनमें कि रक्तभार बढ जाता है। इसके बीजों को तज जुलाब देनेके उपयोगम लेते हैं। ऐसी हालतमें इसकी मात्रा ८ ग्रेनसे ज्यादा नहीं होनी चाहिये। इसे शहदके साथ मिलाकर देते हैं। इसका तेल सधिवात, पक्षाघात और अन्य प्रकारके जोड़ोंके दर्दमें उपयोगमें लिया जाता है। यह सन्धिके रोगोंमें लाभदायक है। इससे छाले उठ जाते हैं।

रासायनिक सगठन—इसके तेलमें क्रोटोन ओलिक एसिड, टिगलिक एसिड, एक उड़नशील तेल और स्निग्ध तत्व पाये जाते है।

मात्रा—इसकी पीसी हुई जड़ १० से लेकर ३० ग्रेन तक की मात्रामें दी जाती है। इसका तेल एक बून्दकी मात्रामें दिया जाता हैं। इसके शुद्ध किये हुए बीजों का गूदा १ रत्तीसे २ रत्ती तक देना चाहिये।

वाह्यप्रयाग—जमाल गोटेका तेल चमडे पर लगाने से जलन पैदा करता है। इससे चमडे पर फफोले पैदा होजाते हैं। यह जोड़ों के दर्द पर, जलन मिटाने के उपयोगमें लिया जाता है मगर आज कल इसको इस उपयोग में बहुत कम लेते हैं क्योंकि इससे जलन बहुत ज्यादा होती है और इससे जो घाव पड जाते हैं उनके चिन्ह हमेशाके लिये कायम रह जाते हैं। वे नही मिटते। इन घावोसे मवाद वगैरहके बहुत घृणित दृश्य दिखलाई देने लगते हैं। (सन्याल और घोष)

अत प्रयोग—यह मुहँके द्वारा खानेसे पेट और अँतडियोंमें जलन पैदाकरता है। इसके तेल की १ बूंद लेनेसे कुछही समय बाद पेटमें दर्द और शूल शुरू होता है और घण्टे दो घण्टेके बाद खूब दस्तें लगना शुरू होतीं हैं और दस्त अधिक पतले २ होते जाते हैं। कभी २ ये दस्त खूनके भी होने लगते हैं। अधिक मात्रामें खुराक पहुँचनेपर उपरोक्त हालतके बाद रोगीकी मृत्युतक होसकती है। जमाल गोटेका तेल बहुत कम उपयोगमें लिया जाना चाहिये। सन्यास रोग, रक्तज मूर्च्छा रोग और पागल पनके रोगियोंके लिये यह गुणकारी है। इसकी १ बूँदको मक्खन या शक्करमें मिलाकर जबानपर रखकर तुरन्त निगल जाना चाहिये। जिससे जबानपर यह जलन पैदा न कर सके। कमजोर बीमारोंका, गर्भवती स्त्रिया को, बच्चों को, बवासीर के रोगियों को, पाक स्थली के रोगियों को और आन्त्रिक प्रदाह से पीडित रोगियों को यह नही देना चाहिये।

चरकके मतानुसार इसकी जडका छिलका ठण्डे पानी या पुराने गुडके साथ मिलाकर पीलियाके रोगीको दिया जाता है। अगर इसकी जडके छिलकेको पुल्टिसके रूपमें विद्रधि पर बाँधा जायतो विद्रधि फूट जाती है।

जमाल गोटेको शुद्ध करनेकी विधि—जमाल गोटेका छिलका निकाल कर उसको बीचमे से चीर कर उसमें जो पत्तेकी तरह वस्तु रहती है उसको निकाल देना चाहिये और उसमें आठवाँ हिस्सा सुहागे का चूर्ण मिलाकर दूधके अन्दर डोलायन्त्रमें शुद्धकर लेना चाहिये। इसप्रकार तीन बार करने से जमाल गोटा शुद्ध हो जाता है। जिस दूधमें इसको शुद्ध करे उस दूध को ऐसी जगह फेंक देना चाहिये जहाँ कोई उसे पा नहीं सके।

यूनानी मत—यूनानी मतसे इसके मगज चौथे दर्जेमें गरम और खुश्क है। इसकी जड दूसरे दर्जे में गरम और खुश्क है। यह वस्तु बहुत तेज़ दस्तावर है। शरीरके अन्दर फैले हुए गर्मीके जहरको

यह निकाल देती है। उपदंश, कोढ, और दूसरे चर्म रोगोंमे यह लाभ पहुँचाती है। गुर्दे और मसानेकी पथरीको यह तोड देती है। कफसे पैदा हुए जलोदर, कमरके दर्द और पीलिया रोगमें भी यह मुफीद है। हिन्दुस्तान की बहुत सी औरतें जब बच्चेको डिब्बा या मृगीकी बीमारी होजाती है तब बच्चे की हैसियत और जरूरत को देखकर जमालगोटे की मगजको अदरकके रस या मा के दूधमें घिसकर थोड़ा सा पिला देती है, जिससे ३ ४ दस्त होकर बच्चा खुल जाता है।

इसका जुलाब दिमाग, पेट, जोड, इत्यादि शरीरके दूर २ हिस्सोंमें फैली हुई गदगीको खींचकर दस्तकी राह निकाल देता है। इससे गठिया और लकवेके समान भयकर रोगोंमें भी फायदा होता हुआ देखा जाता है। यह मुंहके खराब जखमोंको भर देता है। इसको पीसकर रोगन खेरीमें मिलाकर कानमें टपकानेसे कानके कीडे मर जाते है इसको दाँतोंपर रखनेसे दाँतोंका दर्द भी जाता रहता है।

यह वस्तु गरम मौसिममें, गरम मुकामों पर और गरम प्रकृतिके लोगोंको कभी नहीं देना चाहिये। सर्द मौसिममें, सर्द मुकाम पर व सर्द प्रकृतिके रोगियों पर इसका इस्तेमाल करना चाहिये। देशकालके अनुसार भी इस औषधिके प्रभाव जुदा जुदा होते हैं। कई पहाडी लोग इसके बीजोंको चार २ पांच २ की गिनतीमें खाजाते हैं और उनको सिर्फ एक या दो दस्त होते हैं मगर देहली और लखनऊके तरफ रहनेवाले लोग इसका आधा दाना भी खा लें तो उनकी बुरी हालत होजाती है। राजपूतानाके रहनेवाले बहुतसे मजबूत लोग इसको १ से लेकर २ दाने तककी मात्रामें खा लेते हैं और उनको मामूली दस्तें होती हैं। इसलिये इस वस्तुका उपयोग करते समय देश, काल और प्रकृतिका पूरा २ ध्यान रखना चाहिये।

जमालगोटेके पेडकी जड़ बहुत तेज गरम होती है, यह खून, पित्त और कफके उपद्रवोंको दूर करती है, जलोदर और सूजनकी बीमारीमें फायदेमद है, पेटके कीडोंको मारती है, चर्म रोग सम्बन्धी बीमारियोंमें लाभ पहुँचाती है। अभ्रसी और गठियामे लाभदायक है। प्रथिवात (Gout) फोडे फुन्सी और रक्त विकारमें भी यह उपयोगी है। जमालगोटेकी गिरीको पानीमें घिसकर नारूपर लगानेसे नारू एक दिनमें आराम हो जाता है ऐसा कहा जाता है मगर यह दवा बहुत जलन पैदा करती है। इस लिये लगाने वालेको अपनी सहन शक्तिका अन्दाज करके लगाना चाहिये। बिच्छूके विषपर भी इसके मगजको पीसकर लगानेसे फायदा होता है। साँपके विषपर आधे जमालगोटेको पानीमें घिस कर आँखमें आँजनेसे साँपका जहर ज्यादा असर नहीं करता मगर इस प्रयोगसे आँखको बहुत नुकसान और असह्य वेदना होती है। इस लिये अगर कभी यह प्रयोग कर लिया जाय तो बकरी के दूधमें रुई का फोया भिगोकर आँखपर बाँधना चाहिये। (ख—अ०)

जमाल गोटेकी विष शान्तिके उपाय—

अगर जमाल गोटेसे नुकसान पहुँचने की नौबत आवे और इसका जहर फैल जावे और शरीर

में गर्मी व जलन पैदा हो तथा दस्त और मरोडी अधिक आने लगे और वमन होते हों तो दूधमें घी मिलाकर पिलाना चाहिये और तुख्म खुरफा, इसबगोल, बबूलका गोंद, मालतुलसी के बीज इत्यादि किसी भी लुआबदार चीज को पानीमें गलाकर उसका लुआब तैयार करके उस लुआबमें बादामका तेल और रोगन गुल मिलाकर पिलादे । शीरा मगज तुख्म कद्दू या शीरा तुख्म खुरफा खिलावें । लुआबदार चीजोंका एनेमा लगावे । कभी ज्यादा दस्तें होने की हालतमें ठण्डे पानीके टबमें बिठानेसे भी लाभ होता है । नींबूके रसमें शक्कर मिलाकर पिलाने से भी इसके विषमें लाभ होता है ।

उपयोग—

दमा—जमाल गोटेके मगज को चिराग की लौ में जलाकर उसका धुआँ नाकके जरिये पीनेसे दमा जाता रहता है। इसकी मगज को चिरागकी लौमें जलाकर उसका चौथा हिस्सा पानमें रखकर खिलाने से भी दमा मिटता है।

हिचकी—जमाल गोटेके मगज को हुक्के में भरकर पीनेसे बादी की हिचकी बन्द होती है।

सिरदर्द—जमाल गोटेकी मगजको पानीमें पीसकर कनपटियों पर लेप करने से सिर और आँख का दर्द मिटता है।

सर्प विष—सर्पके काटे हुएको शुद्ध किये हुए जमाल गोटेकी मगज खिलाने से तथा उसको घिसकर आँखमें आँजनेसे विषका असर बहुत कम होता है।

वनावटें—

जमालगोटेकी गोलियां—गुलबनफशा १७ माशा, गुलाबके फूल १७ माशा, खुरफेके बीज साफ किये हुए १७ माशा, कद्दूके बीजोंकी मगज १० माशा, ककडी के बीजोंकी मगज १० माशा, मगज बेदाना १० माशा, गुलनीलोफर १० माशा, कशनीज साफ किया हुआ ७ माशा, मस्तगी ७ माशा, वंशलोचन ७ माशा, कतीरा ७ माशा, मगज जमालगोटे का शुद्ध किया हुआ ३ तोला, इन सब चीजोंको पीसकर इसबगोलके लुआबमें मिलाकर चनेके बराबर गोलियां बनालें।

ये गोलिया १ माशेसे दो माशेतककी मात्रामें गुलाबके शरबतके साथ देनेसे अच्छा जुलाब लग जाता है। इन गोलियोंसे जमालगोटेसे होने वाले सब फायदे तो मिल जाते हैं मगर उसकी उग्रता और उसके नुकसानसे रोगी बच जाता है। क्योंकि इसमें जमालगोटेके दर्पको नाश करनेवाली बहुत सी औषधियां मिली हुई रहती हैं।

जम्भोरी

जम्भारी नीम्बूका एक जाति है इसलिए इसका पूरा परिचय अगले भागमें नीम्बूके वर्णनके साथमें दिया जावेगा।

जमीकन्द (सूरणकन्द)

नाम—

संस्कृत—अर्शोघ्न, बहुकन्द, सूरणकन्द, कन्दुला, स्थूलकन्दक, कन्दा, तीव्रकण्ठ, वातारि, ओला, इत्यादि। हिन्दी—सूरणकन्द, जमीकन्द, कन्द। बंगाल—ओल। मराठी—गोड़ासूरण, खाजेरासूरण। गुजराती—सूरण, बम्बई—सूरण। कच्छ—सूरण। कोंकण—सुमा, सूरण। तेलगू—मचीकन्दा, द्वेलकन्दा, कन्दगोदा। तामील—करुनइ कलग। फारसी—जमीकन्द, श्रोल। लेटिन—Amorphophallus Campaulatus (एमरोफो फेलस कम्पेन्यूलेटस)।

वर्णन—

जमीकन्द या सूरण एक मशहूर वनस्पति है जो हिन्दुस्तानके सभी भागोंमें तरकारी बनाने और औषधि प्रयोगमें काममें आती है। इसकी दो जातियाँ होतीं हैं। एक जंगली और दूसरी लगाइ हुई। इसका कन्द चपटा और 'लम्बगोल होता है। यह २० से लगाकर २५ सेंटिमीटरके आकारका होता है। इसका रंग गहरा बादामी होता है। इसके पत्ते फूलोके बादमें लगते हैं। ये ३० से लगाकर ६० सेंटि मीटर तक चौड़े होते हैं।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदके मतसे जमीकन्द रूखा, कसेला, तीक्ष्ण, और खुजलीको पैदा करनेवाला होता है। यह रुचि वर्धक और क्षुधावर्धक होता है, कफको नष्ट करता है, बवासीरमे बहुत लाभ पहुँचाता है, प्लीहा और गुल्म रोगों को नष्ट करता है, वायु नलियों के प्रदाह, वमन, पेटकी पीड़ा, रक्त रोग और श्लीपद मे यह लाभदायक है।

इसके बीज जलन पैदा करते हैं। संधिवातकी सूजन और उसके दर्पको मिटानेके लिये इसके कन्द और इसके बीजोंका लेप लाभ दायक होता हैं। इसके कन्दका मुरब्बा या आचार पेटका आफरा उतारनेवाला और शान्तिदायक माना जाता हैं। इसके कन्दमे कुछ कसेला और जहरीला रस रहता है जो गर्मीके द्वारा इससे अलग किया जा सकता है।

इसकी जड़ चक्षुरोगमें उपयोगमें ली जाती है।

इसे फोड़ों पर भी लगानेके काममें लेते हैं। ऋतुस्राव नियामक वस्तुकी तौर पर भी यह काममे लिया जाता है।

छोटा नागपुरकी मुण्डा जातिके लोग इसके फलको पीसकर तीव्र संधि वात या जोड़ों की सूजन पर लेप करने के काममे लेते हैं।

सूरण की तरकारीसे यकृत की क्रिया सुधरती हैं और दस्त साफ होता है। इन दो कारणों से बवासीरके अन्दरसे बहने वाला खून बन्द हो जाता है। इसके प्रयोगसे गुदाके अन्दर रहने वाली रक्त वाहिनियों का संकोचन होता है। इसीसे खूनी बवासीरके अन्दर यह औषधि बहुत हितकारी होती है, और इसी कारण संस्कृतमें रक्खा हुआ इसका नाम अर्शोघ्न सार्थक होता है।

कर्नल चोपराके मतानुसार यह वस्तु अग्निवर्धक, पौष्टिक, शक्तिदायक और पेटका आफरा उतारने वाली है। बवासीर में भी यह बहुत लाभ पहुँचाती है।

उपयोग—

गठिया—सूरणकंदका गूदा और उसके बीजों को पीसकर लेप करने से गठिया में लाभ होता है।

खूनी बवासीर—सूरण कन्दको इमलीके पानी और धानके तुषोंके साथ उबालकर, धोकर शाग बनाकर खानेसे खूनी बवासीर मिटता है।

(२)—सूरण कंदपर कपड मिट्टी करके उसे आगमें भूनकर उसकी कपड मिट्टी हटाकर उसमें नमक और तेल मिलाकर खाने से बवासीर मिटता है।

(३)—इसके टुकड़ोंको छायामें सुखाकर उनका चूर्ण बनाकर १० माशेकी मात्रामें प्रात: काल लेनेसे बवासीरमें लाभ होता है।

बिच्छूका विष—सूरण कंदका पुल्टिस बाँधनेसे बिच्छूका और दूसरे जहरीले कीड़ों का विष उतरता है।

बनावटें—

बृहत् सूरण मोदक—सूखे जमीकंदका चूर्ण १६ तोले, चित्रककी जड़की छाल ८तोले, सोंठ ४तोले, काली मिर्च २ तोले, त्रिफला १२ तोले, पीपलामूल ४ तोला, तालीसपत्र ४ तोला, शुद्ध भिलामा ४ तोला बायविडंग ४ तोला, मुलेठी ८ तोला, सफेद मूसली ४ तोला, विधायरेके बीज १६ तोले, दालचीनी २ तोले, इलायची २तोले। इन सब चीजोंको कूटपीस छानकर चूर्ण बनालेना चाहिये। जितना चूर्णका वजन

हो उससे दूना पुराना गुड़ मिलाकर आधी २ छटाकके लड्डु बना लेना चाहिये। प्रति दिन सवेरे शाम अपनी शक्तिके मुआफिक इन लड्डुओंका सेवन करनेसे और पथ्यमें हलका भोजन करनेसे बिना ऑपरेशन और क्षारकर्मके ही बवासीर जडमे नष्ट हो जाता है। इसके अतिरिक्त इस पाकका सेवन करने वाले मनुष्यकी जठराग्नि, पाचन शक्ति और मैथुन शक्ति भी अत्यत प्रबल हो जाती है। इसी प्रकार श्लीपद (हाथी पाँव) सूजन, कफ वातकी सग्रहणी, हिचकी, श्वास, खासी, राजयक्ष्मा और प्रमेहमें भी इससे लाभ पहुँचता है। बवासीरकी यह एक सुप्रसिद्ध दवा है।

जयंती

नाम—

सस्कृत—जया जयन्ती, नदेयी वेजन्ती। हिन्दी—जयन्ती, जूफ़न, झीजन, रासिन, जेत। बगाल—जयन्ती, बबई—जेत, जजन, सेवरी, शेवारी। पोरबंदर—जयन्ति। तामील—करुनजेंबी, मगुदई, सेंबई, करुशेवै, चंपेइ। उर्दू—जैत। तेलगू—जतुगु, सोमिन्ता। उरिया—जोयोत्री। मुडारि—लीलदारू। फारसी—सीसीबन, लेटिन—Sesbania Egyptiana (सेसबेनिया इजिप्सिआना)।

वर्णन—

इस वनस्पतिका मूल उत्पत्ति स्थान अमेरिका है। यह प्राय सभी गरम देशोंमें बोई जाती है। यह एक छोटा नरम लकडीका झाड होता है। यह बहुत जल्दी बढता है। इसके पत्ते ७-५ से १५ सेंटिमीटर तक लम्बे होते हैं। इसके फूल १-२ से १-५ सेंटिमीटर तक लंबे और पीले होते हैं। इसकी फली या पापडा १५ से २३ सेंटिमीटर तक लबा होता है। इसमें २० से लगाकर ३० तक बीज रहते हैं। इसकी दो जातियां होती है, एक लाल फूलवाली, दूसरी पीले फूल वाली।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदके मतानुसार इसकी जड़ गरम, कड़वी, पेटका आफरा उतारने वाली, धातु परिवर्तक, और कृमिनाशक होती हैं। क्षयजनित ग्रथियोंमें, ज्वरमें, व्रणमें, मधुमेहमें, धवलरोगमें और गलेके रोगोंमें यह बहुत उपयोगी है। कफ, पित्त और प्रदाहको यह दूर करती है। बिच्छूके काटनेपर यह एक उत्तम दवा है। इसकी छाल संकोचक होती है। प्लीहा और तिल्लीकी वृद्धिमें और अनार्तवमें इसके बीजोंको देनेसे बड़ा लाभ होता है। माताकी बीमारीमें भी इसके बीज लाभदायक हैं। चर्म रोगोंमें इसकी छालका रस पिलानेसे और इसके बीजोंका लेप करनेमे लाभ होता है।

यूनानी मत—यूनानी मतसे इसके पत्ते विरेचक, कृमिनाशक और शान्तिदायक होते हैं। ये जलाबुर्द

तथा सभी प्रकारके दर्द और प्रदाह में फायदा पहुचाते हैं। इसके बीज ऋतुश्रावनियामक, उत्तेजक और सकोचक होते हैं। ये पुराने व्रण और फोडोंको भर देते हैं। तिल्लोकी बीमारी, अतिसार और अत्यधिक रजः श्रावमें ये लाभदायक हैं।

पजाबमें इसके बीजोंको आटेके साथ मिलाकर खुजली के ऊपर लेप करते हैं। ढाकामें इसके ताजा पत्तोंका रस कृमिनाशक वस्तुकी तौरपर उपयोगमें लिया जाता है।

कर्नल चोपराके मतानुसार इसके बीज और इसका छिलका अतिसारमें लाभदायक है। ये अत्यधिक रजश्राव और चर्मरोगमें उपयोगमें लिये जाते हैं। इसके पत्ते सधिवातमें उपयोगी हैं।

जरेशक

इस औषधका विशेष वर्णन आगेके भागमें दारूहलदीके प्रकरणमें देखिये। दारूहल्दी के झाडके फल को ही जरेशक कहते हैं।

जरनब

नाम—

यूनानी—जरनब।

वर्णन—

इस वनस्पतिके सम्बन्धमें यूनानी ग्रन्थकारोंके अन्दर बडा मतभेद है। कोई २ इसे ब्राह्मी और मराडूकपर्णीका दूसरा नाम बतलाते हैं। किसी २ का मत है कि यह एक जातिका वृक्ष होता है। किसी का मत है कि जरनब का पेड़ १ गजसे छोटा होता है। इसका स्वाद तेज होता है। इसकी डालियाँ बारीक होती हैं और इसमें नींबू की सी खुशबू आती है।

खजाइनुल अदवियाके लेखक लिखते हैं कि मैंने सूखी हुई जरनब को देखा तो वह मूजकी पत्तियोंके समान दिखाई दी। इसकी शाखाए गोल, बारीक और सींक की तरह होती हैं और जगह २ छोटी गठानों पर ऐसे निशान होते हैं जैसे पत्तोंकी जड़ें टूट जानेके बाद रहते हैं। इसमें बिजोरे नीबूकी तरह गन्ध आती है और इसका स्वाद दालचीनीसे मिलता जुलता रहता है। यह फारस के पहाड़ोंमें विशेष पैदा होती है।

गुण, दोष और प्रभाव—

यूनानीमतसे यहदूसरे दर्जेमें गरम और खुश्क है। यह वनस्पति हृदयके लिये एक पौष्टिक वस्तु है। मेदा, जिगर व दिमाग को भी यह ताकत देती है, भूख बढाती है, आवाज को साफ करती है, वायु को बिखेरती है, वायगोला और बदहजमी को दूर करती है, खांसी, दमा और हिचकीमें मुफीद है, पेशाबको साफ लाती है, कामेंद्रियकी शक्तिको बढाती है, इस औषधिमें विषनाशक गुण भी है।

मुजिर—यह औषधि गरम प्रकृति वाले लोगों के लिये हानिकारक है।

दर्पनाशक—इसके दर्पको नाश करने के लिये धनिया और चन्दन मुफीद है।

प्रतिनिधि—इसके प्रतिनिधि कबाबचीनी और नरकचूर है

मात्रा—इसकी मात्रा १ माशे तक है। (ख० अ०)

जरर

नाम—

यूनानी—जरर ।

वर्णन—

यह एक रोइदगी (क्षुप) होती है, । इसका पौधा १ बालिश्त तक का घासकी तरह होता है। इसका फूल पीला और गोल होता है। इस वनस्पतिमें थोडे मुलायम कांटे भी होते हैं। इसके पत्ते सफेद और छोटे और जड १ फुट लम्बी होती है। रंगरेज लोग इसके फूलोंको कपडे पर पीला रंग चढानेके काममें लेते हैं।

गुण, दोष और प्रभाव—

यह वनस्पति सर्द और खुश्क है, कुछ गरमीकी तासीर भी इसमें होती है, यह कब्जियत मिटाती है, सूजनको बिखेरती है, पेशाब और मासिक धर्मको साफ करती है। चमडे पर पडे हुए निशानको मिटाती है। मुनक्काके साथ इसका काढा करके पीनेसे बढी हुई तिल्ली, जलोदर और पीलिया में लाभ पहुँचाता है। इसके काढेमें जौ का आटा मिलाकर गर्मीकी सूजन पर बांधनेमे लाभ होता है। इसकी राखको खुजली, दाद और जखम पर लगानेमे शान्ति मिलती है। इसका प्रतिनिधि मजीठ है।

दर्पनाशक—शिकंजबीन

मात्रा—१ तोलेसे १॥ तोले तक की है जिसका काढा बनाकर देना चाहिये

जरीन

नाम—

यूनानी—जरीन।

वर्णन—

यह मझले कदका एक वृक्ष होता है। इसके पत्ते जैतूनके पत्तोंकी तरह और फूल सूरज फूलकी तरह होता है यह ईरानमें पैदा होता है।

गुण, दोष और प्रभाव—

यूनानीमतसे यह गरम और खुश्क होता हैं। इसके पचांगका रस निकालकर पीनेसे अफ्रसी वातमें लाभ होता है। मासिक धर्म की रुकावट और पेशाब को भी यह साफ करता है जहरीले जानवरों के जहर पर भी यह मुफीद हैं।

जरविंद-इ-तवील

नाम—

यूनानी—जरविद—इ—तवील, जरबिद दराज। लेटिन–Aristolochia Longa (एरिस्टो लोकिया लोंगा)।

वर्णन—

यह एक पेडकी जड है। इसकी दो जातियाँ होती हैं। एक नीली और दूसरी सुनहरी। पहली जाति की जड ऊंगलीके बराबर लम्बी और उंगलीसे कुछ पतली होती है। इसका रंग सुर्खी माइल नीला और स्वाद कडवा होता है। इसके पत्ते इश्कपेंचाके पत्तों की तरह होते हैं। मगर उनसे कुछ चौडे और लम्बे होते हैं। इसकी डालियां एक २ बालिश्तके बराबर और पतली होती हैं। इसका फूल नीले रंगका और दुर्गन्ध पूर्ण होता है।

इसकी दूसरी जातिका रंग लाल और सुनहरा होता है। यह पहली जातिसे बडी होती है। इसकी डालियाँ भी पतली होती हैं। इसके पत्तों की गोलाई पहली जातिके पत्तों से अधिक होती है। इसके फूल सदाबहार फूलकी तरह होते हैं। इसकी जड मोटी और केसरिया रंग की होती है। उसमें सुगन्ध आती है।

गुण दोष और प्रभाव–

यह तीसरे दर्जे में गरम और दूसरे दर्जेमें खुश्क होती है। इसकी पहिली जाति विषैले जानवरोंके जहर को दूर करती है, सर्दी की सूजनको बिखेर देती है, कफको छांटती है, पथरीको तोडकर निकाल देती है, गालोंके रगको साफ करती है, वायुको नष्ट करती है, पेशाब और मासिक धर्मको जारी करती है, पेटके कीडोंको निकाल देती है, फालिज और कंपवातमें मुफीद है, मृगीमें फायदा करती है। इसकी वत्ती बनाकर योनिमें रखने से मासिक धर्म साफ होजाता है। इसको ७ माशेकी खुराकमें पीसकर शराबके साथ लेनेसे और बिच्छूके डक पर इसका लेप करने से बिच्छू का जहर उतर जाता है। इसका लेप करनेसे बवासीर की सूजन उतर जाती है, इसके काढे से बालों को धोने से जुएं मर जाती हैं, इसे पीसकर दाँतों पर मलनेसे दाँत साफ हो जाते हैं और मसूडो का मवाद निकल जाता है। इसको ४ माशेकी मात्रामे शराबके साथ लेनेसे मृगी और धनुर्वातमे बहुत लाभ होता है। शिकजबानके साथ इसको लेनेसे तिल्लीकी सूजन मिटती है और काली मिरचोंके साथ इसको लेनेसे प्रसवके बाद गर्भाशयमे रही हुई खराबी दूर हो जाती है।

इसकी दूसरी जातिके गुणदोष भी इससे मिलते हुए हैं मगर इससे कुछ प्रभावशाली हैं।

जरविंद-ई-गिर्द

नाम—

यूनानी—जरविंद-ई गिर्द, । जरविंद मुदहर्ज लेटिन—Artstolochia Rotunda (एरि-स्टोलोकिया रोटुंडा)।

वर्णन—

यह एक पौधा होता है जिसकी डालियां जमीनसे ही फूटती हैं। इस पौधेके पिंड नहीं होता। इसकी डालियाँ १ गज या इससे कुछ अधिक लम्बी होती हैं। इसके पत्ते जरविंद-इ तवीलके पत्तोंकी तरह मगर उनसे कुछ छोटे और नरम होते हैं। ये खुशबूदार और स्वादमें कुछ तेज होते हैं।

गुण दोष और प्रभाव—

यह दूसरे दर्जेमें गरम और खुश्क है। वायुकी सूजनको बिखेरती है, वात पित्त और कफके दोषों को मुलायम करती है, सीने और फेफडेको साफ करती है, जहरीले जानवरोंके जहरको दूर करनेकी इसमें खास तासीर है। सर्दीकी वजहसे होनेवाला सिरदर्द, आधाशीशी, मृगी, पागलपन, विस्मृति

हिचकी, इत्यादि रोग जोकि पित्त और कफसे पैदा हुए हों उनमें यह फायदे मंद है। दमा, पुरानी खांसी, सीनेका दर्द, गठिया ग्रध्रसी वात, और ग्रंथिवातमें इसको शहदके साथ देनेसे लाभ पहुँचता हैं। शरीरमें काटा लग गया हो तो इसका लेप करनेसे बाहर आ जाता है। टूटी हुई हड्डीपर भी इसका लेप करनेसे लाभ होता है। इसको खानेसे तोतलापन मिट जाता है, पुराने और बदबूदार जखमोंपर इसे लगानेसे जखम साफ हो जाते हैं और बदबू मिट जाती है। इसके खाने और लगानेसे कुष्ठ और सफेद दागों में भी फायदा होता है। दिमाग की खराबी और गरदन की अकड़न को दूर करनेके लिये इसको चाटते हैं। इसके काढे को कानमें टपकाने से बहरापन मिट जाता है और कान की फुन्सियां साफ होजातीं हैं। इसको पीसकर गायके घीमें मिलाकर साढे तीन माशे की टिकिया बनाकर उसमें से १ टिकया हुक्केमें रखकर पीनेसे दमे का दौरा फौरन आराम होजाता है। तिल्ली, जिगर, गर्भाशय की खराबी, और और बिच्छूके विष पर इसको जरविंद ई तवील की तरह ही दिया जाता है।

दर्पनाशक— इसका दर्पनाशक शहद, जरेशक और बनफशा का तेल है।

प्रतिनिधि— इसका प्रतिनिधि जरविन्द-ई तवील और नरकचूर है।

मात्रा—इसकी ४ माशे से ७ माशे तक की है।

जरमीलक

नाम—

यूनानी—जरमीलक।

वर्णन—

यह एक रोइदगी है। इसके पत्ते जबानकी शकलके होते हैं। इसका रंग हरा और नीला होता है। इसकी डालियाँ १ गजके करीब लम्बी होती है। इसका फूल नीले रंगका, नीलोफर के फूलसे बहुत छोटा होता है। इसकी जड १ बालिश्त लम्बी ऊंगली के बराबर मोटी, कुछ सख्त, स्वादमें मीठी तथा ऊपरसे काली और भीतर से सफेद होती है। औषधि प्रयोग में इसकी जड़ ही काम आती है।

गुण, दोष और प्रभाव—

इसकी जड़को पीसकर दाँतों पर मलने से दाँतोंकी बदबू चली जाती हैं और दांतों की जड़ें

मजबूत होती हैं। हड्डीके टूट जाने पर भी इसके लेपसे फायदा होताहै। इसको लगाने से हर किसमका जख्म भर जाता है। इसके खानेसे आँतों के जखम और आँतो की सूजनमें लाभ पहुँचता है।

(ख० अ०)

जरायुप्रिया

नाम—

सस्कृत—जरायुप्रिया, मक्षिकविषा, पालिता। लेटिन Erigeron Canadensis (एरीजिरोन केनेडेसिस)

वर्णन—

यह एक बहुशाखी छोटा झाड होता है। इसके पत्ते २.५ से ७.५ सेंटिमीटर तक लम्बे और रुएंदार होते है। फूल पीले, फूलोंकी डण्डी गुलाबी और उनकी खुशबू पोदीनेकी तरह रहती है। इसका स्वाद तूग और कुछ कड़वा होता है। यह वनस्पति पश्चिमी हिमालय, पजाबके मैदान, उत्तरी गगाके मैदान और सभी गरम देशोंमें पैदा होती है।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदके मतानुसार यह वनस्पति रक्तश्राव रोधक, मूत्रल और सकोचक होती है। इसकी क्रिया गर्भाशयके ऊपर विशेषरूपसे होती है।

यह औषधि आमातिसारके ऊपर उपयोगी है। कफरोगोंमें इससे बहुत लाभ होता है। गर्भाशय से बहनेवाला खून भी इसके प्रयोगसे बद हो जाता है। रक्त प्रदर और वस्तिशोथमें भी यह लाभ दायक है।

कर्नल चोपराके मतानुसार यह वनस्पति अतिसार, पेचिश और गर्भाशयके रक्तश्रावमें लाभदायक है। इसका तेल नजलेमें जिसके साथ वायु नलियोंका प्रदाह भी हो, लाभदायक है। मूत्राशयके प्रदाहमें भी यह लाभ पहुँचाता है। इसमें उडन शील तेल पाया जाता है।

जरूल

नाम.—

हिन्दी— जरूल । बगाल—जरूल । आसाम—अजहार । बबई—तामण, न.दरा । कोकण—तामण । मराठी—बुन्द्रा, मोटा बुन्द्रा, तामण । मुन्डारी— गरसेकरी,कुइरी । सथाल—सेकरा । तेलगू—वरगोबू । तामील—पोदले मुक्की । लेटिन— Lagerstroemia Flosreginae (लेगस्ट्रोमिया फ्लोसरेजिनी) ।

वर्णन—

यह एक बड़ी जाति का वृक्ष है । इसकी डालियां बहुत फैलाने वाली होती हैं । इसकी छाल फिसलनी और फीके रंग की रहती हैं । इसके पत्ते १० से लेकर २० सेन्टीमीटर तक लम्बे और ३.८ से ७ ५ सेन्टीमीटर तक चौडे रहते है । हर एक पत्तेमें १० से लेकर १३ तक नसें रहती हैं । इसके फूल ५ से लगाकर ७.५ सें० मीटर तक लंबे होते हैं । इसका फल लबगोल लाल रगका और बीज फीके बादामी रंगके रहते हैं ।

गुण दोष और प्रभाव—

इसकी जड़ उत्तेजक और बुखार को दूर करनेवाली मानी जाती है यह एक सकोचक वस्तु की तरह काममें ली जाती है । इसकी छाल और इसके पत्ते विरेचक होते हैं । इसके बीज नींद लाने वाले होते हैं ।

अंडमान में इसके फल को मुह के छालों पर लगानेके काममें लेते हैं ।

कर्नल चोपरा के मतानुसार इसके बीज, पत्ते और छाल नींद लाने वाले होते हैं ।

यूनानीमतसे यह पहले दर्जेमें खुश्क और दूसरे दर्जेमें सर्द है । यह पित्तके विकारको शान्त करता हैं । खूनकी गर्मी को मिटाता है । शरीर को मोटा करता है । भूख पैदा करता है । पीला जरुर कफ की बीमारिया पैदा करता है और देरसे हजम होता है । मगर लाल रग का जरुर मेदा और जिगर को ताकत देता है । कबजियन पैदा करता है । बूद २ पेशाब आने के मर्ज को दूर करता है और कामेन्द्रियको शक्ति देता है । इसका दर्पनाशक सोंफ और गुलकन्द है । इसका प्रतिनिधि खट्टी सेव है । इसके रसकी मात्रा ७ तोले तक और चूर्ण की मात्रा १ माशे से ४ माशे तक है ।

जगवूल

वर्णन—

यह एक बूटा है। इसका जितना भाग जमीनके ऊपर रहता है उसका रंग हरा और स्वाद खट्टा होता है तथा जितना भाग जमीनमें होता है उसका रंग सफेद और स्वाद मीठा होता है।

गुण, दोष और प्रभाव—

इसके पत्ते मनुष्यकी काम शक्तिको नष्ट करते हैं। इसकी जड़ काम शक्तिको बढाती हैं। यह पित्तकी तेजीको शान्त करती है।

जफरा

नाम—

यूनानी—जफरा।

वर्णन—

यह एक प्रकारका घास है जो जमीनपर बिछा हुआ रहता है। इसकी डालियाँ नरम और पतली पत्ते गोल, ऊपरसे हरे तथा नीचेसे लाल होते हैं। इसका छोटा पत्ता नाखूनके बराबर और बड़ा पत्ता उससे कुछ बड़ा होता है। फूल पीला और जड़ ऊंगलीके बराबर मोटी होती है।

गुणदोष और प्रभाव—

यूनानी मत—यूनानीमतमें यह चौथे दर्जेमें गरम और खुश्क है। यह एक बहुत जहरीली वनस्पति है। इसका लेप जख्मों के बदगोश्तको काट देता है। छाले, मस्से और नासूरपर इसको लगानेसे फायदा होता है। इसे खानेके काममें कभी नहीं लेना चाहिये।

जरी

वर्णन—

यह एक बूटी है जो प्राय समुद्री किनारोंपर पैदा होती है। इसके पत्ते गोल, हलके पीले और स्वादमें कड़वे होते हैं।

गुण, दोष और प्रभाव—

यूनानी मतसे यह गरम और खुश्क है। इसका बफारा देनेसे जोड़ोंका दर्द दूर होता है। इसके गरम २ काढेकी धार देनेसे अथवा इसके काढ़ेसे टबको भरकर उस टबमें बैठनेसे गठियाके रोगमें फायदा होता है। नहाते समय इसको शरीरपर मसलनेसे सूखी और गीली दोनों प्रकारकी खुजली नष्ट हो जाती है। यह वनस्पति केवल बाहरी प्रयोगके काम आती है। खानेके काममें नहीं आती। (ख० अ०)

जल

नाम—

संस्कृत—सलिल, नीर, अम्बु, तोय, वारि, उदक, इत्यादि। हिन्दी–जल, पानी। बंगला—जल। मराठी—उदक, पाणी। गुजराती—पाणी। तेलगू—नीरू। फारसी—आब। अरबी—माय। अंग्रेजी—Water (वाटर)। लेटिन— Aqua (एक्वा)।

वर्णन—

जल या पानी प्राणी मात्रके दिनरात काम आनेवाली चीज है। आयुर्वेदिक दृष्टिसे यह दो प्रकार का होता है। एक दिव्य और दूसरा भौम। दिव्य जलके फिर ४ भेद होते हैं। धाराजल, कर्काजल, तौषार और हैम। इनमें धारा जल सबसे अधिक गुणकारी होता है। धारा जल स्वच्छ, पथरीली या बालुकामय भूमिका होना चाहिये। यह धाराजल दो प्रकार का होता है। पहला गंगाजल और दूसरा समुद्रजल। इसकी परीक्षा करनेका तरीका यह है कि सोने, चांदी अथवा मिट्टीके पात्रमें चाँवल डालकर उनमें जल भरदे। यदि उन चाँवलोंका रंग न बदले और वे नहीं बिगड़े तो उसको गंगाजल समझना चाहिये और अगर वे चाँवल सड जावें या उनका रंग बदल जावे तो उसको समुद्रजल समझना चाहिये। गंगाजल सर्व दोषनाशक, हलका, शीतल, रसायन, तृप्तिजनक, आनन्दवर्धक, पाचक, बुद्धि वर्धक और मूर्च्छा, तंद्रा, दाह, श्रम, और तृषाको नष्ट करता है। समुद्र जल सर्व दोषकारक, खारा, नमकीन, शुक्र, दृष्टि और बलको नष्ट करनेवाला, दुर्गन्ध युक्त, दोष कारक और सब कामोंमें अहितकर है। किन्तु आश्विनके महिनेमें इसके दोष कम होजाते हैं।

करका जल—दिव्य वायु और बिजलीके संयोगसे ताड़ित हुआ जो जल ओलोंके रूपमें आकाशसे गिरता है वह करका जल कहलाता है। ओलों का जल शीतल, श्रमनाशक, रूखा, वात, कफ कारक और मूर्च्छा, मोह, सिरकी पीडा और हिचकी को दूर करता है। यह सूजन तथा व्रण रोगियोंके लिये अहितकर है और पित्तकी प्रकृति वाले मनुष्योंको हितकारी है।

तौषार जल—तुषारका जल हलका, शीतल, श्रमनाशक, पित्तकी पीड़ाको शान्त करनेवाल दोष निवारक, जलके रोगोंको हरने वाला तथा कुष्ट, श्लीपद, मकड़ीका विष, पामा और विसर्प रोग नष्ट करने वाला है। यह क्षीण, क्षत रोगी और शोष रोगियोंके लिये विशेष हितकारी है।

हिमजल—हिमके समान शीतल पर्वतों से जो बर्फ गल २ कर जल टपकता है उसको हिमजल कहते हैं। हिम जल—घन, मधुर, कफ कारक, और मूर्च्छा, श्रम, भ्रम, रक्तपित्त, रक्त विकार और क्षत रोगोंको नष्ट करता है।

भौमजल—जाँगल, आनूप और साधारणके भेदसे तीन प्रकारका होता है। जिस देशमें थोड़ा जल और थोड़े वृक्ष हों और जहाँ के प्राणी पित्त तथा रुधिरके रोगी अधिक हों उस देश को जांगल देश कहते हैं और वहाँके जलको जांगल जल कहते हैं। जिस देशमें बहुत जल और बहुत वृक्ष हों उसदेश को अनूप देश कहते हैं और वहाँके जलको आनूप जल कहते हैं। इन दोनोंके मध्य वर्ती देशको साधारण देश और वहाँ के जलको साधारण जल कहते है।

जांगल जल—रूखा, नमकीन, हलका, पित्तनाशक, जठराग्निको प्रबल करने वाला और अनेक प्रकारके विकारोंको दूर करने वाला होता है। आनूप जल स्वादिष्ट स्निग्ध, भारी, जठराग्नि नाशक, वृष्य और अनेक प्रकारके विकारोंको पैदा करने वाला होता है। साधारण जल—मधुर, दीपन, शीतल हलका और तृषा, दाह, मद, वमन और त्रिदोषको नष्ट करने वाला होता है।

इन भेदोंके अतिरिक्त नदीका जल, कुएँ का जल, तालाब का जल, सरोवरका जल, बावडी का जल इत्यादि जलोंके गुण, धर्ममें भी थोडा २ फर्क है। नदीका जल—मधुर, हलका, रूखा, गरम, वातको शान्त करनेवाला, अग्निदीपक, बलकारक और पथ्य होता है। ये गुण शीघ्र बहने वाली नदियोंके जलमें ही समझना चाहिये। इस जलको शीत ऋतुके प्रारम्भमें और शिशिर ऋतुमें ही सेवन करना चाहिये।

झरनेका जल—पहाडोंमेंसे जो जल झरकर बहता है उसको झरनेका जल कहते हैं। झरनेका जल रुचिकारक, कफ नाशक, दीपन हलका, मधुर, कटुपाकी, वातजनक और पित्त नाशक होता हैं।

चौंड्य जल—जो गड्ढा चारों ओरसे शिलाओंसे घिरा हुआ हो, जिसका जल नील अंजनके समान निर्मल हो, उसको चौंड्य जल कहते हैं। चौंड्य जल जठराग्नि बढानेवाला रूखा, कफ नाशक हलका, मधुर, पित्त नाशक, रुचिकारक, और पाचक होता है।

कुएंका जल—कुएंका जल मीठा त्रिदोष नाशक, पथ्य और हलका होता है। कुएका खारा जल कफ वात नाशक, दीपन, और पित्त कारक होता है।

तालावका जल—तालावका जल स्वादिष्ट कसेला, कटुपाकी, वातवर्धक, मल और मूत्रको बांधने वाला तथा रक्तपित्त और कफका नष्ट करनेवाला होता है।

सरोवरका जल—सरोवरका जल बलकारक, तृषानाशक, मधुर, हलका, रोचक, कसैला, रूखा और मल तथा मूत्रको बाधनेवाला है।

आयुर्वेद और जल चिकित्सा—

ऊपर हम आयुर्वेदकी दृष्टिसे सब प्रकारके जलोंके भेद और उनके साधारण गुण दोषोंका वर्णन कर चुके हैं। मगर इसके सिवाय जलके द्वारा अनेक रोगोंको दूर करनेकी पद्धति बहुत प्राचीनकालसे इसदेशमें चली आ रहा है और प्राचीन शास्त्रोंमें इसका विशद विवेचन किया गया है। उनमेंसे १।२ पद्धतियोंका नीचे वर्णन किया जाता है।

आठ कटोरी जलका प्रयोग—

आजकल के पाश्चात्य रसायन शास्त्रियों का ख्याल है कि प्राणी मात्र का जीवन एक प्रकार के रासायनिक फेरफार का ही परिणाम है। इस रासायनिक फेरफारके लिए शरीरमे एक निश्चित परिमाणमें गर्मीका होना आवश्यक है। शरीरके अन्दर पाई जानेवाली यह कुदरती गर्मी जब कम हो जाती है तब कई प्रकारकी व्याधियां खड़ी होती हैं। यह गर्मी जब बिलकुल नष्ट होजाती है तब जीवधारी की मृत्यु होजाती है। इसलिए जीवन को सुरक्षित रखने के लिए शरीरम इस गर्मी को संचित रखने वाले पदार्थों की आवश्यकता होती रहती है। ऐसे पदार्थों में जल सबसे उत्तम पदार्थ है क्योंकि इससे किसी भी प्रकार का नुकसान न होते हुए शरीर को जितनी गर्मी की आवश्यकता होती है उतनी ही गर्मी उसे दी जा सकती है।

हमारे प्राचीन आचार्यों ने भी इस विज्ञान को बहुत प्राचीनकाल से समझाहुआ था और इसके लिए उन्होंने पानी का एक बहुत सादा उपचार निर्माण किया था। यह उपचार आठ कटोरी पानी के प्रयोग के नाम से प्रसिद्ध है। जब मनुष्य का भयकर रीतिसे ज्वर चढ रहा हो, वायु बहुत बढ गया हो, मूर्छा आगई हो, दस्त-उलटी वगैरह होते हों, शरीर ठण्डा पड गया हो अथवा इसीप्रकारके जिन्दगी को जोखम में डालने वाले दूसरे लक्षण दिखाई देते हों और केशर कस्तूरी, स्प्रिट एमोनिया एरोमेटिक, हेमगर्भ, हिरण्यगर्भ, चन्द्रोदय इत्यादि बहुमूल्य औषधियां जवाब दे चुकी हों ऐसी हालत में यह आठ कटोरी जलका प्रयोग काम कर देता है।

इस आठ कटोरी जल को बनाने की रीति इस प्रकार है— एक मिट्टी के बरतन में आठ कटोरी भर पानी डालकर उसमें सूठ, मिरच पीपर, तज, लौंग बायबिडग प्रत्येक डेढ२ माशा और तुलसी तथा बेलके पत्ते दो २ तोला डालकर आँचपर चढाना चाहिये। जब जलते २ एक कटोरी पानी शेष रहजाय तब उसको उतारकर छानकर रोगीको पिलादेना चाहिये। इस प्रकार दिनमें ३ बार पानी तैयार करके रोगीको पिलानेमें चाहे जैसा ज्वर रोगीको चढा हो तो उतर जाता है। अगर ज्वरका वेग बहुत ज्यादा हो और आठ कटोरी पानीके प्रयोगसे शान्ति न पड़ती हो तो आठ कटोरीकी जगह उस मिट्टीके